१९६२ से १९९६ तक आकाशवाणी से प्रसारित एवं
अन्य प्रकाशनों से चुने गए लोकप्रिय गीतों एवं
मुक्तकों का नया लोकप्रिय संग्रह

'अंजन' के लोकप्रिय गीत
एवं
मुक्तक (भोजपुरी)

पोटली
(भोजपुरी काव्य संग्रह)

कवि
'अंजन'

WWW.SIRIJAN.COM

कवि
अंजन

सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक
पोटली (भोजपुरी)

प्रथम संस्करण
1999

सहयोग राशि
75 रुपये (पचहत्तर रुपये)

कम्पोजिंग एवं डिजाइनिंग
जावेद हसन

मुद्रक
प्रभाकर ऑफसेट प्रिन्टर्स,
भास्कर प्रेस की गली, स्टेशन रोड,
देवरिया – 274001 (उ० प्र०)

प्रकाशक
'अंजन परिवार'
ग्रा० – अमहीं बॉके
पो० – सोहनरिया भाया कटेया,
जिला – गोपालगंज

प्राप्ति स्थान:-
बजरंग कुमार
'अंजन' परिवार
अमहीं बॉके, कटेया
गोपालगंज (बिहार)

WWW.SIRIJAN.COM

१९६२ से १९९६ तक आकाशवाणी से प्रसारित एवं
अन्य प्रकाशनों से चुने गए लोकप्रिय गीतों एवं
मुक्तकों का नया लोकप्रिय संग्रह

'अंजन' के लोकप्रिय गीत एवं मुक्तक (भोजपुरी)

पोटली

(भोजपुरी काव्य संग्रह)

कवि
'अंजन'

WWW.SIRIJAN.COM

समर्पण

महामहिम राष्ट्रपति जी,
भारत।

मैं गृहस्थ हूँ। मेरे तीन पुत्र हैं, ज्येष्ठ पुत्र हाईस्कूल में विज्ञान शिक्षक है। शेष दोनों पुत्र क्रमशः बी० एस–सी०, एम० ए० (अर्थ०), बी० एड० एवं आई० एस–सी०, एम० ए० (अर्थ०), बी० एड० करने के बाद खेती करते हैं। महामहिम जी, मेरा जन्म एक ऐसे प्रदेश में, एक ऐसी जाति–विशेष में हुआ है, जहाँ भविष्य भी अंधकारमय है। खेती करने के बाद फसल कटकर जब खलिहान में आ जाती है तो अन्न की राशि लगाई जाती है। किसान उस राशि में से प्रथम–दान के रूप में थोड़ा अन्न सत्कार्य में लगे लोगों के लिए निकाल देते हैं, जिसे *"अँगऊ" (दान)* कहा जाता है। शेष राशि वह अपने पारिवारिक –जीवन–यापन के लिए अपने घर ले जाता है।

महामहिम जी! खेत आपका है। खलिहान आपका है। मैं तो सिर्फ एक कृषक हूँ। आप ही के खेत से पैदा करता हूँ। सम्पूर्ण राशि आप ही की है। मैंने तो पसीना बहाकर, खून की घूँट पीकर, ज़हर को कण्ठ में उतारकर दर्दों का जाम़ लेकर, भावनाओं का दंश झेलकर, आँधियों और तूफानों के झोंके झेलकर खेती की है। इच्छा थी कि सम्पूर्ण राशि ही महामहिम जी को समर्पित करूँ – मगर, मैं गरीब हूँ। थका हुआ हूँ, दिल्ली दूर है, पहुँचूँ कैसे? इसलिए आप की सेवा में चुन–चुनकर अच्छे दाने नमूने के रूप में समर्पित कर रहा हूँ, पोटली में बँधे दाने आप को जरूर अच्छे लगेंगे, ऐसा विश्वास है। भोजपुरी माँटी का फल है। खट्टा भी लगे तो अपना समझकर स्वीकार करने की कृपा करेंगे।

मुझे विश्वास है कि मैं सबसे प्रिय वस्तु देश के, राष्ट्र के सर्वोच्च व्यक्तित्व को समर्पित कर रहा हूँ। आशीर्वाद देने की कृपा की जाये। कृतार्थ रहूँगा।

'अंजन'

महाशिवरात्रि
14-02-1999

WWW.SIRIJAN.COM

परम् श्रद्धेय,

श्री के० आर० नारायणन् जी,

महामहिम राष्ट्रपति, (भारत-सरकार), भारत

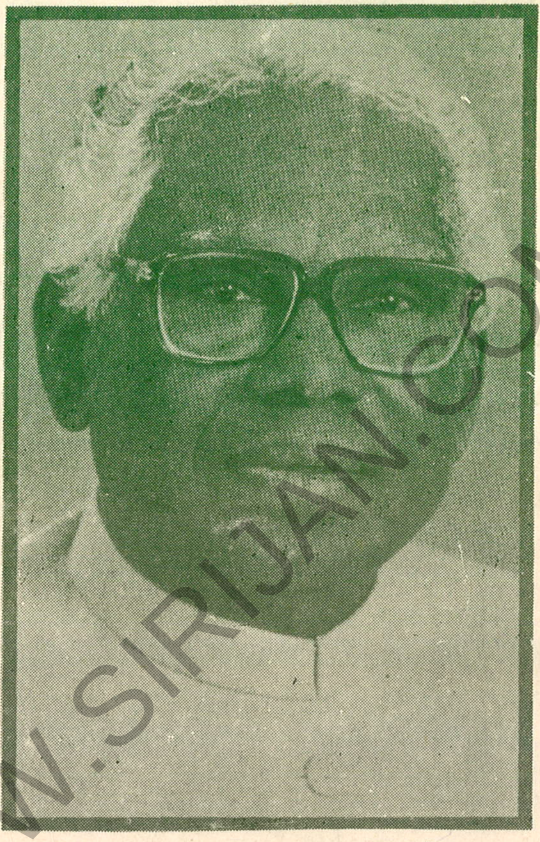

WWW.SIRJAN.COM

के कर कमलों में

सादर-समर्पित,

त्वदीयं वस्तु गोविन्दं,

तुभ्यमेव समर्पये।

महाशिवरात्रि

14-02-1999

'अंजन'

अंजन जी के लिए व्यक्त उद्गार

1. अंजन के नाटककार और कवि से लाखों के जनसमूह को प्रभावित देख मैं सोच रहा हूँ कि आज यह युवक क्षेत्रीय आकाशवाणी, पटना से मुखर हुआ है तो आने वाला कल निश्चय ही इसे करोड़ो के कर्ण- पट को झंकृत करने एवं आँखों को मुग्ध करने का अवसर समर्पित करेगा। मैं अंजन के उभरते प्रभाव से असम्पृक्त नहीं।

15-07-1962 जगदीश चन्द्र माथुर

I. C. S.

भारत सरकार

✿ ✿ ✿ ✿ ✿

2. प्रिय अंजन को दो बार सुनने और पढ़ने पर मेरे मन में बैठे कवि ने रीझ कर कह दिया - "अंजन भोजपुरी माधुर्य की सलोर आँखों का अंजन है।" इस कवि ने मुझे रूला दिया। कविवर रहीम का यह दोहा बरबस याद हो आता है:-

" रहिमन त्यों सुख होत है, बढ़त देख निज गोत,
ज्यों बड़री अँखिया निरखि, आँखिन को सुख होत!"

(सनेश से) चन्द्रशेखर मिश्र

अस्सी, वाराणसी (उ० प्र०)

✿ ✿ ✿ ✿ ✿

3. श्री राधा मोहन चौबे अंजन को मैं बहुत दिनों से जानता हूँ। कवि में अपना ढिढोरा आप पीटने की कला नहीं है। मैं व्यक्तिगत रूप से कवि की रचनाओं से काफी प्रभावित हूँ। ग्रामीण - जीवन को सही रूप में परखने और शब्दों में रूपायित करने की मौलिक प्रतिभा इनमें है। इनका यश समान रूप से भोजपुरी में बढ़े - यही मेरी कामना है।

27-07-1973 देवेन्द्र नाथ शर्मा

कुलपति

पटना विश्वविद्यालय

✿ ✿ ✿ ✿ ✿

WWW.SIRIJAN.COM

4. मैं श्री राधा मोहन चौबे अंजन से पूर्वपरिचित हूँ। साथ ही इन रचनाओं से अत्यन्त प्रभावित भी हूँ। इनकी रचनाएँ उत्तरोत्तर विकास करती रहें - यही कामना है।

(ओहार से)

पाण्डेय कपिल
सहायक निदेशक
राजभाषा विभाग, पटना

✿ ✿ ✿ ✿ ✿

5. श्री राधा मोहन चौबे अंजन का परिचय प्राप्त कर मुझे बड़ी प्रसन्नता मिली। इनकी रचनाओं को देखने से ऐसा लगा कि अंजन का कवि अपनी धुन का धनी और स्वाभिमान की प्रतिमा है। रचनाएँ मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ती जाती हैं, इनके मंगल भविष्य की कामना की जाती है।

रामदयाल पाण्डेय
भू० पू० अध्यक्ष
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
बिहार

✿ ✿ ✿ ✿ ✿

WWW.SIRIJAN.COM

श्री राजेन्द्र प्रसाद
आरक्षी अधीक्षक,
गोपालगंज (बिहार)

गोपालगंज
03-03-1981

श्री राधामोहन चौबे अंजन, आकाशवाणी कलाकार पटना–गोरखपुर–भोजपुरी एवं हिन्दी के एक श्रेष्ठ गीतकार के रूप में प्रख्यात हैं। विगत तीन वर्षों से ये मेरे निकट सम्पर्क में रहे हैं। इनके गीतों एवं भाषणों से मैं बहुत प्रभावित रहा हूँ। इन्होंने जिले के विभिन्न क्षेत्रों में अपराध नियंत्रण एवं समाज के अन्दर फैली विषमताओं को दूर करने में पुलिस–विभाग की भरपूर सहायता की है। मैंने इन्हें एक- समाजसेवी, मानवतावादी व्यक्तित्व, सफल शिक्षक, कर्मठ एवं ईमानदार साहित्यिक एवं लगनशील सहयोगी के रूप में पहचाना है। गरीबों एवं असहाय लोगों की सहृदय सेवा करने में भी इनका कार्य स्तुत्य है। मैं इनके उत्तरोत्तर विकास एवं यश की कामना करता हूँ एवं पुलिस तथा प्रशासन के साथ किए गए सहयोग के प्रति बधाई देता हूँ।

03-03-1981

श्री राजेन्द्र प्रसाद
आरक्षी अधीक्षक,
गोपालगंज (बिहार)

WWW.SIRIJAN.COM

सुधीर कुमार झा
I. P. S.

आरक्षी उप–महानिरीक्षक
छपरा (सारण)

20-01-1980

अंजन जी भोजपुरी एवं हिन्दी के सशक्त कवि है। इनकी कारूणिक रचनाओं से मैं बहुत प्रभावित हूँ। इनकी ख्याति दूर–दूर तक केवल भोजपुरी क्षेत्रों में ही नहीं, अपितु अन्य भाषाओं के क्षेत्रों में भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से भी अंजन जी के भोजपुरी गीतों के प्रसारण होते हैं। करुण रस के अलावा वीर रस एवं श्रृंगार रस की कविताएँ भी कम हृदयग्राही नहीं हैं। अपने गीतों के माध्यम से इन्होंने सामाजिक सुधार एवं अपराध नियंत्रण में भी काफी सहायता की है। पुलिस एवं प्रशासन के साथ इनका सहयोग भी कम स्तुत्य नहीं है। इनकी निरन्तर प्रगति एवं मंगलमय भविष्य के साथ इनकी आठवीं प्रकाशित रचना *'नवचा नेह'* के प्रति शुभेच्छा देते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ।

20-01-1980

सुधीर कुमार झा
D.I.G.
Chapra (SARAN)

WWW.SIRJAN.COM

..............नवचा नेह भोजपुरी के सतरंगी कविता संग्रह बा। कहीं क़रिया, कहीं उजर, कहीं लाल, कहीं पीयर .... जिनगी के अलग–अलग आयाम के छूवत............................ ...... ।

अंजन जी सशक्त गीतकारे ना हउवन, लोक गीतकार, कहानीकार, नाटककार, पहलवान, अभिनेता – यानी बहुआयामी–व्यक्तित्व के बादशाहों हउवन। हमार विश्वास बा कि एह संग्रह से लोकप्रियता में अउरी बढ़ोतरी होई।

भुवनेश्वर प्र० सिन्हा
द्वितीय पदाधिकारी
गोपालगंज (बिहार)

श्री अंजन जी की भोजपुरी कविताएँ समाज में फैली हुई विषमताओं को उजागर करते हुए सुधार का सन्देश देती हैं। इनकी कविताओं में जीवन का सही अन्तर्द्वन्द्व अभिव्यक्त हुआ है।

श्री अंजन जी के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ और आशावान हूँ कि भविष्य में साहित्य कर्म योग से अंजन जी समाज का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

आर० टी० शर्मा
जिला पदाधिकारी
गोपालगंज (बिहार)

अंजन जी भोजपुरी साहित्य के ऐसे शब्द चित्रकार हैं, जिन्होंने देहात–गाँव, देश–विदेश सबको अपने में समेट लिया है। सभी अपने हैं, सबका दर्द उनका दर्द है। भोजपुरी के गीत बड़े ही सहज, प्राणों को छू देने वाले, अनवरत भाव–प्रवाह की त्रिवेणी जैसे हैं। अंजन जी का मन पारलौकिक मन है, जहाँ सभी वर्गों के लोग विश्राम पाते हैं। अंजन जी के प्रति मेरी हार्दिक शुभेच्छा है।

डा० कामेश्वर ओझा
आयुक्त उत्पाद
मोतीपुर, मुजफ्फरपुर
(बिहार)

WWW.SIRIJAN.COM

प्रस्तुत संग्रह के सम्बन्ध में

प्रस्तुत संग्रह में जून 1962 से जून 1996 तक के आकाशवाणी, पटना से कवि द्वारा प्रसारित भोजपुरी गीतों एवं मुक्तकों, आकाशवाणी गोरखपुर केन्द्र से उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के लोक-गीत गायकों द्वारा गाए गीतों, और कवि की प्रकाशित चौदहों काव्यसंग्रहों - से चुने गए लोकप्रिय गीतों और मुक्तकों को इस संग्रह में स्थान दिया गया है। अक्सर भोजपुरी प्रेमी बन्धुओं के पत्र देश के विभिन्न भागों से आते रहते हैं, जिनमें मेरी पुरानी रचनाओं की माँग रहती है। प्रकाशित काव्य-संग्रहों की एक भी प्रति अब कवि के पास नहीं है, जिससे प्रेमी पाठकों और गायकों की इच्छा पूरी नहीं हो पाती। प्रस्तुत संग्रह में यह प्रयत्न किया गया है कि पुरानी पुस्तकों के मनं-प्रिय गीत एवं मुक्तक इस संग्रह में स्थान पा जायें। कवि अपने दर्द एवं अपनी व्यथाओं को ही शब्दों में पिरोता है। यह साहित्य प्रेमियों का एहसान होता है कि कवि को सम्मान दे देते हैं।

कुछ लोकप्रिय गीतों और मुक्तकों को जान-बूझकर हटाना पड़ा क्योंकि संग्रह का आकार-प्रकार भारी हो जाता और प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। प्रकाशन में अनेक विघ्न आए हैं, जिसके लिए मन अशान्त होता रहा है। प्रशंसकों, गायकों और अंजन प्रेमी पाठकों की इच्छाओं को दृष्टिगत रखते हुए यह संग्रह तैयार किया गया है।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि पाठक और गायक इसे आशीर्वाद और स्नेह देंगे। संग्रह को गीतों की भावनाओं के अनुरूप चार संदर्भों में बाँट दिया गया है - राष्ट्रीय संदर्भ, सामाजिक संदर्भ, भक्ति संदर्भ, विविध और लोकप्रिय मुक्तक। पाठकों (विशेषतः हिन्दी भाषी) के लिए जहाँ-तहाँ हिन्दी में संकेत भी दे दिए गये हैं। संग्रह भोजपुरी भाषा का है। इसलिए भोजपुरी के मर्मज्ञ ही सही-सही मूल्यांकन कर पायेंगे। अन्य भाषा-भाषी पाठकों से अनुरोध होगा कि भोजपुरी विशेषज्ञ से समझकर अपना आशीर्वाद दें। कृतार्थ रहूँगा।

'अंजन'

महाशिवरात्रि

14-02-1999

WWW.SRIJAN.COM

अंजन दम्पति

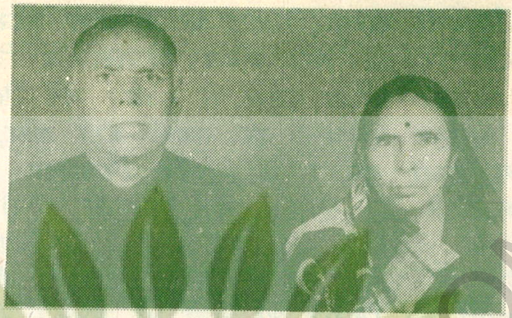

चित्रः अंजन जी एवं श्रीमती प्रभावती देवी

1. राधा मोहन चौबे – स्व0 श्रीकृष्ण चौबे (पिता)
   स्व0 महारानी देवी (माता)
2. श्रीमती प्रभावती अंजन (पत्नी)
3. देवेन्द्र कुमार देवेश – विज्ञान शिक्षक, हा0 स्कूल, मोर (पटना) (पुत्र)
4. भावेश – बी0 एस–सी0, एम0 ए0 (अर्थ), बी0 एड0 (पुत्र)
5. भूपेश कुमार – आई0 एस–सी0, एम0 ए0 (अर्थ), बी0 एड0 (पुत्र)
6. मयंक कुमार – आई0 एस–सी0, छात्र वाराणसी (पौत्र)
7. बजरंग कुमार – हाई स्कूल, कोरया का छात्र (पौत्र)
8. निर्भय कुमार (पौत्र)
9. अभय कुमार (पौत्र)
10. छोटे (पौत्र)
11. नन्हें (पौत्र)
12. सोनू, मीनू, अनुसा, सुनन्दा (पौत्रियाँ)
13. गीता, प्रतिभा (पुत्रियाँ)
14. सुभद्रा, रामावती, बुधिया (बहनें)

WWW.SIRIJAN.COM
आपन माटी-आपन थाती

आत्मकथा (जीवन-यात्रा)

- अंजन

विक्रमी सम्वत् 1995 के अगहन मास की शुक्ल द्वादशी, रविवार को मेरा जन्म गोपालगंज जिले के भोरे थाना के शाहपुर-डिघवा ग्राम में हुआ। मेरे पिता जी पाँच भाई थे। ब्राह्मण परिवार का सबसे बड़ा धन, ज्ञान और स्वाभिमान हुआ करता था। मेरे पितामह - प्रपितामह चतुर्वेदी कहलाते थे। लेकिन मेरे पिताजी पाँचों भाई शिक्षा के अभाव में चतुर्वेदी नहीं रह सके। वेद-विहीन होने के कारण चौबे हो गये। गरीबी और अशिक्षा के कारण मेरे तीन चाचाओं का विवाह ही नहीं हो सका। मेरे एक चाचा से एक लड़की और अपने पिता जी से मैं और एक छोटी बहन - बस यहीं से मेरी जीवन यात्रा शुरु हुई। मेरा पालन-पोषण अपने पैतृक घर पर नहीं हुआ। मैं बचपन से ही अपने नाना के यहाँ ही रहता था। ननिहाल का गाँव ही आज मेरा स्थाई गाँव है, जहाँ मैं अपने परिवार के साथ रहता हूँ। जहाँ मेरी कुछ पैतृक-सम्पत्ति एवं घर था - वहाँ मैं नहीं हूँ और जहाँ मैं हूँ - वहाँ मेरी पैतृक-सम्पत्ति और घर नहीं है। समय एवं संयोग से मेरा अपना गाँव छूट गया।

बचपन से ही अपने फूआ के घर पर ही विद्यार्थी-जीवन बिताया। मेरे पिता जी मेरे ननिहाल से सटे गाँव - बनियाँ छापर (कटेया) में मेरे फूफा की जायदाद के संरक्षक थे। हाई-स्कूल की शिक्षा तक फूआ के गाँव पर ही रहा करता था, जहाँ के हरिजनों के परिवारों के बच्चों के साथ मैं खेला करता था। भैंस चराना, घास छीलना, खेत में सिंचाई करना और हमेशा पढ़ते रहना - यही दिनचर्या थी। विद्यालय के बाद के समय में हरिजनों के परिवारों के बच्चों के साथ ही समय गुजारता था। बचपन से ही हरिजनों, मुसलमानों, यादवों एवं अन्य जातियों के बच्चों के साथ बाँह में बाँह मिलाकर चलता रहा। मन से ये भावना समाप्त हो गयी कि मैं ऊँची जाति का हूँ। परिणाम हुआ - आज सभी जाति के लोग मुझे ही नहीं बल्कि मेरे परिवार को स्नेह और आशीर्वाद दे रहे हैं। जब तक मैं मैट्रिक में था

WWW.SRIJAN.COM

- तब तक विद्यालय की कक्षा में बैठा। विद्यार्थी जीवन में जब मैं छठें वर्ग में था, तो देवरिया जिले के (तत्कालीन) तमकुहीराज के बरियारपुर गाँव के पं० धरीक्षण मिश्र जी हमारे विद्यालय में पधारते थे। वे संत पुरुष थे। विचार, शरीर, भेष-भूषा, वाणी-व्यवहार, ज्ञान-स्वाभिमान सभी तरह से संत कवि थे। हम लोगों की कक्षा में आते और समस्या पूर्ति के लिए कोई पँक्ति दे देते। हम सभी छात्र पूर्ति करते थे, जिसे वे देखते, सुधारते, पीठ थपथपाते। वे ही मेरे आदि गुरु हुए। बाद में उन्हीं के साथ हम लोगों के गुरु पं० लक्ष्मण पाठक, प्रदीप जी भी समस्या पूर्ति निरन्तर कराते रहते थे। बाल्य काल से ही कविता करने की जो धुन सवार हुई आज तक साथ है। जहाँ तक याद है, मैट्रिक में जाते-जाते मेरे एक मित्र के साथ एक काव्य-संग्रह भी तैयार किया गया - जो कहाँ गया - याद नहीं।

1957 की मैट्रिक की वार्षिक परीक्षा के परिणाम में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर गाँधी जी की आत्मकथा नामक पुस्तक मुझे पुरस्कार रूप में मिली, जिसे मैं आद्योपान्त पढ़ गया। पढ़ने के बाद सर्वात्म-भाव का उदय हुआ। तेज और प्रतिभा सम्पन्न छात्र होने के बावजूद गरीबी एवं असुविधा के कारण महाविद्यालयों की कक्षाओं में बैठने का सौभाग्य नहीं मिला। इस जिज्ञासा की शांति के लिए स्वतन्त्र रूप से ही अच्छे अंकों के साथ आई० ए०, बी० ए० (आनर्स) एवं एम० ए० करता चला गया।

19.08.1959 को मेरी नियुक्ति शिक्षक के रूप में वैशाली की ऐतिहासिक नगरी में हो गई। वैशाली प्रवास का जीवन मेरे जीवन का स्वर्णिम काल था। कुश्ती लड़ना, गीत लिखना, खेलना, खरौना-पोखर (अभिषेक पुष्करिणी) में चाँदनी रात में नौका चालन - यही जीवन क्रम था। वैशाली के बाद पं० चम्पारण जिले में चनपटिया के निकट बुनियादी विद्यालय में स्थानान्तरण - जहाँ कुश्ती - कविता सहायक कर्म रहे। पुनः सीवान, गोपालगंज - सीवान कटेया होते ट्रेनिंग कॉलेज बँगरा में वरीय - व्याख्याता और जीवन के अन्तिम उन्नीस (19) महीने 'शिक्षा पदाधिकारी' अनगड़ा राँची के पद पर।

शिक्षक का जीवन साढ़े तीस वर्ष और निरीक्षी शाखा में पदाधिकारी के रूप में आठ वर्षों तक सेवा क्रम में गुजारा गया। इस अवधि में काव्य-साधना एवं मंचीय व्यस्तता - दोनों साथ रहे। विद्यालय में समय से जाता, पढ़ाना - खेलना, आदत थी।

कर्तव्य पथ पर चलते हुए ही मेरी काव्यगत लोकप्रियता भोजपुरी मानस में अंकित हो गई। पहला प्रकाशन ''कजरौटा'' - 1969 में हुआ, जिसमें तब तक की कविताएँ संग्रहित थीं। इसके बाद मंचों से तालियाँ बटोरने की धुन सवार हुई। प्रशंसक हूँ - उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र का - जहाँ के भोजपुरी गायकों, प्रेमियों ने मुझे आशातीत सम्मान एवं स्थान दिया है। गोरखपुर आकाशवाणी ने मेरे सर्वाधिक गीतों का प्रसारण वहाँ के लोकप्रिय गायकों द्वारा कराया है।

कवि का जन्म पीड़ाओं से होता है। दर्दों का कफ़न ओढ़े विश्व की मंगल कामना करते हुए कवि चला भी जाता है। आज जब अपने बारे में कुछ लिख रहा हूँ - मैं पूर्णतः आस्था-केन्द्रित हूँ। माँ छिन्नमस्तिका की आराधना चल रही है। माँ की प्रार्थना का फल है कि आज एक परम्-संतुष्ट आर्दश परिवार में पितामह हूँ। आज अपने पोते-पोतियों के बीच मैं नैसर्गिक आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। ईश्वर ने सब कुछ दिया है। हमारे सुख का आधार आप पाठकों, मनीषियों, विचारकों, गायकों और भोजपुरी-प्रेमी बन्धुओं का आशीर्वाद और स्नेह ही है।

मंचों से सन्यस्त-प्राय हूँ। सिर्फ शेष काम रह गए हैं, आध्यात्मिक चिन्तन और काव्य-लेखन।

जीवन के सभी खण्डों से प्राप्त अनुभवों की एक विशाल पोटली समेटे हुए अपने भू-तल वासियों की मंगल कामना बनी रहती है। ऐसा अनुभव हुआ है कि बुरा वे ही करते हैं जिनका भला किया जाता है, समाज है, ''मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना'' वाली बात है। गाँव है, समाज है, कुछ कष्ट तो मिलते ही हैं। इसके बावजूद मेरा गाँव आदर्श गाँव है। यहाँ के ब्राह्मण मस्जिद में सहयोग देते हैं। मुसलमान मन्दिर बनवा रहे हैं। अनुकरणीय सामाजिक एवं कौमी एकता है

WWW.SIRIJAN.COM

हमारे गाँव में। ब्राह्मण ताजिया में कंधा लगाते हैं, तो मुसलमान होली में ढोलक बजाते हैं।

मेरा घर, मेरा परिवार संगम स्थल है, जहाँ बिना जाति-पात का विचार किए सभी जाति के लोग सुख एवं आनन्द प्राप्त करते हैं। पूरा गाँव आज प्रगति पर है। कभी-कभी गंदी राजनीति की हवा बह जाती है, जिससे जातीय एकता हिलने लगती है।

मैं प्रार्थना में विश्वास रखता हूँ। यह शेष जीवन प्रार्थनामय हो चला है। प्रार्थना का सुखद परिणाम कठिन समय में मिलता रहा है। मैं गरीब जन्मा हूँ, गरीब रहा हूँ, सताया गया हूँ, बार-बार मिटाया गया हूँ। वे ही पीड़ाएँ, वे ही व्यथायें मेरे गीतों में शब्द बनकर आयी हैं। जो कुछ लिखता हूँ, सच लिखता हूँ। आपके आशीर्वाद की इच्छा बनी रहती है।

'अंजन' उपनाम स्व० पुण्य-स्मृत जगदीश चन्द्र माथुर (आई० सी० एस० - 1940) का दिया हुआ है। उनकी महान् आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धासुमन समर्पित कर रहा हूँ।

आज इतना ही ------।

महाशिवरात्रि
14.02.1999

अंजन

"अंजन" साहित्य के प्रकाशन

1-	कजरौटा (भोजपुरी काव्य) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1969
2-	फुहार (भोजपुरी काव्य) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1970
3-	ओहार (हिन्दी-भोजपुरी) पुस्तक भण्डार, पटना	- 1973
4-	सँझवत (भोजपुरी) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1975
5-	पनका (भोजपुरी) राजेन्द्र प्रेस, मीरगंज	- 1976
6-	कनखी (भोजपुरी व्यंग) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1977
7-	सनेश (भोजपुरी) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1978
8-	नवचा-नेह (भोजपुरी) गोपालगंज प्रेस	- 1979
9-	अँजुरी (भोजपुरी) हिमालय प्रेस, मीरगंज	- 1983
10-	अंजन के लोकप्रिय गीत मगध प्रिन्टर्स, पटना	- 1983
11-	अनमोल मिलन (भोजपुरी खण्ड-काव्य) भास्कर प्रेस, देवरिया	- 1990
12-	आपन बोली आपन गीत भास्कर प्रेस, देवरिया	- 1990
13-	गुच्छे अंगूर के (हिन्दी) भोला प्रिंटिंग प्रेस, भाटपार रानी, देवरिया	- 1991
14-	मनसायन (भोजपुरी) अपना प्रेस, अस्सी, वाराणसी	- 1994
15-	अंजन के लोकप्रिय गीत एवं मुक्तक (पोटली) प्रभाकर ऑफसेट प्रिन्टर्स, देवरिया	- 1999

आभार

आकाशवाणी के पटना केन्द्र के प्रति आभारी हूँ, जहाँ से जून *1962* से जून *1996* तक मेरे कवि द्वारा भोजपुरी गीतों का प्रसारण किया गया एवं आकाशवाणी के गोरखपुर केन्द्र के प्रति जहाँ से, पूर्वांचल - उत्तर प्रदेश के लोकगीत गायकों द्वारा मेरे कवि के सैकड़ों भोजपुरी गीतों का प्रसारण हुआ है। भारत वर्ष में फैले हुए तमाम भोजपुरी गायकों के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होंने अंजन को अपनाकर सम्मान एवं स्नेह दिया है। इस रचना के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देकर जिन महानुभावों ने सक्षम योगदान दिया है, उनमें मि० एम० ए० राजा "*खामोश*" एवं डॉ० बन्ता प्रसाद के परिवारों के लिए विशेष आभार प्रकट कर रहा हूँ।

मेरे कवि के सेवाकाल का अन्तिम समय राँची के पठारी अंचल में व्यतीत हुआ। राँची जिले के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित सभी पदाधिकारियों एवं नेताओं के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरे कवि को अभूतपूर्व सम्मान एवं आशीर्वाद दिया है। विशेषतः श्री शिव नारायण साह (जि० शिक्षा अधीक्षक), श्री अवधेश शर्मा (बी० ई० ओ०), श्री भृगुनाथ राम (बी० ई० ई० ओ०), श्री बबन सिंह (क्षे० शि० पदा०), श्री कामेश्वर सिंह (लिपिक), श्री जितेन्द्र कुमार सिंह (वि० शि०), श्री शम्भू प्रसाद (वि० शि०), श्री मो० लतीफुर्रहमान (वि० शि०), श्री राजेश सिंह (शिक्षक म० वि०, चिलदाग), श्रीमती बहन अनवरी सुल्ताना, श्री भूषण बाबू, श्री रघुवंश सिंह (शिक्षक), श्री राजन बाबू (नेता), पप्पू बाबू, माननीय विधायक केशव महतो, कमलेश जी, भाई राजाराम महतो जी, श्री जलनाथ चौधरी (नेता), श्री करमू भाई (नेता), श्री लखीन्द्र महतो (शिक्षक), श्री यमुना प्र० सिंह (शिक्षक), श्री पंचानन महतो (शिक्षक), निरंजन बाबू (शिक्षक), नेता श्री इन्द्रजीत बाबू सहित प्रिय मित्र श्री अमलू बाबू (बी० ई० ई० ओ०, सिल्ली) एवं श्रीमती उषा सिंह (बी० ई० ई० ओ०, नामकुम) के लिए हार्दिक मंगल कामना है। श्री सुरेश सिंह, श्री विद्या सिंह, श्री व्रज बिहारी पाण्डेय, श्री विक्रम महतो - सभी शिक्षक नेताओं को मेरी हार्दिक शुभकामना है, प्राथमिक विद्यालयों एवं मध्य विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभेच्छा देते हुए मंगल कामना की जाती है।

अपने स्थानीय कवियों / गायकों एवं अंजन प्रेमी बन्धुओं के लिए मंगल कामना है। उन लोगों के प्रति भी शुभकामना है, जिन्होंने परोक्ष या

अप्रत्यक्ष रूप से अंजन के प्रति एहसान किया है। डॉ० आर० एन० द्विवेदी, डॉ० जगदीश चौधरी, डॉ० प्रबोध झा, डॉ० टी० एन० सिंह, डॉ० ए० के० सिंह, डॉ० महेन्द्र शर्मा, केशव बाबा, डॉ० राम बिहारी मिश्र जी आदि अंजन प्रेमियों के लिए शुभकामना है। श्री रमेश चन्द्र द्विवेदी, श्री शिवनाथ यादव, कन्हैया यादव, श्री प्रभुनाथ यादव (अधिवक्ता) सहित उन तमाम लोगों के लिए मंगल कामना है, जो दैनिक-जीवन में मेरे समय का साथ देते रहे हैं। श्री रामजी दूबे (संत गायक, ग्रा० - इसुआपुर, सासामुसा, गोपालगंज) के दीर्घ जीवन के लिए कामना एवं परिवार के लिए मंगल कामना।

अन्त में प्रभाकर ऑफसेट प्रिन्टर्स एवं भास्कर प्रेस, देवरिया (उ० प्र०) के शर्मा (पाण्डेय) परिवार के लिए विशेष आभार है, जहाँ से प्रस्तुत संग्रह प्रकाशित हुआ है। जनाब जावेद हसन जी के लिए एहसान मन्द हूँ, जिन्होंने कम्प्यूटरीकृत डिजाइनिंग एवं कम्पोजिंग की। मित्र श्री कन्हैया प्रसाद तिवारी (एस० ओ० साहब, बेलही) एवं श्री विश्वनाथ यादव (पकहाँ, देवरिया) के परिवारों के लिए हार्दिक मंगल कामना है - जो वर्तमान में मेरे कवि के प्रति सहायक है। साथ ही प्रभु दत्त पाण्डेय एवं केशव चन्द्र पाण्डेय परिवार के लिए भी मंगलकामना जिन्होंने प्रकाशन में सहयोग दिया। पुण्य-स्मृत जगदीश चन्द्र माथुर (आई० सी० एस० *1941*) के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि है, जिन्होंने मेरे कवि को *'अंजन'* उपनाम दिया।

"मंगलम् भवतु सर्वदा!"

महाशिवरात्रि
14.02.1999

'अंजन'

विषय सूची

1.	राष्ट्रीय संदर्भ	——	पृष्ठ *1* से पृष्ठ *16* तक
2.	सामाजिक संदर्भ	——	पृष्ठ *17* से पृष्ठ *32* तक
3.	भक्ति संदर्भ	——	पृष्ठ *33* से पृष्ठ *57* तक
4.	विविध	——	पृष्ठ *58* से पृष्ठ *93* तक
5.	लोकप्रिय मुक्तक	——	पृष्ठ *94* से अन्त तक

राष्ट्रीय संदर्भ

(भारत हमारा घर हैं। इसे टुकड़े-टुकड़े करने पर माँ-बाप को कष्ट होगा। बैर-भाव भुलाकर प्रेम की गंगा बहने दिया जाए।)

मुक्तक

चाँछी मति, काटी मति,
टुकी-टुकी क के बाँटी मति,
राउरे हवे, सलहन्त से एके गो रहे दीं,
केहू का बात में मति परी, जे कहत बा कहे दी,
ना करार परे त पाँव का नीचे दबाइल माँटी से पूछि ली,
बड़का-समुन्दर, ऊँचका पहाड़, नदियन के
जाल बुनाइल-फुलाइल घाटी से पूछि लीं,
दुआरे-दुआरे के चासनी चाटी मति,
सुतल-पिराइल देहि के घाव उपाटी मति,
चउआरि बेआरि उठि गइल बा, बहते रही बहे दीं !! राउरे...... !
बाप के करेजा फाटि जाई, माई के ऑखि लोराई -
जब देहि से देहि बँटाए लागी।
रोआँ-रोआँ में बिच्छिन के डंक लेखा बुझाई -
जब आँखि से आँखि कटाए लागी।।
मन्दिर-मस्जिद पर खुनाइल पोस्टर साटी मति,
जुग-जुग से जगमगात दिया के उलाटी मति,
सगरो गतर टो-टो के बचा लीं, बतास कहत बा, लहे दीं !! राउरे.....!
बाँटि लेब त कहे के परी, हेतने हमार ह -
बाकी हुनुके ह, हुनुके ह,
काटि देब त कहे के परी बाग-पहाड़
घाटी हुनुके, हुनुके ह,
एँते सब राउर हवे, फाटी मति,
ढेर छँटाइल बा, अब छाँटी मति,
अरिहा का मन में आगि होला, जे सहत बा, सहे दीं !! राउरे......!
छोटका भाई का नइखे बुझात, त बड़का भाई प्रेम से -
डाँटी-डेरवाई, पुचुकारी, कहियो ना कहियो त होश में आई
बाकी उजरे ना दीं फुलवारी।।
कबनो आँखि के सपाना उचाटी मति,
सोझे जीये दी पलाटी मति,
आँखि हँसे दी, अंजन रचवे दीं, प्रेम के गंगा बहे दीं !! राउरे......!

(आपन बोली, आपन गीत से)

जवान-सुगना

(बूढ़ी माँ अपने जवान सैनिक बेटे के लिए कुछ संदेश, कुछ सामान उनके सैनिक साथी के हाथों भेजती हैं और समझाती हैं कि एक माँ के लिए नहीं, बल्कि करोड़ो माताओं की रक्षा करना, ईमान नहीं डोलना चाहिए।)

बाबू ले ले जइह हमरो सामान हो, कि पूछिहें जवान-सुगना।
पानी में पनडुब्बी चढ़ि के, करे सिन्धु रखवारी।
रक्षा खातिर जागल होइहें, ले बनूखि तइयारी,
उपरा गरजत होई नेटवा विमान हो - कि पूछिहे जवान सुगना ।।1।।
देखते तहके गले लगइहें - पूछिहे घर कुशलाई,
कइसे गाँव - नगर घर बाटे, कइसे बाड़ी माई,
कइसे बाड़े घर लरिका सेयान हो - कि पूछिहे जवान सुगना ।।2।।
सतुआ-चिउरा के गठरी, जाते दीह पहुँचाई,
भरूआ मरिचा कोने ओइमें दीहनी हम गठियाई -
पइहें नाँचे लागी खुशी से परान हो - कि पूछिहें जवान सुगना ।।3।।
कहि दीह कि बीबी उनके मंगल रोज मनावे,
तुलसी जी के साँझि-सबेरे धूप-दीप देखलावे -
माँगे खुशिए के सँझिया-बिहान हो - कि पूछिहें जवान सुगना ।।4।।
मति कहिह कि मइया तोहरी पाकल फल हो गइली,
चिट्ठी दीहली, काँपत रहली, जात-जात रो गइली -
ना त बेकल होइहें बाबू के परान हो - कि पूछितें जवान सुगना ।।5।।
एगो माई खातिर कहिह, मति तनिको अकुलइहें,
लाख करोड़न माई लोग के गोदी लाज बचइहें -
कहिह, डोले नाहीं तनिको ईमान हो - कि पूछिहें जवान सुगना ।।6।।
कहिह कि सावन में आ के राखी लीहे बन्हाई,
बहिना उनुके खोजत बाड़ी, कबले अइहें भाई -
कागा उचरेला सँझिया-बिहान हो - कि पूछिहें जवान सुगना ।।7।।

(*सँझवत - 76 से*)

मुक्तक

हवा के झोंक पर पतइया डोलबे करी।
लहर उठी त नइया डोलबे करी।
माई के करेजा पूत खातिर मोम हवे।
बछरूआ बोली त गइया डोलबे करी।

भारत-दर्शन

(सम्पूण भारत की सौन्दर्यमयी संक्षिप्त गाथा का दिग्दर्शन)

राही जल्दी कदम बढ़ाव,
चलि के माँ के शीश नवाव।
देख खड़ा हिमालय पहरा पर तइयार भाई रे -
चलि के माँ के दर्शन करि ल, बारम्बार भाई रे !! चलि0 !!
मानस में मोती खोजेले हंस रोज भिनुसारे,
गंगा जमुना ब्रह्मपुत्र जब मोहन मंत्र उचारे !
लहरे घाट-घाट पर पानी,
उतरे उत्तर से जिनगानी।
माँटी हरियाली लहरावे, ऊपरा मेघ तराना गावे,
आवे गाँव-गाँव में अमृत भरल फुहार भाई रे !! चलि0 !!
लाल सेब अँगूरी चेहरा कश्मीर अउर हिमांचल,
शेरे दिल पंजाब वीर हरियाना के मन चंचल।
देखी महिमा राजस्थानी,
जेकर बाटे अमर कहानी,
जौहर जेकर अमर निशानी, बच्चा बूढ़ा सब बलिदानी,
जहवाँ मृत्यु गोद में ले के बहे बयार भाई रे !! चलि0 !!
घर-उत्तर परदेश तीर्थ के मंत्र पढ़ावे पन्डा,
जहाँ धरम के घाट-घाट पर गड़ल मोक्ष के झँडा,
जहवाँ राम-श्याम के लीला,
जहवाँ के आदर्श रंगीला,
गंगा जहाँ लगवली मेला, लोगवा लाखों लाख चलेला,
जहवाँ एक बून्द भव से करि देला पर भाई रे !! चलि0 !!
विद्या पति जय देव भिखारी, फूल जहाँ के बगिया,
मगध बज्जि, चम्पा, विदेह के चमके चकमक पगिया,
धनि-धनि कुँअर सिंह जिनगानी,
राजेन्दर के अमर कहानी,
जहवाँ धर्म ज्ञान के मेला, हरिहर सोनपुरी चमकेला,
मेला देखे खातिर जुटे सकल संसार भाई रे !! चलि0 !!

हमार देश

एने मध्य प्रदेश सजे, ओने बंगला के पानी,
मधुर-मधुर जिनगी में सानल मधुर-मधुर रस बानी,
जहवाँ क्रान्ति-बीज पनकेला,
जहवाँ शान्ति निकेतन मेला,
अरूणाचल मणिपुरी-सुहावन जहवाँ झूमे फागुन-सावन,
बंचिह जादू टोना के बा भरल पिटार भाई रे !
फूल पहाड़ी सिक्किम मेघा चले मेघालय घर में,
नीचे धरती चुनरी पहिरे, उठे राग अम्बर में,
जब-जब महाराष्ट्र अंगड़ाइल,
दुश्मन के करेज थर्राइल,
उड़ीसा जगन्नाथ दरबार, आन्ध्रा तिरूपति नेह दुलार,
थाती गुजराते के सइँते देश हमार भाई रे !! चलि0 !!
केरल कर्नाटक आन्ध्रा के कसमस करे जवानी,
तमिलनाडु के ऑगन चमके चरन पखारे पानी,
दक्खिन पहरा लंका देला,
सागर रहि-रहि के हहरेला,
उत्तर दक्खिन बाँहि मिलावे, पूरब पच्छिम आँखि लड़ावे,
अइसन भारत माता के घर सरस उदार भाई रे !! चलि0 !!
रंग-रंग के फूल जहाँ पर बगिया एक कहाले,
भारत के माँटी असमय में एके घाट नहाले,
इहवे उगे सुबह के लाली,
छलके मधुर प्रेम के प्याली,
जहवाँ जिनगी लोग जरावे, परहित तन के भेंट चढ़ावे,
अंजन बनि के आँखिन के होला, सिंगार भाई रे।

मुक्तक

कुत्ता के कौरा दे दीं, बहकाई मति,
लोग पर ललकारि के सहकाई मति,
आजु साधू बाबा के कटलसि त,
बिहने रउओ पर झपटी, अगुताई मति।

राति बीते द

राति बीते दे धरती पर भोर होखे द।
तहके चुनरी रंगाइबि हम अँजोर होखे द !!
सगरो जोन्हियन के गोटवा लगाइबि धनियाँ,
चानी चान के हम झुमका गढ़ाइबि धनियाँ,
ऊँची चोटिया हिमालय पर चढ़ाइबि धनियाँ,
कली कश्मीरी जूड़ा में सजाइबि धनियाँ,
गंगा-जमुना के लहरत हिलोर होखे द !! तहके0 !!
सिन्धु धार आई तहरे पखारे पइयाँ,
नाँची मोरवा सावन केशिया के छइयाँ,
दाँते अँगुरी दबाई दाँत देखि बिजुरी,
मधु ऋतु फूलवा चढ़ाई भरि-भरि अँजुरी,
अंजन तनिका नयनवाँ के कोर होखे द !! तहके0 !!
राम कृष्ण शिवा राणा से किनारी रंगबो,
सीता, राधा, लक्ष्मीबाई आरी-आरी रंगबो,
नक्शा भारती के अँचरा के छोर रंगबो,
कथा अमर-शहीद चारू ओर रंगबो,
ठइयाँ एक ही में सगरो बिटोर होखे द !! तहके0 !!
देखि टिकुली जहान के लिलार तरसी,
ओठ देखि मेघ अमरित के धार तरसी,
तहके देखि-देखि सोरहो-सिंगार तरसी,
चाल अइकत में बगिया-बहार तरसी,
तनिका चहकत चिरइयन के शोर होखे द !! तहके0 !!

(पनका से)

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

दोसरा के नीमन देखि के हहरे के ना,
केहू के हरियर देखि के चरे के ना,
जजाति के काम हवे, आगे-पीछे,
केहूके लागल देखि के जरे के ना।

बिहार-दर्शन

जइबो पुरूबी बनिजिया से सजनियाँ सुनबे ना !!

मूंगेरी लाठी, भागलपुर से रेशमी चदरिया,
बाबा बैजनाथ से मँगबो लमहर एक उमिरिया - से ...
सीतामढ़ी में जा छूवबो सीता के चरनियाँ,
मैथिल कोकिल विद्यापति के, गा-गा के भजनियाँ - से ...
मिथिले में भारती-पती मन्डन पंडित के डेरा,
जय-जय-जय जयदेव जनम धरती के करबो फेरा - से ...
लीची आम मुजफ्फरपुर से, चिउरा चम्पारन से,
वैशाली के दर्शन करबो आ भैंसा लोटन से - से ...
बाल्मीकि जी जहाँ राम के लिखनी अमर कहानी,
गण्डक के बराज से सुनबे, कथा सुनावे पानी - से ...
हाजीपुर से केला कीनबो, देखबि, सोनपुर के मेला,
गया पितर के तारब लाइब सुन्दर-सुन्दर पेड़ा - से ...
ले मनेर के लड्डू, खाजा हम सिलाव से लाइब,
कुँवर सिंह के राग जोशीला आजादी के गाइब - से ...
राँची से खाँची भरि लाइबि रूप राशि मुस्कान,
टाटा हटिया अउर बोकारो लोहा के समान - से ...
पटना ठहरबि कुछ दिन सजनी देखबि हम रजधानी,
जहवाँ आजादी खातिर भइली बलिदान जवानी - से ...
ले सीवान से आइबि सजनी सतुआ अउर सुराही,
आ जाइबि गोपालगंज में, दे देबो गलबाँही - से ...

मीतवा

सुनइह मीतवा, कवनो बीर के कहनियाँ,
देश का खातिर, बलिवेदी पर दीहले बा जवनियाँ !!
हड्डी दे दीहले दधीचि जी, मोर ध्वज जी बेटा,
कर्ण कवच-कुण्डल दे दीहले बान्हि कफन के फेटा,
हरिश्चन्द्र जी बने भिखारी, छोड़े रजधनियाँ !! सुनइह0 !!
श्रवण उठवले बहंगी कान्हे माई-बाप घुमावे,
दिनभरि भरमें तीरथ रहिया वन में राति बितावें,
पुत्र-विरह में देहिया तेजले बहँगी में पुरनियाँ !! सुनइह0 !!
शिवाजी तलवार उठवले साथे चले भवानी,
जंगल-जंगल जोगी बनि के राणा रखले पानी,
गुरू गोविन्द जी पुत्र गॅववले, झुकली ना पपनियाँ !! सुनइह0 !!
देश के खातिर जब सुभाष जी बनले पूत दीवाना,
भगत मौत के फन्दा पहिरे गावे अमर तराना,
कुँवर सिंह के उठल बुढ़ापा लेके लपट अगिनियाँ !! सुनइह0 !!
वीर सन्तरी करे चौकसी घर परिवार भुला के,
भारत मइया के रखवइया अंजन चले रचा के -
जहाँ जिन्दगी रन में जाले सिर में बान्हि कफनियाँ !! सुनइह0 !!

(अँजुरी से)

मुक्तक

अन्हार का पथार पर, भकजोन्ही के गुरिया,
कवनो बुरिबक का तरे, ई के बा छितरवले,
आकाश का तम्बू में, अन्हार के परदा,
अबहीं बइठल ना महफिल, तले के बा लगवले,
जब सभे सोंसियाता केहू जागिके ओंघाता,
तब बहुमत में अल्पमत के शासन ई के बा चलवले,
अन्हरिया का ताल में, विचार के मछरी खातिर,ई
लालटेन के बंशी के बा लगवले।

चन्दन के बगिया

चन्दन के बगिया रे मँह-मँह मँहकेला,
वनवाँ में नॉचेला मोर -
रेगुइयाँ, आइल अँगनवा में भोर !!
झॉके झरोखवा से झिलमिल किरिनियाँ,
कनखी चलावेले नेइ-नेइ कोइनियाँ -
चढ़ली जवनियाँ रे पागल मन बहकेला -
भागें सरेहवा का ओर !! रे गुइया0 !!
रतिया के साँवरी सुरतिया लजइली,
दियरी के बतिया जुवा के बुढ़इली,
चमकेला पगियारे घर-घर चमकेला -
पसरेला रहि-रहि अँजोर !! रे गुइया0 !!
जागि गइल घरवा दुअरवा बथनियाँ,
खेतवा के खतवा पढ़ेले खरिहनियाँ,
पिया नवरंगिया रे सवतिन संग सहकेला -
विरहा मॅचावेला शोर !! रे गुइयॉ0 !!
पर्वत से पानी के संदेश लावे,
बदरा पवनवाँ से पानी पेठावे,
मोती जस बुनियाँ ले कले-कले उतरेला -
ले लीं धरतिया बिटोर !! रे गुइयॉ0 !!

आपन माटी-आपन थाती

(नवचा नेह से)

घरवा फूटे ना

कि घर वा फूटे ना -
अँगनवाँ छूटे ना -
जागल रहिह देश के वासी, बैरी बा बरियार -
सपनवाँ टूटे ना !!

धरती डोले, गरजे, बादर, पत्थर बरिसे अम्बर,
तू अविनाशी पूत धरम के, त्यागी तपी दिगम्बर,
तहरे घर में आगि लगावे, पास पड़ोसी यार -
बगनवाँ लूटे ना !!

केतना मरम जिया में बाटे, केइसन बाटे नाता,
जाति रंग से अन्तर नइखे माता भारत माता,
पानी माँटी पर्वत घाटी एक प्रीति व्यवहार -
पवनवाँ टूटे ना !!

बढ़ती देखि जरेला भाई, चढ़ती देखि कसाई,
जो ना चेतब पहिले भाई पीछे बहुत बुझाई,
तू नइख अनबोलता-अनबुझ, नइख मूर्ख गँवार -
बिहनवाँ टूटे ना !!

एक से बढ़ि के ना कुछु होला एक से नाता ज़ोर,
भूलि जा दुख होखे जो मन में देश समाज अगोर,
अखियाँ में आँसू मति छलके छवि 'अंजन' दिलदार -
नयनवाँ टूटे ना !!

(आपन बोली, आपन गीत से)

मान कहनवा

मान मान मोर कहनवाँ,
करि ल गंगा में नहनवाँ,
ना त नाहक में जिनगी - ओराई भाई जी !
जेतना थाती बाटे जाए बेरि छोराई भाई जी !!
बिना बात के होत बतंगड़ रोजो होत लड़ाई,
लूट-पाट चोरी हिंसा के बाटे मान बड़ाई,
एक दिन उठि जाला विमनवाँ -
सूना हो जाला भवनवाँ -
कुछ दिन नीमन-बाउर चरचा सुनाई भाई जी !
जाति से कइसे, पाँति से कइसे सगरो लोग जोराई,
आपस के दूरी के जबले ना अलगा टरकाई,
लड़िहे हिन्दू-मुसलमान,
लड़िहें बच्चा बूढ़ जवान -
अइसन समर मची कि कफन ना भेटाई भाई जी !
बढ़ि के मन के साफ बनाई सबसे नेह लगाई,
भूत भरम के धइले बाटे सोखा से सोधवाई,
ना त नइखे तनिको देरी,
एक दिन मौत के फन्दा घेरी,
तहिया सगरो अछइत अकिलि हेराई भाई जी !
एगो माँटी, एगो पानी, एके गगन सुहावन,
मिलि जुलि के सब टहल बजावें राखेले मन पावन
इनिसे माँगी सोना चाँनी,
दीहे सबको के मनमानी,
अपने जेई, दू चारि दोसरो के जेवाई भाई जी !
कौनो दुख होखे बिसरादीं मिलि के डेग उठाई,
बाकी घर परिवार गाँव के टुकड़ा मति करवाई,
नइखे गैर सभे बा आपन,
पाई सबको से अपनापन,
सबके नैना चमके अंजन तनि रचाई भाई जी !!

(आपन बोली, आपन गीत से)

सैनिक जवान खातिर चिट्ठी

बबुआ तहरे खातिर पाती ई हमार जाता,
नाता के निभइह सुगना !
होत फजीरे जब हाथे में सैनिक पत्र भेंटाइल,
पढ़ते में मुस्कात नयनवाँ गंगा नीयर फुलाइल -
सचहू तहरे खातिर नेहिया के उपहार जाता -
जियरा के जुड़इह सुगना !
पहिला पाँती बाप-मतारी, कुल परिवार निहरिह,
दोसर पाँती संगी-साथी गाँव-जवार निहरिह,
ऊपरा भारत माता खातिर जय-जयकार जाता -
अँचरा के बँचइह सुगना !!
देखिह सरहद कहीं ना टूटे चोर-लुटेरा ताके,
घर के भेदिया लँगड़ी मारे, डाकू छिपि के झाँके,
तहरे खातिर सगरो मॉटी के श्रृंगार जाता -
थाती ह जोगइह सुगना !!
आसमान में उड़े लड़ाकू धरती टैंक जगइह
सागर में जलपोत जगा के देश के लाज बॅचइह !
तहरे रक्षा खातिर पुन्नि-प्रताप हमार जाता -
मॉथे ले चढ़इह सुगना !
देवभूमि ह ऋषी-पुत्र तूँ ऑचर लाज बॅचइह,
अजर-अमर पुरूखा के करनी कहियो मति भुलवइह,
झंडा ऊँचे फहरे चोटी पर ललकार जाता -
डेगवा तूँ बढ़इह सुगना,
देख देश पुकार रहल बा पाँती अन्तिम पॉती,
अंजन तोहरी अँखिया चमके नेह जुड़ावे छाती,
जुग-जुग जीय बेटा विनती ई हमार जाता,
मनवाँ ना डोलइह सुगना !

(मनसायन)

पहरेदार

पहरेदार हो सूत मति-टँगरी पसार !
तेलवा ओराइल जरि गइली सब बाती,
भारत के भागि के अधूरे बाटे पाती,
पहरेदार हो - दियरी पर घेरत बा अन्हार !! 1 !!
हमरे पुरनियाँ, लगवले जे अमोला,
खून से पटवले, आबाद कइले कोला -
पहरेदार हो खतरा में बगिया हमार !! 2 !!
चारू ओरि लुकाइल बाड़े चोरवा छिपर वा,
अँखिया गड़वले बाड़े डाकू-बटमर वा,
पहरेदार हो-जतन करिह गठरी तोहार !! 3 !!
कले-कले होत बा जवान मोर बिरवा,
अँखिया के जोति हवे, हियरा के हीरवा,
पहरेदार हो रहे के परी अब होशियार !! 4 !!
बड़े-बड़े गोला-गोली होता तइयारी,
केकरा पर छूटी केकर बगिया उजारी,
पहरेदार हो-देख तनि अँखिया उघार !!

(कजरौटा से)

जयहिन्द

(जयहिन्द हमारा प्रिय नारा हैं, इसी की महत्ता बताई गई हैं।)

कहि द जयहिन्द-जयहिन्द साथी, ई कसम ह निभावे के होई,
ई शहीदन के थाती ह साथी, जान देके बॅचावे के होई,
बा कसम अपनी माँ के, वतन के,
बा कसम आजु भाई-बहन के,
जान लाखों लुटा के जे पवल, मुफ्त में ना गँवावे के होई !! 1 !!
केहू फॉसी के फन्दा में झूलल,
केहू गोली से जिनगी के भूलल,
केहू सब कुछु गँवा के बिलाइल, याद ओहू के आवे के होई !! 2 !!
केहू गद्दार होखे न पावे,
केहू मक्कार होखे न पावे,
ई ह मइया के ऑचर ए साथी, गंगा जल में धोवावे के होई !! 3 !!
दुनिया पुरूब से पच्छिम बदलिजा,
केतनो ऊँचे से खाले केहू ढलि जा,
बाकी साथी रे सब कुछु लुटा के, पॉव आगे बढ़ावे के होई !! 4 !!
फूल अपना चमन के बॅचइह,
कहियो अंजन नयन में रचइह,
झंडा ऊँचा से ऊँचा ले जइह, अबना नीचे झुकावे के होई।

सोहर

लहरत फहरत उड़ेला तिरंगवा हो,
देशवा के देला ललकार, देखी ना अगस्त आइल,
एंही रे निशनियाँ के बड़ी रे कहनियाँ हो,
सुनि बहे अँसुआ के धार, देखी ना अगस्त आइल,
इहे बाटे सोना चानी, इहे हीरा-मोतिया हो,
इहें बाटे जोतिया के हार, देखी ना अगस्त आइल,
जब तब घेरे लागे कारी रे बदरिया हो,
आगे पीछे घेरेला अन्हार देखी ना अगस्त आइल,
भाई सब कसि लेहू कमर लंगोटिया हो,
बहिनी के सेना तइयार, देखी ना अगस्त आइल,
अब नाही हमनी के अँखिया देखाई केहू,
अँखिया लेइबि जा निकाल, देखी ना अगस्त आइल।

हमार चमन

(भारत एक चमन है। अपने चमन की रक्षा हर हालत में सर्वोपरि है। इस पर किसी की आँख नहीं लगनी चाहिए।)

ई त चमन हमार ह, ई त सुमन हमार ह !
नजर लगाई मति इहाँ, डगर बनाई मति इहाँ,
ई जन्म भूमि के दिया, हवा बहाई मति इहाँ,
ई त किरन हमार ह, ई त पवन हमार ह !! 1 !!
ई हो रहल जवान बा, अबे त रेख उगन बा,
चमक रहल बा चान ह, ई सूर्य ह, दिनमान ह,
ई त गगन हमार ह, ई बाँकपन हमार ह !! 2 !!
ई ब्रह्मचर्य में पलल, गृहस्थ धर्म में चलल,
ई आजुले पढ़त रहल, ई आजु ले बढ़त रहल,
ई धन-रतन हमार ह, ई त नयन हमार ह !! 3 !!
ई बाग ह शहीद के, ई बाग ह हमीद के,
ई बाग ह सुभास के, भगत के ह, आजाद के,
ई गाँधी के जवार ह, शहीद के मँजार ह !! 4 !!
ई लाख-लाख लोग के, दरद भरल वियोग के,
ई गोदी के, सुहाग के, ई भेंट ह विराग के,
ई त घुटन हमार ह, ई त रतन हमार ह !! 5 !!
मस्जिद के ई अजान ह, ई सत-श्री अकाल ह,
ई गिरिजा-घर के प्यार ह, ईहे तीरथ हमार ह,
ई त शरन हमार ह, ई त परन हमार ह !! 6 !!

मुक्तक

आजादी पुन्नि के पौधा हवे, पाले के परी,
एकरा ऊपर के कँजास टारे के परी,
ई खून से पाटल बा, इयादि रहे,
जरूरत परी त खूने डारे के परी।

ललनवाँ

(माँ अपने सैनिक-जवान बेटे के लिए आरती सजाती है और संदेश देती है कि देश की रक्षा किसी भी कीमत पर होनी चाहिए। चाहती है कि शहर-गाँव, सभी जगह शान्ति एवं सम्पन्नता बनी रहे।)

थाल साजि मइया तोहरी, आरती उतारे,
हो राम आरती उतारे,
मोरे ललनवाँ हो, देशवा के तूँ ही रखवार,
तूँ ही नगराज तू ही सिन्धु के तरंगवा,
तहरे पर असरा लगावे ला तिरंगवा,
घर वा-अँगनवॉ के तूँ ही रे दियनवाँ हो राम
तूँ ही रे दियनवाँ,
मोरे ललनवाँ हो, तहरे से देश उजियार !! 1 !!
अँचरा के लाज तूँ ही, गोदी के सपनवाँ,
दुलहिन की मँगिया के तूँ ही अरमनवाँ,
बहिनी की रखिया के तूँ ही रे रतनवाँ हो राम
तूँ ही रे रतनवाँ
मोरे ललनवाँ हो तहरे से गाँव गुलजार !! 2 !!
आन्ही आवे, पानी आवे, गरजे तूफनवाँ,
पीछे मति हटइह डेग, भारत के जवनवाँ,
दूधवा के लाज तूँ बचइह मोर सुगनवाँ,
बँचइह मोर सुगनवाँ,
मोरे ललनवाँ हो, लूटे नाही चोर बटमार !! 3 !!
देखिह उदास कहीं होखे ना फगुनवाँ,
सूखे नाहीं सपनों में कहियों सवनवाँ,
खेत-खरिहनवाँ में रोवे ना नयनवाँ हो राम
रोवे ना नयनवाँ,
मोरे ललनवाँ हो देशवा के रखिह सम्हार !! 5 !!

भाई-भाई बानी

ना हम हिन्दू-सिक्ख ईसाई ना हम मुसलमान,
भाई-भाई बानी देशवा हमार हिन्दुस्तान !!
सिजदा में सर झुका खुदा से हमहीं अरज लगाई,
गिरिजाघर में परमेश्वर से साँचा दिल देखलाई,
गुरूद्वारा मन्दिर में प्रभु के महिमा हमहीं गाई,
हमहीं रंग लिबास बदलि के आपन फर्ज निभाई,
पवन-किरन जिनगी भरि सेई हमहीं एक समान !! भाई0 !!
बॉटत-बॉटत दादा-परदादा मॉटी मिलि गइले,
काटत छॉटत देशी-परदेशी कहवाँ छितरइले,
ना भारत के मॉटी भइया कवनों ओरि बॅटाई,
ना मजहब के नॉव बुताई, ना अब बाग कटाई,
एक गोद भारत माता कें, सब भाई सन्तान !! भाई0 !!
मति टूटे द फरे-फुलाए द कचनार बगइचा,
मति मॉग करजा दुनिया से मति उधार ल पइँचा,
तहरी बॉहिन में बल बाटे सूरज चान उगइब,
तहरा ताकत बा कालो से एक पाँजा लड़िजइब,
मति बाँट भाई-भाई ह, गरजे द तूफान !! भाई0 !!
ना मजहब बाँटे अदिमी के धरम भेद ना डाले,
पाक-साफ राखे खातिर कुछु करतब नेम निभा ले,
बुर हवे उन्माद क्रोध में कहियो कहाँ चिन्हाला,
बुद्धि विचिलि जाले छनही में छन में मन बउराला,
ना बूझे अँखिया अंजन के ना मनवाँ दे कान !! भाई0 !!

(मनसायन से)

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

हमरा सुखले-साखल बा, तहरा चोखा बा,
हम साफ-दाफ बानीं, तहरा धोखा बा,
उड़ा ल, उड़ा ल, तहरा हाथ में कबूतर बाटे,
हमरो गाँवे, एगो महोखा बा।

लड़ाई काहे होता

लड़ाई काहे खातिर होता भाई-भाई हवे,
भाई बजर कसाई हो गइल !
रहे जीये के साथे-साथे,
काम बाँटि के हाथे-हाथे,
कवनो बोझा हलुका लागे,
उठिजाई जब माँथे-माँथे,
असली साफ सफाई मनवाँ के सफाई हवे !! भाई0 !!
रोटी नून जून पर मिलिजा,
ऊसर-बंजर बगिया खिलिजा,
साथ रहे से धरती बिहंसे,
साथ रहे से पर्वत हिलिजा,
लोगवा इहे कहेला, बड़हन प्रेम निभाई हवे !! भाई0 !!
केतना सुख पाई मन पागल,
भागा-भागी बाटे लागल,
केहू ना बा खड़ा मोड़ पर,
जे-जे जब धरती पर जागल,
ई त दुनिया अइसन जहवाँ आवा जाई हवे !! भाई0 !!
देहिया के करिह मति आशा,
कबले बा, कब करी निराशा,
नीयत बाउर बा लोगवा के,
लागि गइल बा घर-घर लासा,
अंजन राउर अँखिया नाता के भरपाई हवे !! भाई0 !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

काजर के मोल चमकवला में बा,
गहना के मोल, झमकवला में बा,
लूटे वाला के कमी नइखे,
आदमी के मोल लुटवला में बा।

भाई के दुलार

(गँवार भाई अपने होशियार भाई को अलग होने की स्थिति में अलगाव के दुष्परिणामों की ओर संकेत कर रहा है।)

जब-जब याद आई, भाई के दुलार तहरा,
जब-तब काटे धाई अँगना दुआर तहरा !!
मइया कोरा में खेलवली, जहिया झोरा में झुलवली,
अँगना एके-एक दुअरिया, घर के एके-एक डगरिया,
सपना बाबू जी के एक, हमरे बबुआ होइहे नेक,
सपना केतने फूलइले एके डार तहरा !! जब0 !!
अलगा होके तूँ का पइब, तनिका नीमन चीकन खइब,
हमरा सूखल-साखल जूरी, करबि दोसरा के मजदूरी,
तहरा जूठन फेंकल जाई, हमरा आगी ना बराई,
सोचब एके आँगना दू-दू गो बेवहार तहरा !! जब0 !!
जहिया दियरी बाती आई, तहरा पाँती दिया धराई,
हमरा घर में रही अन्हार, अँखिया डूबी आँसू धार,
फगुआ हँसि-हँसि खूब मनइब, पूआ संगी साथ उड़इब,
देखब कई रंग के एके गो तिउहार तहरा !! जब0 !!
इहे किस्मत के ह बात, बाड़ पइसा ढ़ेर कमात,
जिनगी मॉटी में हमार, चमकत बाटे देह तोहार,
हमरे चलते तूँ बनिगइल, बनि के हमरे से तनि गइल,
हँसि-हँसि ताना मारे गउवाँ जवार तहरा !! जब0 !!
करबि तहरे हम सेवकाई, लेइबि जिनगी सजी गँवाई,
मइया बाबू जी के सेवल, नइया एक साथ जे खेवल,
पालल बगिया के मति काट, अँगना दुअरा के मति बाँट,
एक दिन आई फेरू बगिया में बहार तहरा !! जब0 !!
धनवाँ लेब बहुत कमाई, नाही मिली सहोदर भाई,
तोहार मॅटरी हम पहुँचाइबि, जे-जे कहब टहल बजाइबि,
बाकी हमके मति बेलगाव, अँखियन से मति दूर भगाव,
ऊहे करबि जेइसे भरल रही संसार तहरा !! सब0 !!

(पनाका से)

बेटी के विदाई

(बेटी विदा हो रही है। विदाई से उत्पन्न व्यथाओं का चित्रण इस गीत में है।)

बेटी भोरे-भोरे जब ससुरार जइहें,
सबकी अँखिया में असुआ निहार जइहें !
छतिया पीटे लागे मइया, सिंसके भीतरे भीतर भइया,
रोवे बाबू बारम्बार, रोवे अँगना-दुआर,
सखिया भेंटे अँकवार, छूटल नान्हे के दुलार,
अब त डोलियो पर तानि के ओहार जइहे !! बेटी0 !!
सँझिया काहे के ई आइलि, रतिया काहे के ले आइलि,
भरल अँगना दुआर, बेटी जइहें उजार,
साँझे सँझवत के देखाई, अब के अरहवल पुराई,
हमरा अँगना के भोर भिनुसार जइहें !! बेटी0 !!
भोरे अँगना के बहारी, पुरूब लाली के निहारी,
जगबे माई जगब भइया, दुअरा बोले लागलि गइया,
जा के बाबू के जगा दे, पढ़ी दियवा जरा दे,
सब कुछु उगते किरिनियाँ बिसार जइहें !! बेटी0 !!
तनिका रोक काली माई, लीह डोली बिलमाई,
दीह आपन आशीष, बेटी जीये सई बरीस,
होखो अमर सुहाग, चमको माँगी के चिराग,
जबसे सासु-ससुर का दुआर जइहे !! बेटी0 !!
सुनबू भोरे के किरिनियाँ, मति होइह बिरिनियाँ,
डोली धीरे-धीरे जाई, होइह पवन सहाई,
मति उठइह तूँ ओहार-बहत होई आँसू धार,
कहीं चीन्हि के डगर मन हार जइहे !! बेटी0 !!
जइह भइया मोरे नउवा, बोलत होई ओइजा कउवा,
पूछिह सब कुशलाई, कहिह भेजली तोहार माई,
देखिह अँखिया में लोर, कहिह दूनूँ हाथ जोर,
बबुनी हमनी के सुधिया बिसार जइहें !! बेटी0 !!

(सँझवत से)

हमार जिनगी

(माँ बचपन में ही गुजर जाती है। बच्चे को माँ का अभाव पग-पग पर सता रहा है।)

भरल कँटवा में बाड़ी हमार जिनगी,
कहिया जाने विधना करिहें किनार जिनगी,
जहिया काकी गरियावे, बढ़नी लेके मारे धावे,
बोले लवना लगाइबि, तोहके बारी में पेठाइबि,
सुनि-सुनि सोची अपने मनवाँ, लिखले बाड़े का विधनवाँ,
जरते-जरते में होगइली ई छार जिनगी !! भरल0 !!
एकदिन मनले नाहीं बतिया, धइके ले गइले संघतिया,
देखनी लरिकन के पढ़ाई, आइल अचके में रूलाई,
सोचनी रहित हमर माई, देइत पटरी मँगाई,
सचहूँ पढ़ा लिखाके करि देइति तइयार जिनगी !! भरल0 !!
दू गो सुनीले झइहावन, सबके बनिगइनी हम धावन,
सूखल साखल हमरे बखरा, लोगवा नाँव कहेला टुअरा,
कुहुँके रोज करेज हमार, सही भीतरे-भीतर मार,
माई बिना लहके बनि के अंगार जिनगी !! भरल0 !!
माई तजि के कहाँ पराइल, सगरो सुखवा हेराइल,
जेकरा माई नइखे जग में, केहू सहाई नइखे जग में,
घर में केतनो होई लोग, केतनो होई उत्जोग,
बाकी सुखले रही ना आई बहार जिनगी !! भरल0 !!
जहिया हो जाई बुखार, बथी कसि के जब कपार,
रोवबि कहि के माई-माई, केहू पूछहूँ ना आई,
लोगवा हँसी खूब उड़ाई, कइले बाटे ई कलहाई,
रहल नान्हें से हरदम लाचार जिनगी,
माई सपना में बोलवलसि, अपनी गोदी में बिठवलसि,
लागलि चूमे पुचुकारे, लागलि अँचरा से झारे,
तले नींदिया हेराइल, सूना घर वा बुझाइल,
हरियर होके छनभरि हो गइली उजार जिनगी !

(पनका से)

अइह

(अपने यहाँ आने के लिए स्नेह-निमंत्रण)

एक दिन हमरो दुअरिया तनि अइह हो,
जिनिगिया के पुरइह असरा !!
खाली-खाली चलि अइह,
साथे कुछू ना ले अइह,
मति नजरिया एह गरीब के भुलइह हो - जिनिगिया .....!
हाथ जोरि के अरज लगाई, मन से करी निहोरा,
नयन पालकी उठी तबे जब चमकी लाल सिन्होरा,
पाती आँसू के पढ़ि अइह,
गंगा मइया जस बढ़ियइह,
लेके पाती अपनी छाती से लगइह हो - जिनिगिया .....!
गाँव नगर सपना जस लागे घर भइले परदेस,
तहरे खातिर धइ लीहनी हम बैरागी के भेस,
अँखिया मानी ना कहनवाँ,
संगम तट पर करी नहनवाँ,
तर्पन तन के मन के हाथे तूँ करइह हो - जिनिगिया .....!
तन के मड़ई में मनवां के चटई झारि बिछाइबि,
भाव अभावे का थाली में आगे जब घुसुकाइबि,
पंखा हॉकी सॉच पीरितिया,
गारी गाई दिनवा रतिया,
बतिया-बतिया दिल के दियना जरइह हो - जिनिगिया .....!
बीति गइल सुख के दिन आइल असमय राति अन्हरिया,
दरद बटोही घेरले बाटे, आठो पहर डगरिया,
अइह तनिको मति सकुचइह,
सोझे आ जइह मुसुकइह,
अइह अँखियन बीचे अंजन तूँ रचइह हो - जिनिगिया .....!

भाई

(भाई - भाई के प्रेम का चित्रण)

धन्य-धन्य ऊ भाई जे भाई खातिर जीयेला,
दुनियाभर के हालाहल भाई खातिर पीयेला,
जे भाई खातिर कहियो असमय कामे ना आई,
ओके भाई मति बूझ उहे ह बजर - कसाई !!
एक दिन मात-पिता के छाती के संसार जुड़ाई रे,
जहिया भाई खातिर भाई आपन जान गँवाई रे !
भाई हवे महल के पाया, राखे सब भाई पर छाया,
सबके नेह-छोह सुख बाँटे, जेतना ले सबका के आँटे,
अपने दर्द उठावे भारी, सबके दे सुख के फुलवारी।
एक दिन पालल-पोसल भाई कहियो कामे आई रे !! जहिया० !!
गइले रामचन्द्र बनवास, भाई के दीहले रनिवास,
दर-दर जाके ठोकर खइले, बाकी तनिको ना कुम्हलइले,
लखन का लागल शक्ति बान, रोवे लगले श्री भगवान -
कहले जाई अजोद्दा कवन मुँह देहिया देखलाई रे !! जहिया० !!
आफति-विपति सहिके भाई, जे भाई के बने सहाई,
ओकरे बने लोक पर लोक, विधना हरिहें ओकरे शोक,
अपने भूखे रहि के भाई, जे भाई के दीहें जियाई -
ओकरे गगन लोक में अजर-अमर झण्डा फहराई रे !! जहिया० !!
धनि-धनि अँगना अउर दुआर, जहवाँ उपजल अइसन प्यार,
जे अइसन सपूत जनमावल, भाई देव तुल्य जे पावल,
धनि-धनि अँगना अउर दुआर, जहवाँ उपजल अइसन प्यार,
जहवाँ भाई खातिर भाई बनि जाला रघुराई रे !! जहिया० !!
भाई हवे बाग के चन्दन, भाई हवे आँखि के अंजन,
अइसन भाई जब मिलि जाई, जिनगी के बगिया हरियाई,
नइया पार लगइहें भइया, बनि के साथे साथ खेवइया,
जिनगी का लेके आइलिबा साथे का ले जाई रे !! जहिया० !!

(नवचा-नेह से)

गरीब बहन के नेवता

(भाई अमीर हो चुका हैं, बहन गरीब हैं। निमंत्रण आने पर बहन अपनी गरीबी की चर्चा करती हैं।)

कइसे आइबि हम तहरा दुआर हो –
समइया हमरी पातर भइया .... ॥
तोहरा अँगना धनी-मानी होइहें बहुरिया,
पइसवा लुटइहें सब भरि-भरि अँजुरिया,
हीत-नात सगरो से भरली दुअरिया,
पर्दा होई टाँगल, होई चमकत केवड़िया,
सगरो भरल-पुरल होई दरबार हो – समइया ..... ॥
टाटी बाटे एने अउरी छन्हियाँ बा टूटल,
बर्तन सब फूटल जइसे भागि मोर फूटल,
एगो लोटा थारी एगो टूटही बा खटिया,
ईटा से अड़ावल बा सिरहाने के पटिया,
फाटल लुगरी में जिनगी हमार हो – समइया ..... ॥
जीव नाही मानी कहीं लुगरी में आइबि,
तोहरी नोकरिनियों ले हीनवे बुझाइबि,
सगरो भरल होई कहवाँ लुकाइबि,
लह-छह होई कहीं हम ना चिन्हाइबि,
तबे जरि-मरि होइबि हम छार हो – समइया ..... ॥
लचकत भार आई सगरो हितइया,
बाड़ा हीन लागी हमरा देत में रूपइया,
हमरी गरीबिया के बूझित मरमवाँ,
नेवता पेठवतो में लगिते शरमवाँ,
देखित बानी हम केतना लाचार हो – समइया ..... ॥
होई जब साँझि हम चुपके से आइबि,
राति भरि बाबू लोग के टहल बजाइबि,
भेंट होई चुपे-चुपे नाहीं केहू जानी,
देखबो जो करी केहू नाहीं पहिचानीं,
चलबि होई जब बड़का भिनुसार हो – समइया ..... ॥
पूछिहें भतीजा जब फूआ नाही अइली,
कहि दीह तूँही जे बेमार परि गइली,
पूछे कहीं केहू जे बा भार नाहीं आइल,
कहिह चिहनबे जे भारी भार आइल,
दीह सबके देखाई कवनो भार हो – समइया ..... ॥

(पनका से)

हाय रे दहेज

सोना लेब चानी लेब, केतना केतना पइब,
तनि खेयाल कर ना हीत हमरे कहइब।
बेटी के सुनि जनम, उदासी घर-घर में छा जाता,
बे दहेज के नाता कवनो, कहियो कहाँ जोराता,
हमहूँ थकनीं, तुहूँ थकल, भरि अँकवार मिलइब
खीर खवाई प्रेम के रिश्ता, दुलहा बा कोहनाइल,
लरिका के काका कुछ बाड़े, साँझे से गरमाइल,
लरिका के फूफा के देखीं, पूछ ब डॉटल जइब
एगो बुढ़ऊ बाबा बाड़े, बाड़े पंडित ज्ञानी,
मास्टर साहेब अगुआ बानी, के दोसर गति जानी,
पाई-पाई सजी चुकवल, केतना सूद चुकइब
का सोचत होई ऊ बेटी, का सोची महतारी,
बाप के जियरा कइसे बूझी पइसे जहाँ बेमारी,
हँसी खुशी से जो भाई जी, ना सब रसम निभइब
बेटिहा कहियोना सोचेला, अछइत हम कम देईं,
दम भरि चाहेला आपे के चरन धूर हम सेईं,
चरन धूर अंजन बनि जाईं, नेह से आँखि मिलइब।।

मुक्तक

राति अन्हारे में बीतेले, आ दिन घाम में।।
जेतना दरद होला उपाटि के,
सहेजि के, करेजा में साटि के,
दिया के टेम पर सेंकि-सेंकि,
अन्हार कचोटेला, ओठ काटि के,
का जाने के, के, सूति जाला बेसोचले आराम में।।
जब अन्हार हो जाला,
त केहू अनगिनत बिया बो जाला,
बिना जोत-पात के ई पैरा,
ऐहीसे फजीरे दुका हो जाला।
केहूना सोचेला का भइल, लागि जाता काम में।।
सबके धीरे-धीरे कटत जाता,
कहीं से हटल बा, कहीं सटत जाता,
लोग कहत बा, चमकत बा,
हमरा बुझाता जे लहत जाता।
विकात त सबके बा, फरक परत बा दाम में।।

कुदाल (फावड़ा)

(कृषक-जीवन से सम्बन्धित वृत्त)

हमरे कन्हवाँ पर चमके कुदाल भइया,
हमहीं खेत में उगाई दाना लाल भइया,
केतनो जहर उगेला घाम, छोड़ी ले ना काम,
नाही छोड़ीले सुतार, नाहीं करीले आराम,
हम त कामे खातिर रहीले बेहाल भइया !! 1 !!
हमके पोटि-पोटि लोगवा कहेला भगवान,
पेट काटी, राति काटीले, हई अइसने किसान,
हमरे मँथवा पर ढेर जँवजाल भइया !! 2 !!
हमरे नन्हका चरावेले बकरी दिनरात,
जिनका सपना रहेला तरकारी दाल-भात,
पछिली पँतियों में मिलेला मलाल भइया !! 3 !!
कबो सतुआ भेंटाला, कबो चोकरे के लीट,
तन पर नाया बस्तर नइखे, मिले पहिरे के चीर,
हमरे पेटवा रहेला हरदम खाल भइया !! 4 !!
घर में लुगरी रँगाला त होखेला तिउहार,
केहु से मँगनी लेई ले त जाईले ससुरार,
जी हजूरिए में कटि जाला साल भइया !! 5 !!
दूगो बरधा एगो हर-फार, इहे देला साथ,
कबो बोझा, कबो बीया जब चढ़ल रहे माँथ,
खरीहनवो ना सुनेला सवाल भइया !! 6 !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

आजादी पुन्निके पौधा हवे, पाले के परी,
एकरा ऊपर के कँजास टारे के परी,
ई खूने से सिंचाइल बा, इ याद रहे,
जरूरत पड़ी त खूने डाले के परी।

बकरिया

हमरी नन्हकी बकरिया के मति मारी,
खइबो ना कइलसि, तुरइबो ना कइलसि,
एको थान लफि के चबइबो ना कइलसि,
तवनों पर एतना बिखाह गारी !! मति० !!
राउर भइँसिया तुरावेले जहिया,
झमड़ा के भूइयाँ गिरावेले तहिया,
सगरो फरहरी के देले उजारी !! मति० !!
ओरहन पर धाईले लाठी निकाले,
जीभि राउर कई पुस्त ऊपर ले जाले,
चोकरीले जइसे मकुनवाँ के पाड़ी !! मति० !!
बात जो बढ़ावल जा धाईले काटे,
सवती के खींसिई कठवती पर बाटे,
जाना खातिर आइबि मत हमरी दुआरी !! मति० !!
अबरे पर झपटे के जानीले रउआ,
दूबरे से रोज रोज ठानीले रउआ,
जबरा का आगे ना मुँहवा उघारी !! मति० !!

मुक्तक

आँखि खुलबे ना कइल अबेर हो गइल,
गठरी बान्हते-बान्हते ढेर हो गइल,
लोग कहेला जे बुझानहार हवे,
हमरा बुझाता जे अनेर हो गइल।

✪ ✪ ✪

सब राउरे हवे हमार का बा,
इ रूप का बा सिंगार का बा,
रउए समय पर ना ताकबि,
त ई बाजार का बा संसार का बा।

मॉटी के घर

मॉटी के घर, मॉटी के वर
मॉटी के दुलहनियाँ,
होके डोली में सवार,
कनिया जाले ससुरार !! कनिया0 !!
महल अँटारी माँड़ो शोभे, मंगल गीत सुनाई,
चह-चह भरल दुआर बाग में गूँजि उठल शहनाई,
भाँति-भाँति पकवान बना के,
लहरे स्वर निर्गुनियाँ !! कनिया0 !!
माई बाबू धरती रानी, ऊपर गगन सलोना
कोहवर में कनिया सकुचाइलि अंग-अंग में सोना,
परिछावन में गीत सुनावे,
जिनगी बने कहनियाँ !! कनिया0 !!
राग रंगोली मधुर ठिठोली मन के मधुर बनावे,
बचपन के संग सपना नॉच अँखिया आँखि मिलावे,
ना दहेज के फिकिर सतावे,
बेधेना बदनियाँ !! कनिया0 !!
मिलन भेंट अँकवार इहाँ के खोजे कहाँ रूपइया,
दिल में नेट, नीर अँखियन में ताके बाबू मइया,
ठान-ठनौवल कुछू ना जाने,
निश्छल मन जिनगनियाँ !! कनिया0 !!
रोज मिलन के रोज विदाई जिनगी जहाँ गढ़ाले,
रोज घाट पर मेला लागे, रोज पिरीत नहाले,
सपना के खेती अँखियन में,
अंजन रचे पपनियाँ !! कनिया0 !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

ताकत रही विसराई मति,
खलिहा बानी टकराई मति,
राउरे आँखि राउरे अंजन
रचवले बानी त मेटाई मति।

किरिया

खइल किरिया त काहे बिसारि दीह लि,
मीठे-मीठे जहर देके मारि दीह लि,
केइसन तिरिछोल बाड़ कसाई नीयर,
ऊपरे-ऊपरे बुझाल तूँ भाई नीयर,
छवनीं जब-जब हम मड़ई, उजारि दीह लि !! मीठे0 !!
हम कहीं ना कहीं लोग कहबे करी,
नीमन होई जे नाता निबहबे करी,
सगरो तोपल पीरितिया उघारि दीह लि !! मीठे0 !!
नइख बूझत त पछतइब, लागी शरम,
झूठे लूटल गइल ना बुझाइल मरम,
माई-बापे के पगरी के फारि दीह लि !! मीठे0 !!
मति सताव, लगाव-बझाव ना मन,
अबहूँ अंजन रचा के घुमाव नयन,
तनिका सटहूँ ना दीहल तूँ टारि दीहल !! मीठे0 !!

मुक्तक

टाही लगवले रही, टीपि बइठवले रही
चारू ओरी डोरी लगवले रही,
कबो ना कबो त चू के गिरबे करी,
अगतही से मुँह बवले रही।

जइसे मन करे ले चलीं चले के बा,
समय का समुन्दर में हले के बा,
एक से सइले केहू-केहू गनेला,
बीचे में लटकि के हाथ मलेके बा।

मॉगलिक

(1)

जब बॉहि में बॉहिधरा देहनी, जब मॉगि के सेनुरदान दियाइल,
जात - जमात, बरात का पॉति में भाव से नेह स्नेह जुड़ाइल,
बेटी के जोग मिले वर सुन्दर, भेट में ढ़ेर सामान सजाइल,
देखि के नैन बा बैन चुपाइल, प्रान का साथ में प्रान लिखाइल,

(2)

जागत रैन कटे घर के, अँगना त्यौहार के दीप जराइल,
मंत्र-विधान वितान तने बड़ रीति से प्रीति के भीति धराइल,
डोरी के छोरी ना छूटे कबो, कुछु वेद- विधान के भॉवरि आइल,
हेविधना तहरे किरिपा तहरे असरा सबतान तनाइल,

(3)

राग-सुहाग ना फीका परे जिनगी-जिनगी संग हेलतजाई,
भोर उगी, बरीसी सोनवॉ, नित सांझि अन्हार के झेलत जाई,
तेज द ज्ञान द मान-विहान द नाव समुद्र के हेलत जाई,
राह में लागी ना आन्ही-बतास, अभाव के मेह के ठेलत जाई,

(4)

मंगलगीत सुनावत मीत कि बाग-सुहाग रहे हरियाइल,,
जोति झरे ॲगना-दुअरा सदपात रहे बगिया सरियाइल,
मंगल देव सदा करिहे, हरिहे भव रोग कि जोग जुवाइल,
अंजन नैन रचावत में धनि भागजे राउर आसन आइल,

मंगल-ध्वनि

जेकरे चलते मंगल होला, जिनगी फूल फुलाला
जेकरे चलते सब सुहाग के लाली ना मुरुझाला,
जेकरे चलते ज्ञान हृदय में, धन आवेला घर में,
जेकरे चलते धरती बिहसे, उठे राग अम्बर में,
जेकरे चलते मंगिया के सिंदूर कवो ना टूटे,
जेकरे चलते वर कनियाँ के हाथ कवो ना छूटे,
ओही गन नायक के पग के धूरि बना के अंजन,
आजु भेंट देइबि अँखियन के करबि सदा पदवन्दन,

बोल-बोल

बोल-बोल हो बबुआ निबहब कि ना ?
दुनिया का मेला में,
जग का झमेला में
सुख-दुख में साथे तूं रहब कि ना ?
मॉटी के सुन्दर खेलौना ह दुनिया,
माया हिरिनियाँ के छौना ह दुनिया
मतलब का नाता में देहिया बन्हाइल,
नॉचत बा पुतरी, मदारी लुकाइल,
लागल बजरिया बा - दिन दुपहरियाबा
जवने ते चाहल जग चहब कि ना ? ||1||
चढ़ती उमिरिया बा देहिया मदाइल,
कहियो ना चलती में जगका चिन्हाइल,
मनवा का भरमे में भरमें गॅववल,
मिलल पीरितिया, सुरतिया ना पवल,
पतरी डगरिया में गउवॉ-नगरिया में,
तीत-मीठ हॅसि-हॅसि के सहब कि ना ||
बाप दादा माई-दाई सगरो पुरनियॉ
चलि दीहे पारा-पारी छोड़ि के निशनियाँ
बचपन - बुढ़ापा जाई, जाई जवनियाँ,
सभे केहू बनिजाई बीतल कहनियाँ
कवनो पहरिया में, धाम में, अन्हरिया में
अंजन रचि प्रेम बचन कहब कि ना

(आपन बोली, आपन गीत)

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

बोल-बतिया के काटि ल,
भूजा धूरा मिला के बॉटिल,
तूँ हूँ राजा ऊहो राजा,
करेजा में करेजा साटि ल।

गरीब

केहुना गरीब के भलाई करे वाला बा,
भगिए गरीब के जहान में निराला बा,
रहे के ना घर बाटे टूटही मड़इया,
दिन रात खाँसी आवे, आवे ले जड़इया,
सगरो बियाधि इनही का घरे आवेले,
जिनगी दरद के लगान के चुकावेले,
इनही पर घाम तेज, इनही पर पाला बा ।।
मेला के उछाह नाही कहियो चिन्हाइल,
शादी आ सराध सजी एके तरे आइल,
दिनवाँ उदास राति लोर के कहानी,
सुबहित बिजन कबो बने ना चुहानी,
ऊपर से दबगर के चुभत रोज भाला बा ।।
एक गो मजूरी के भरोसा बाटे भारी,
जबले नीरोग देहि मालिको पुकारी,
इनके संघतिया बा हरवा-कुदारी,
ठेला रिक्शा, कुली ना त खटेले बेगारी,
इनके जुबान पर लगल हरदम ताला बा ।।
सुखवा के साथी जाने कहवाँ लुकाले,
जाड़ के सरप लेखाँ कहा दो सँपाले,
केहू डाँटि देला केहू लालच दिखावे,
केहू जान मारे खतिर दँतवा पिजावे,
जिनगी बुझाले जइसे मकरी के जाला बा ।।

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

हँसलके काल हो गइल,
केतना केतना बवाल हो गइल,
आँखि पर आँखि चढ़ि गइल,
कवनो पीयर हो गइल कवनो लाल हो गइल ।।

नसबन्दी

केतना ओधी रोपब हई लरिकन के सुन मुकुन्दी,
चल-चल कम्पू लागल बा, करवा ल नसबन्दी,
रेंगन ठेंगन चीलर-बीलर खटमल मति उपजाव,
नून-तेल जोरे चोते मे तू मति उमिरि गँवाव,
खाली भेड़ि-छेरि लेखाँ हई पठरू जो ढेरियइब,
भादो माघं बितइब कइसे, अन्न कहाँ से पइब,
एगो-दूगो बहूत हवे चाह जो ढेर बुलन्दी ।। चल० ।।
आपन खा के तहरा के बोल केतना समझाई,
आन्हर मति होख जल्दी तू दे द ब्रेक लगाई,
जॉगर राख, डॉगर होके, रस्ता मे मति बोल,
सन्तोषी माता के सुमिर लालच से मति बोल,
सीमित रहब तब तूं पइब जिनगी भरल अनन्दी ।। चल० ।।
एगो से जब सउँसे घर मे हो जाला भिनुसार,
काहे खातिर भेड़ि हिराव, लागी सजी अन्हार,
जे ढेरियावल नाश हो गइल कौरव रावण पूरा,
ना सुख देकल चाँदी सोना उड़ियाइल जस धूरा,
राम अउर शिव पर भी लागल रहे कबो इदबन्दी।। चल० ।।
देख कवनी गा भिक्खू के धइले बा बेमारी,
पतरू के दम्मा धइले बा, मंगरू के लाचारी,
कई साँझि ना चूल्हि बराइल, होता मारा मारी,
कनवाँ कीहाँ नधाइल बाटे घर में गारा गारी
मँहगाई से आफति बाटे, देश-दशा मे मन्दी ।। चल० ।।

(कनारवी से)

☆☆☆

मुक्तक

ना हम बानी, ना हमार बा
जे कुछु बा, सब तोहार बा
कवनो गीत होखे, ताल होखे लय होखे
सबके साथे तहरे सितार बा।

भवानी हमके

तनिका दीतू दरशनियाँ-भवानी हमके,
हम ना जानी पूजा अर्चन,
ना हम जानी कवनो कीर्तन,
रूखा-सूखा खाली एगो जानी ले भजनियाँ ।। भवानी0 ।।
हम कपूत माँटी के चोला,
भिक्षा द खाली बा झोला,
हम याचक दर-दर के भइया, तूँ त औढरदनियाँ ।। भवानी0 ।।
पापी मनवाँ, पापी तनवाँ,
पापे मे डूबल नयेनवाँ,
आदि, अन्त सब बाटे डूबल, पापे में कहनियाँ ।। भवानी0 ।।
अबकी दया देख द मइया,
पार कर जिनगी के नइया,
पसरल जाता चारू ओरिया, भवसागर के पनियाँ ।। भवानी0 ।।

(संझवत से)

★ ★ ★

तोहरा करनी

तोहरा करनी बाटे जग मे निराला,
माँटी ह सोना का भाव मे बिकाला,
उगते में चमकेले जोतिया जुवाले,
कले कले जिनिगी फुनुगिया पर जाले,
तनिको बुझाला ना, कइसे बुढाला ।। तोहार0 ।।
कवने ते आ जाला, सपना के धनवा,
कवने ते चलि जाला मन के रतनवाँ,
कवने ते कीनते में जिनगी बिकाला ।। तोहार0 ।।
तहरे ह मरजी कि चमकेला घरवा,
तहरे ह मरजी कि चमके दुअरवा,
तहरे ह मरजी कि दियना बराला ।। तोहरा0 ।।
तहरे दीहलका ह तूँ ही बँचइह,
मालिक से सेवक के नाता निभइह,
तहरे नजरिया ह अंजन रचाला ।। तोहरा0 ।।

(आपन बोली, आपन गीत)

भोलेनाथ

तन्तर ना जानी ले,
मन्तर ना जानी ले,
जानी ना पूजा विधान,
भोलेनाथ रउरे पर लागल धेयान,
हर गंगा-हर गंगा काशी के वासी,
महादेव डमरूधर शंकर अविनाशी ।। भोलेनाथ0 ।।
अमृत लुटाईले,
जहरे पचाईले,
लिलरा पर चमकेला चान ।। भोलेनाथ0 ।।
चाही ना दुनिया के कवनो सवारी,
बैले से नेहिया लगावे त्रिपुरारी,
श्रृंगी बजाईले,
ताण्डव देखाईले,
उठि जाला परलय तूफान ।। भोलेनाथ0 ।।
चाहीना बेशकीमती शाला दो शाला,
तोशक ना तकिया ना खाली बघछाला,
गाँजा-भाँग पाईले,
पतई चबाईले,
चउरे पर राजी भगवान ।। भोलेनाथ0 ।।
जंगल के जोगी नटनागर अभिमानी,
आशुतोष अभयंकर जय औढरदानी,
गाल जे बजावेला,
चारू फल पावेला,
अंजन रचि बाँटी मुस्कान ।। भोलेनाथ0 ।।

***

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

जले लउकत बा बिटोर ली
दोसरा के कमाइल ह छोरी ली
लोग डूबि डूबि के पीयत बा
रउओ हाथ गोड़ जोरि ली

शबरी

भिनुसारे से डगर बहारे, शबरी बुढ़िया दाई,
कब अइहे रघुराई ।। रे माई0 ।।
कन्द-मूल फल चुनि-चुनि लावे,
मन ही मन प्रभु के गुन गावे,
लीपि-पोति के टूटही मड़इया, झारि बिछावे चटाई ।। रे माई0 ।।
ना बइठे ना, सूते पावे,
झाँकि-झाँकि दुअरा पर आवे,
रामे सुमिरे रामे गावे, रामे लेत जम्हाई ।। रे माई0 ।।
राम लखन जब दुअरा अइले,
शबरी तन-मन पुलकित भइले,
कहाँ उठाई, कहाँ बिठाई, अजब दशा होई जाई ।। रे माई0 ।।
प्रेम सहित फल जल प्रभु खइले,
शबरी जनम कृतारथ कइले,
सबसे बड़हन धरम प्रेम ह, जग के दीहले बताई ।। रे माई0 ।।

(सझवत-76 से)

मुक्तक

सालो भरि लटकले रहेला दउर मति,
लोग लहास बुतावत बा खउर मति,
गाँठि पर गाँठि गुर्ही गनात ढेर बाटे,
ऊपर से चिकना-चिकना के चउर मति।

आपन माटी-आपन थाती

***

ध लीहले बा अब जाई ना
ले बीती सकुचाई ना
बजर बेहाल ई मन बाटे
साफ डूबल उतिराइ ना

भोलेनाथ

भोले शिव शंकर त्रिपुरारी,
राउर महिमा बाटे भारी,
जे-जे शरन में आइल सबके बेड़ा पार हो गइल ।।
हमरे बेरिया जाने काहे, अन्हार हो गइल
अक्षत चन्दन बेल के पाती, भाँग धतूर दियाइल,
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे, गंगा जल बढ़िआइल,
डमरू डिम-डिम नाद सुनावे,
श्रृंगी अनहद धुन बरिसावे,
नाँचे भूत-प्रेत भैरवी, भवन गुलजार हो गइल ।।
काँवरि-कान्हें बम-बम बोली, जय हो औढ़रदानी,
सावन भरि मनभावन लागे, गंगा जी के पानी,
बाबा बैजनाथ के मेला,
लाखों-लाखों लोग चलेला,
लागे सावन रउरी नेहिया के रसधार हो गइल ।।
ना हम जानी पूजा अर्चन, कीर्तन मन्तर माला,
साँचे मन से हे बउरहऊ तहरे नॉव लियाला,
अँखिया चाहे राउर दर्शन,
तनिका रचि द भोले अंजन,
तहरे किरिपा पाके अँखियन के श्रृंगार हो गइल ।।

मुक्तक

चकोह में फँसा के ताक तो नइख,
साफ मुड़िया गइल बाड़, झाँकतो नइख,
लोग खातिर पोथा पर पोथा लिखा जाता,
हमार छोटी चुकी चिटकुना के टाँकतो नइख।

मति छूव

मति छूव नरमी कलइया, कन्हइया,
कॉचे उमिरिया हो,
कहित त माखन अँजुरिया मे दीती,
तोहरी बँसुरिया अँचरिया में लीती,
हाथ जोरि माँगी दुहइया - कन्हइया, कॉचे उमिरिया हो !
मान त बिहने कदमवाँ के छइयाँ,
अइह अकेले दबा देबि पइयाँ,
लहरी लहरि पुरूवइया - कन्हइया, कॉचे उमिरिया हो !
बाजी बँसुरिया सुनाइबि गीतिया,
तोहके सिखाइबि पीरितिया के रीतिया,
संगही में नइया खेवइया - कन्हइया, कॉचे उमिरिया हो !
रसिया तूँ मनवाँ के बँसिया बजइह,
रोजो-रोजो अँखिया में अंजन रचइह,
अइह चरावे जब गइया - कन्हइया, कॉचे उमिरिया हो !

(अँजुरी से)

कँहार

थाकि गइले केतने कँहार हो, डगरिया के पार नाहीं पवले,
लचकल बँहगी के दूनूँ सिंकहरवा,
कबो गइले ससुरा कबहूँ नइहरवा,
घूमि अइले सगरो जवार हो - डगरिया के पार नाहीं पवले,
बरिसल नयना त भींजली अँचरिया,
अँचरा का ओटे-ओटे भींजली ओहरिया,
डोलिया चलल ओह पार हो डगरिया के पार नाहीं पवले,
जनम-मरनवॉ के दुई तिउहरवा,
कबहूँ मसान, कबो घरवा दुवरवा,
कबो हँसी, कबो आँसू धार हो डगरिया के नाहीं पवले।

(ओहार से)

चिरई

झिमिर-झिमिर बरिसेला बदरा से बूनियाँ,
कि आ हो चिरई,
चल-चली ना बजरिया ।।
पाँचे पइसवा के बन्हबू गठरिया,
दसे गो दोकनिया से करिह बजरिया,
हटिया का बटिया में सगरो बा दुनियाँ ।।
बाप-महतरिया के गोदी हेराइल,
दुलहा के दुलहिन से गँठिया जोराइल,
डोली से उतरते में बाजे हरमुनियाँ कि आहो ...
करमे के खेती बा, धरमे के बारी,
जिनगी के नइया जे पारे उतारी,
संगे-संगे पार जाले गुनी-निर्गुनियाँ कि आहो ...
जबले पिंजरवा में खेला देखइबू,
अपना अंगनवाँ में मेला लगइबू,
पाप नाँची रूनझुन-झुन, रोई सारी पुनियाँ कि,
अन्हरा का आगे दूगो पइसा लुटइह,
का जानी मोल मति अंजन रचइह,
डोली चढ़ाई फेरू एक दिन नउनियाँ कि आहो ....

(नवचा-नेह से)

मुक्तक

जबन चाहल गइल तवन भइल ना,
जवन टीसि समाइल गइल ना,
केतना जतन से पोसाइल रहे,
उड़ि गइल केहू धइल ना।

गोदना

गोद गोदनहरी गोदना, आवत होई डोली राम,
साजि के सजनवाँ अइहें, साथी लोग के टोली राम,
सँझिया सिंगार साजे भोर भरमावेला,
रतिया पेन्हावे रसे-रसे रंग के चोली राम ।। 1 ।।
भउजी भिंजावे अँचरा माई भरे अँखिया,
छूटि जइहे नाता नइहर, छूटी हमजोली राम,
बिजुरी बजावे बाजा, बेधेले बदनियाँ,
बदरा बेदर्दी बोले बाउर-बाउर बोली राम ।। 2 ।।
कँहरा लगवले कान्हा घाटे पहुँचावेले,
दुअरा दियरिया चमके, अँगना मे होली राम,
पियवा के थाती पाती चमकेला कलइया,
अँखिया में अंजन, मगियाँ शोभे रंग रोली राम ।।

(नवचा-नेह से)

बगिया

कवने बगिया मे लुकइल, जा के मोरे सुगना !
लीची तेजल, अमरूद तेजल, तेजल तूँ अमराई,
केरवानी का पात-पात से गइल तूँ बउराई,
दाख छुहारा अमृत तजिके, ज़हर कंठ मे धइल ।। कवने0 ।।
छोड़ल राम रटनवाँ, अचके कामे में सटि गइल,
रूप देखि के सेमर फूलवा, तूँ काहे लटि गइल,
माया के मोहक बनवाँ में, अइसन डेरा कइल ।। कवने0 ।।
ना सोचल तूँ ना बूझल तूँ, तेजल बाप महतारी,
नरक नगरिया मे बसि गइल, तेजल सरग अटारी,
जेकरे से अँखि फोरवा भइल, ओकरे से अन्हरइल ।। कवने0 ।।
कबले उड़ब आसमान में, कबले पाँखि हिलइब,
कबले अँखियन के अंजन से, आपन रूप छिपइब,
दुनिया देखी एक दिन उड़ि के फेरू डाली पर अइल ।। कवने0 ।।

(अंजन के लोकप्रिय गीत से)

रउए रखले बानीं

केतना गुन गाई हम राउर, केतना कही कहानी,
जब-जब डूबे लगलि धरती, रउए रखले बानीं,
जब-जब दुशासन जनमेला, चीर हरन जब होला,
कॉपि उठेले सगरो धरती, गगन गिरावे शोला,
झुठ कपट छल धोखा के, बाजार गरम जब लागे,
सुनले बानी तबे हुमरि के, राउर पौरूष जागे,
धरम-धजा राउर फहराला, चमके अमर निशानी ॥ 1 ॥
हे धरनी धर अग-जग त्राता, बाउर आइल बेरा,
ऊहे चानी काटत बाटे, जेतना रहे अनेरा,
साधु सन्त धकियावल जाता, चोर उचक्का राजा,
देखते बानी बाजि रहल बा, जेतना जेतना बाजा,
पीयले बाटे महल अटारी, भूखे मूवे पलानी ॥ 2 ॥
जवन-जवन कुलि खेला होता, होता जवन डरामा,
मुल्ला की दाढ़ी से कम ना, महा चोर बा रामा,
ना गरीब के पूछवइया बा, चोर लुटेरा डाटे,
धरती की छाती के, टुकड़ा-टुकड़ा करि के बाँटे,
हँस-मोर के गारी देता कउवा-गिद्ध मसानी ॥ 3 ॥
डोलीं तनि दुअरा आ जाई, कबले चुप्पी साधबि,
कि कौनों दोसर चर होई, कि कुछ दोसर नाधबि
ढेर हो गइल, डूबि रहल बा भारत आजु बँचाई
हे परमेश्वर मालिक, जग के रूप बदलि के आई,
जब अंजन करिखा हो जाई, आँखि कहाँ कुछु मानी ॥ 4 ॥

मुक्तक

राउर नेह छोह भुलाई ना,
प्रेम के दीया कबो बुताई ना,
लोग के रीन दिया जाई,
राउर रीन कबो दियाई ना।

मिलबे करी

पाँव में सिर झुका के, रूकल बानी हम,
कहियो वरदान हमरा के मिलबे करी,
जिन्दगी मे खुशी के मिली रौशनी,
कहियो मुस्कान हमरा के मिलबे करी,
भोला टोला में अपना बोलइब हमें,
गंगा मइया के दरशन करइब हमें,
साँच मनवाँ के सरधा पूरी एक दिन,
कहियो सनमान हमरा के मिलबे करी,
तूँ त दुनिया के मालिक कहा ल इहाँ,
नेह का नीर में तूँ नहा ल इहाँ,
बा भरोसा इहे कि भूलइब ना तूँ,
कवनो पहचान हमरा के मिलबे करी,
आजु आन्ही बा, तूफान के जोर बा,
राति रोवे बहुत दूर जब भोर बा,
दूर होई अन्हरिया, बवन्डर हटी,
जान में जान हमरा के मिलबे करी,
आजु अँखियन में बाटे उदासी भरल,
मन में गंगा बा भोला के काशी भरल,
कहियो अंजन नयन में रचावे परी,
सुख के सामान हमरा के मिलबे करी।

(सनेश से)

♣♣♣

मुक्तक

आपन माटी-आपन थाती

बड़े भागि से, रउआ के पवले बानी,
ढेर दिन से रउए पर, आँखि अड़वले बानी,
राउर दर्शन भइल, सब कुछ मिलि गइल,
सभे इहे कहतबा, हम पवले बानी।

अरजी

जेकरी मरजी से होला जनम से करम,
ओकर अरजी लगावल जरूरी हवे,
जे अन्हरिया में दे दे सहारा कहीं,
ओके दियना देखावल जरूरी हवे,
हीत-दुश्मन समय पर चिन्हइबे करी,
मीत होई त असमय में अइबे करी,
जे दउरि के उठाले झुकल मॉथ के,
ओके चन्दन चढ़ावल जरूरी हवे ।।
घोर आफति में कंधा लगावेला जे,
धार से पार जिनगी लगावेला जे,
साँच दिल से मिले जे कबों साथ दे,
ओके मॉथे उठावल जरूरी हवे ।।
एने दोसर कहे, ओने दोसर कहे,
अपने मतलब के खातिर जे तीसर कहे,
ओह छलिया के बाटे भरोसा कवन,
याद हँसि के भुलावल जरूरी हवे ।।
आँखि होई त अंजन रचाई कबो,
जे भरल छोह से पास आई कबो,
जे उठा के नजर, कहियो पूछे खबर,
ओके मॉथा नवावल जरूरी हवे ।।

मुक्तक

आँखि ना रही त सिंगार का होई,
दिया ना जरी त दुआर का होई,
कीने-बेचे खातिर बाजार लागल बा,
पॉकिट खाली रही त बाजार का होई।

भँगिया

लुकझुक लुकझुक करे किरिनियाँ, बोले औढरदानी,
तनि बनइह भँगिया,
देर होत बा भवानी,
गाछी-गाछी चिरइन के जुटली जमतिया,
ओरी तर गोरी देखलावे सँझवतिया,
कल-कल कहि के चैन चुरावत बा झरना के पानी ।। तनि0 ।।
रसे रसे आवेले पवन परदेशिया,
धरती से नेहिया लगावे चान रसिया,
शैल-शिखर से लिपट किरिनियाँ माँगेले जवानी ।। तनि0 ।।
जटा - बीचे गंगा जी के लहरे लहरिया,
गरवा में नागदेव बनल बा फँसरिया,
बँसहा खड़ा पुकारे दुअरा माँगे सानी पानी ।। तनि0 ।।
हमरी अड़भंगी मति ढेर जन जाल बा,
साथी आ संघाती हमरे भूत वैताल बा,
तीन शूल नयना में नाँचे अंजन के हैरानी ।। तनि0 ।।

मुक्तक

मन करेला रोजो निहारत रहीं
राउर फोटो ऑखि में उतारत रहीं
रउआ हर सिंगार लेखाँ गहदल रहीं
हम भिखार लेखाँ बहारत रहीं

✡ ✡ ✡

ना पहुँचा बा ना उधार बा
नाता निबाहे खातिर व्यवहार बा
दोसर केहू बूझे चाहे ना बूझे
हमरा त खाली तहरे से प्यार बा

देवता

नाहीं अच्छरि के बा ज्ञान,
नइखे पूजा के विधान,
तबो, बेरि-बेरि विनती करी ले देवता,
रउए पइयाँ में गणेश जी, परी ले देवता,
ताल-ताल में एके आँचर पुरइन फूल फुलाइल,
जनम-जनम के नाता जोरल हाथ में हाथ धराइल,
मन्तर मन के पावन बन्धन,
जिनगी-जिनगी के गठबन्धन,
सुनले बानी रउए बिघिनि सब हरीले देवता ।। रउए0 ।।
धनि आँचर माई के ममता बाप के दिया बराइल,
अँगना भइल अंजोर दुअरवा चह-चह बाग बुझाइल,
एगो सूरज एगो चाँन,
रातो-दिन के मंगल गान,
रउए खलिहो घर के रतन से भरीले देवता ।। रउए0 ।।
रउए आशीर्वाद से जिनगी-जिनगी के सँउपाता,
नाता नेह निभाइवि रउए साखी अगिनि दियाता,
देखबि हाथ कहीं ना छूटे,
जिनगी साथ कहीं ना छूटे,
रउए अमृत बनि के बरखा जस झरीले देवता ।। रउए0 ।।
मन मे बाटे साँच परितिया तन बाटे करियाइल,
एतने बाटे आज-निहोरा अबले नेह दियाइल,
आगे लमहर बा डगरिया,
राखबि पंथी पर नजरिया,
रउए अंजन रचि के गह-गह मन करीले देवता ।। रउए0 ।।

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

भरोसा बाटे तूँ भुलइब ना,
हमके छोड़ि के कही जइब ना,
लोग खा के भुला जाला,
तूँ भुलाइयो के खइब ना।

यशोदा और कृष्ण

काहें करेल तूँ रोजो तकरार बबुआ,
तूँ त बेटा हउव गोदी के सिंगार बबुआ,
तहरे के देखि-देखि दुखवा भुलाईले,
सूतेल त जागि-जागि लोरी हम सुनाई ले,
तहके देखि-देखि करीं भिनुसार बबुआ !!
छोड़ि देब चोरिया के बानि जे लगावेल,
काहे रोजो गाँव घर से ओरहन मँगावेल,
आजिज़ कइले बाड़ सगरो जवार बबुआ !!
करेल जियान काहे सगरो बदनियाँ,
तूँ ही बाड़ जिनगी के हमरे निशनियाँ,
काहे करेल इजतिया के उघार बबुआ !!
ढेर जो अखरखन करब लाठी चलवइब,
गाँव से जवार सजी दुश्मन बनइब,
परी तहरो पर कहियो कसि के मार बबुआ !!
अबहूँ से चल चलि के माखन मिसिरी खा ल,
ढंग आ ढुआब सीख, अंजन रचा ल,
केतना नीमन बाड़ कान्हा तूँ हमार बबुआ !!

(नवचा-नेह से)

मुक्तक

रास्ता का जानत बा कि साधू हवे कि चोर हवे
आन्हर का देखी कि सोनहुली साँझि सुहावन भोर हवे
अँजन रचवले पर लोग चीन्हले बा कि
आँखि ना हवे कटारी के कोर हवे

✲✲✲

मिलते नइखे त सधुआइल बाड़े
खाली भरमावे खातिर रँगाइल बाड़े
चीन्हे वाला चीन्हते बाटे कि
ऊहे हउवनि भेस बदलि के आइल बाड़े

सियाराम

खाली बीतल जाता सजी जिन्दगानियाँ,
भजनियाँ सियाराम के करी,
वाल्मीकि जी डाकू रहनी उलिटा नाम सुनवनीं,
रामायन के जोति देश के घर-घर में पहुँचवनीं,
दिन-दिन फइलत गइल राम के अइसन अमर कहनियाँ ।। भजनियाँ ।।
भील जाति के नारी शबरी, भक्ति भाव मे पागल,
बनफल जल से राम जिमावे जोति राम के पागल,
सुधि बिसरल कटि गइल देह के जनम-मरन हैरनियाँ ।। भजनियाँ ।।
तुलसी बाबा जब नारी के रूप देखि ललचइले,
बान बात के अइसन लागल रामे में रमि गइले,
नारी के फटकार जगवलस अइसन तेज किरिनियाँ ।। भजनियाँ ।।
गणिका गीध अजामिल जे जे राम नाम जब गावल,
भव बन्धन के काटि मोक्ष के अमर डगरिया पावल,
माँटी में मिलि जाई एक दिन अंजन रचल पपनियाँ ।। भजनियाँ ।।

(ओहार से)

मुक्तक

हमरा उमेदि बा जे हमके भुलइब ना,
हमके छोड़ि के कहीं जइबना,
रूप आ रतन तहरा ढेर-ढेर मिली,
हमरा मन लेखा साच मन कहीं पइबना।

जब अँखिया से अँखिया लड़े लागी,
देख निहार का करेजा में गड़े लागी,
सँजोग से आँखि में आँखि गड़ि गइल,
ऊपर से ढेर-ढेर मूड़ी पर पड़े लागी।

शक्ति-वन्दना

राउर महिमा अपरम्पार,
सगरो जानेला संसार।
हम त आइल बानी रउरी शरनियाँ में,
केइसन लीला होता माई रउरी दुनियाँ में।
ब्रह्मा विष्णु शंकरदानी अउरी देवता नगरी,
जेतने-जेतने देव देउ कुरी बाटे कगरी-कगरी।
सबके सब बा चुप्पी सधले,
अइसन नाध काल बा नधले।
आगी लागल बाटे महल से पलनियाँ में,
रउरे खप्पर उठीत सगरो दागी आगि धोवाई,
रउए चाहबि त धरती पर धरम धजा फहराई।
जबले होई ना हुंकार,
बढ़ते जाई अत्याचार।
साधू बाबा महिमा बॉचेले कहनियाँ में,
ना गुन बाटे ना ढँग बाटे ना बा पूजा अर्चन,
खलिहा बानी, खलिहे चाहीं हमरा राउर दर्शन।
तन बा अधम कुचाली लोभी,
मन बा कुटिल कुकर्मी भोगी।
तनिका अंजन रचिद पूतवा का पपनियाँ में।।

मुक्तक

आपन माटी आपन थाती

बचपन भूमिका हवे बुढ़ापा अध्याय ह,
बचपन बछरू हवे बुढ़ापा गाय ह,
एगो चहकत फुदुकत में बीति जाला,
एगो दर्द हवे टीस हवे हाय ह।

❖❖❖

सरस्वती-वन्दना

मइया भारती, कवने फूलवा देई 'उपहार',
दरद अभाव के सुभाव सकुचाला,
जिनगी जहान एगो रेत खाँ बुझाला,
हाली-हाली धाव कि अबेर होत बाटे देख,
धीरे-धीरे आवेला अन्हार।।
मनवाँ में साध के असाध रोग बाटे,
दरशन पावे के कहीं ना जोग बाटे,
तबो हाथ जोरी माँथा टेकीले जगदम्बा देख,
करबू जिनिगिया किनार।।
भीरि बा अपार फल फूल के चढ़ावा,
देहें-देहें बाटे इहाँ अलगे बरावा,
खाली हाथे पाँव ना छुवात बाटे माई मोरी,
मनवाँ में सरधा अपार।।
एके गो भरोसा बाटे एके गो बा आशा,
करेलू निराशना, दिलावेलू दिलासा,
नजर उठा के माई अंजन रचा द तनिका,
हँसे नाही गाँव से जवार।।

(सनेश से)

मुक्तक

सपनवाँ अँखियन के कीनी लीह,
दरदिया जिनगी के छीनी लीह,
जब आँसू के मोती छिटाए लागे,
त हाथ बढ़ा-बढ़ा के बीनि लीह।

दुर्गा-वन्दना

करेला मन अइतीं, तहरी दुअरिया।
हे माता जगदम्बा, तरसे नजरिया।।
नाहीं बा जप-तप बानी ना गुनियाँ।
धावति बा सपना में अपना के दुनियाँ।।
झोहले बा चउतरफा, अइसन अन्हरिया ।। करेला० ।।
कँबरू कमेक्षा में आसन जमवनी।
काली कलकत्ता में मनवाँ रमवनी।।
रजरप्पा देवड़ी में बाड़ू महतरिया ।। करेला० ।।
मइयर विन्ध्याचल, आ थावे के ठइयाँ,
शेरा वाली माता दी, चमकेला नइयाँ।
अंजन रचइतू तनि, तरसे नजरिया ।। करेला० ।।

मुक्तक

ढेर दिन से रोवत आइल बानी,
लोरि के बिया अन्हारे में बोवत आइल बानी,
जेतना जेतना ईटा-ढेला-पहाड़ गिरल,
सगरो के सहेजि के चुपे-चुपे टोवत आइल बानी।

हमरा भरोसा बा, लवटाइबिना,
भुलाइयो के भुलवाइबि ना,
का बड़ले बा जवना के गुमान करी,
हमरा अइसन याचक पाइबिना।

का कहीं, रउआ सब जानीले,
जे माने ला ओके खूब मानीले,
का जाने कबो-कबो जाँचे खातिर,
छनभरि खातिर खूब गनीले।

दिन-नियराइल

खेयाल कर मइया, दिन नियराइल !
दिन नियराइल बा, दिन नियराइल !!
बोलत बा, ना बोली, पंछी के जतिया,
अबले पढ़ाइल ना मालिक के पतिया,
सुतला में, जगला में, कुछ ना बुझाइल !! 1 !!
नापल बा, जोखल ना, दियना के बाती,
अँगना-दुआर बा अँजोर दिन राती,
धीरे-धीरे तेल जरे, बतिहर ओराइल !! 2 !!
केतना दिन रहहीं के बाटे विचार,
केहू ना लउकत बा पीछे निहार,
डूबि गइल नइया ना माँझी भेंटाइल !! 3 !!
आई तनि हँसि-बोलि के, काटल जा बेरा,
का जानी कब उजरी, पंछी के डेरा,
भोर भइल नैना में अंजन रचाइल !! 4 !!

मुक्तक

जेकरी अँखियन में प्यार हो जाला,
ओकर जिनगी उधार हो जाला,
अजब बा रीति एह दुनिया के,
जवना के तोपे चाहेला उघार हो जाला।

माई माई हवे बिसराई ना,
बछरू छोड़ि के गइया जाई ना,
बेटा तोके निराश ना होखे के,
तूँ भूला जइब, ऊ भुलाई ना।

बजरंग-वन्दना

कइसे करीं वन्दना तोहार, हो बजरंगी बाबा,
महिमा ना पावे केहू पार, हो बजरंगी बाबा !!

रोआँ-रोआँ राम तहरा,
राम ना बिसारे ल,
आठो पहर सीता-राम,
मन में उतारे ल।

साँचे मनवा सेव दरबार, हो बजरंगी बाबा !!

सुनी लें, जे नाँव तोहार,
जहवाँ सुनाला,
भूत-प्रेत दानव, चाई,
सभे भागि जाला।

आव तनि हमरो दुआर, हो बजरंगी बाबा !!

सगरो जमाति जहाँ,
बाटे मुँह बवले,
रावण हवे राम के,
सरूप बा बनवले।

लेसि दीत सोना के बखार, हो बजरंगी बाबा !!

रउरा भरोसा बाटे,
माथे ले टेकइह,
उदसे ना अँखिया आके,
अंजन रचइह।

लउकत बाटे अगवाँ अन्हार, हो बजरंगी बाबा !!

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
आपन माटी-आपन थाती

भोले बाबा

भोले बाबा राउर मतिया गजब बाटे !!
भाँग धतूरा बेलपत्र के काँहे भोग लगाईले,
गर वा में फुफुकारे विषधर तनिको ना घबड़ाइलें,
जटा-बीच में गंगा मइया, लिलरा पर चन्दा बाटे,
भूत-प्रेत सब संगी-साथी, बड़ा गजब धन्धा बाटे।
धइनी बउरहवा के बाना, राउर रंग-ढंग मनमाना,
बाबा गोरे रंग सुरतिया गजब बाटे !! 1 !!
छन में राजा-रंक बनाई हो जाई औढरदानी,
बिना तपस्या के मिलि जाई बिना मनवले से मानी,
कवन आगि बा गंगा जल से अबले कबो बुताइल ना,
रोज चढ़े जल मंदिर-मंदिर काहें तबो घिराइल ना।
तीनूँ शूल रहेला साथे पियनी हालाहल बउरा के,
बाबा पत्थर राउर छतिया गजब बाटे !! 2 !!
मइया पार्वती रणचण्डी सिंह-सवारी कइली ह,
बेटा लो के मोर-मूस असवारी में दे अइली ह,
राउर बँसहा नन्दी तनिको कबहु ना मूड़ी झाँटे,
काहें दो राउर सपवाँ ना केहु के कबहू काटे।
बतिया साँच बतइब भोला, घोंट काहे भाँग के गोला,
कवनो दुखवा-विपतिया गजब बाटे !! 3 !!

मुक्तक

आपन हीत मीत सभे जानेला
आपन मीठ तीत सभे जानेला
जब जिनगी दाव पर चढि जाले
त आपन हारि जीत सभे जानेला

बजरंग बली

सब दुख हरि द, मंगल करि द – जय बजरंग बली,
महावीर हनुमान भरोसे, जिनगी नाव चली !! जय0 !!
ना घमण्ड बल के विवेक के,
अहंकार ना मन में,
राम रमइया आठ पहर प्रभु,
ध्यान रहे जीवन में,
मारूत नन्दन जय दुख भंजन कीर्तन गाँव-गली !! जय0 !!
ना राकस ना भूत-प्रेत के,
छाया नियरा आवे,
जय बजरंग बली कहि मनई,
आपन डेग उठावे,
लाल लँगोटी भाव के रोटी-सगरो विघिन टली !! जय0 !!
बाउर दिन बा बाउर रतिया,
बाउर हवा बहे,
जय बजरंगी संकट मोचन,
जय-जय नयन कहे,
नैन-सुखंजन रचि-रचि अंजन जगमग ज्योति जली !! जय0 !!

(मनसायन से)

माई

तहरे भरोसे जीयत बानी,
जय हे माई शारदा-भवानी,
अन्न धन हीन जेके करेले विधाता,
राखेलू शरन पालि-पोसि देलू माता,
तूँ ही लिख जग के कहानी !! जय हे0 !!
तूँ ही इतिहास में अतीत के देखावेलू,
कोठरी अन्हारी बीचे दिया तूँ जरावेलू,
पत्थर के बनाई देलू पानी !! जय हे0 !!
अन्हरा के आँखि देलू बउका के बोली,
रूप दे कुरूप के तूँ भरि देलू झोली,
लाते टारि देलू सोना चानी !! जय हे0 !!
अछरिन के मोती सुर ताल के झपोली,
रस के पियासल जीभि रसे-रसे डोली,
अंजन तूँ ही आँखि के निशानी !! जय हे0 !!

(मनसायन से)

दुर्गा-वन्दना

तहरे पूतवा दर्शन चाहेला तोहार !!
हे माई जगदम्बा दुर्गा, अर्जी बारम्बार !!
तूँ काली कलकत्ता वाली, कँवरू काम-कराली,
विन्ध्याचल मइयर में माई, दुर्गा शेरा वाली,
जय हे जय अष्ठभुजी वैष्णवी, करि देतू हुँकार !! 1 !!
महानाश के बाजा बाजे, धरम के नाँव बुताता,
साँच लुकाइल बा अँतरे में, झूठ के पाँव पूजाता,
तहरे पर धरती के आशा ताकेला संसार !! 2 !!
तहरे आँचर छाँह सुहावन, तूँ ही ममता- माया,
पालि-पोसि के रूप सँवार, आठ पहर दे छाया,
तहरे डर से थर-थर काँपे, पाप के अत्याचार !! 3 !!
जोति जगा द, ताप हटा द, कलिजुग जारि मेंटाव,
साँच नेह के अंजन मइया, नैना रोज रचाव,
तूँ माई जो होख सहाई, होई बेड़ा पार !! 4 !!

(मनसायन से)

शिव-वन्दना

जय हे भोला भण्डारी,
जय हे भोला भण्डारी,
जय त्रिशूलधर, जय डमरूधर, जय-जय त्रिपुरारी !! जय हे0 !!
औढरदानी आशुतोष शिव जय कैलाश निवासी,
जय महेश, जय अमरनाथ जय, जय हे काशीवासी,
जय गंगेश उमेश सदाशिव, अग-जग अधिकारी !! जय हे0 !!
पान-फूल, अक्षत-चन्दन, कुछु पात मिले श्रीफल के,
भाँग-धतूरा कालकूट नित सेवन गंगाजल के,
ना चाहीं धन रतन खजाना, नाहीं महल अटारी !! जय हे0 !!
भूत नाथ जय, नन्दीपति जय, जय गौरीपति शंकर,
जय त्रिनेत्र, जय महादेव, शिव जय हे, जय प्रलयंकर,
वन्दनीय अग- जग प्रतिपालक, जय हे अलख बिहारी !! जय हे0 !!

(मनसायन से)

मनाइबि

भले मान या न मान, हम मनाइबि तहके,
हँसि के पुरइनके फूलवा चढ़ाइबि तहके !!
तूँ त भोला-भण्डारी,
दानी हउव बड़ा भारी,
केहू जाला ना निराश,
जे-जे आवेला दुआरी,
हम त गलवा बजाई के, रिझाइबि तहके !!
तहरे गाइले भजन,
तूँ ना फेरेल नयन,
तहके देखि-देखि जियरा,
जुड़ाला तन-मन,
तूँ ना बोलब तबो हँसि के हम बोलाइबि तहके !!
तूँ त हउव औढरदानी,
एही असरा में बानी,
कहियो तनिको छोहइब,
लिखबि तहरे कहानी,
तहिया अँखियन का तीरे नहवाइबि तहके !!
लोग ढ़ेर बा पूजारी,
बा चढ़ावा ढेर भारी,
हम त खाली-खाली बानी,
खाली अंजन घर-बारी,
तहरी आँखि खातिर, भेंटवा चढ़ाइबि तहके !!

(अंजन के लोकप्रिय गीत से)

मुक्तक

गुमान मति कर, ओरा जाला,
बुताइलो आगि, खोरा जाला,
पैसा केकरा आमिख हवे,
साधुओं सन्त भोरा जाला।

शिव-शक्ति वन्दना

दर्शन द त्रिपुरारी, पत तूँ राख हे महतारी,
हई अकेले पूतवा, डूबे सागर मँझारी,
सोना-चानी, अन्न-धन चाहे नाहीं मनवाँ,
दरश देखा द भोले ताकेला नयनवाँ,
बीचे राह अन्हारी, गड़बड़ लागेला दुआरी !! हई0 !!
हाथ जोरि अरजी लगावे निर्धनियाँ,
महलों के सपना पुरावेले पपनियाँ,
दुर्गा खप्पर कर में धारी, काली कामक्ष्या अवतारी !! हई0 !!
पहिरे बाघम्बर श्रृंगी, डमरू जे बजावेला,
हर-हर गंगा करिके जहर जे पियावेला,
कहियो देब महल अटारी, सुख के देब सम्पति भारी !! हई0 !!
हिया में दिया तूँ बार, अँचरी ओढ़ाई द,
भोले नाथ अँखियन में अंजन रचाई द,
माई चढ़ि के सिंह सवारी, भोले नन्दी के सवारी !! हई0 !!

(अँजुरी से)

मुक्तक

आदिमी होके इ का करत बाड़,
का छोड़त बाड का धरत बाड़,
केहू बिटोरि के ले नइखे गइल,
तूँ झूठे के मरत बाड़ ।

विश्वास बा, जे आ जइब,
उजरल मन के मड़ई छवा जइब,
लोग त बाउरे-बाउर सुनावत बा,
तूँ कुछु नीमने सफना जइब।

शिव-वन्दना

बढ़ि के दानी-वरदानी, शिव से दुनिया में के ?
बाँटे अमरित के घट, पहने बघ-छाला पट,
पीये जहर विकट, एह दुनिया में के ?
पर्वत-घाटी, जंगल-जंगल, डमरू डिम-डिम बाजे,
भूत-प्रेत वैताल सँघाती, नन्दी पीठ विराजे,
गंगा जटा के निवासी, चन्दा लिलरा के वासी,
काशीवासी पाप नाशी, एह दुनिया में के ?
भाँग-धतूरा अछत चन्दन भोग लगावे मन से,
जे जे माँगे भोले भरि दे, कोठिला डेहरी धन से,
बाँटे महल अटारी, बाँटे सोना-चानी भारी,
देवे राज अधिकारी, एह दुनिया में के ?
राजा माँगे राज भिखारी, दुनियाँ माँगे दान,
गाल बजवले पर खुश होले, आशुतोष भगवान,
जोगी जोगवा रमावे, भैरव-भैरवी सुनावे,
सबके मनसा पुरावे, एह दुनियाँ में के ?
मातु भवानी सब जग पाले, गनपति मंगल दाता,
कार्तिक मोर सिंहासन सेवे, गन-गन भव के भाता,
तीसर नैना तनि उघारी, पापी पाप के संहारी,
अंजन नैना में सँवारी, एह दुनिया में के ?

(आपन बोली, आपन गीत से)

मुक्तक

भाई जी! अब केहू का केहू पर विश्वास नइखे,
केहू के भरोसा नइखे, केहू के आस नइखे,
ना लोग, ना रास्ता, ना बस्ती, ना गाँव,
केहू से केहू का बतिआवे के सवाँस नइखें।

दियना

जवने दियना के तेलवा ओराइल होई,
ओकर बतिहर जरवला से का फायदा !
जवने जिनगी के विधना जरा दीहले बा,
ओइपर मरहम चढ़वला से का फायदा !
दोस केहू के ना ह करम फेर ह,
अपने रूठेला दुनियाँ के अनहेर ह,
कवनो पनकत जिनिगिया जो होखे कहीं,
ओके हरदम चरवला से का फायदा !
ए जवानी के जिनगी बोलावेले जब,
कवनो अँखियन के आपन बनावेले तब,
अपने सपना के तसवीर खींचे सभे,
केहू के खींचल मेटवला से का फायदा !
एक से एक बड़हन सुखद छाँव बा,
एक से एक बड़हन बड़ल पाँव बा,
बाकी असमय में कामे ना आवे केहू,
फेरू गिनती गनवला से का फायदा !
आदमी हो के साथी जे बा घात के,
फेरू पॉलिस चढ़ावला जे बात के,
ओइसन अँखिया ना अंजन रचावे कबो,
छल के संघति निभवला से का फायदा !!

(नवचा-नेह से)

मुक्तक

मछरी का बाजार में, दही ना बिकाइ,
चोरन के गाँवं, डाकून के चौराह के जाई,
हमरा घर में ताड़ी के ठिलिया बा,
खोजबी त तुलसीदल ना भेंटाई।

फुलइबे करी

जेकरा तन में जवानी के छम आई हो,
ओकरा मन में सपनवाँ फुलइबे करी !
जेकरी अँखिया में होई शराबी नशा,
पाँव एने से ओने बढ़इबे करी !
घाट पर घाटि पानी ना पीये केहू,
जिन्दगानी ज़हर के ना जीये केहू,
घटले-बढ़ले उमिरिया से का हो गइल,
रूप बाटे त दुनियाँ लुभइबे करी !
बाग में केतना केकर बिकाला सुमन,
केकरा नैना से केकर लजाला नयन,
जेकरा बढ़ला से मनवाँ धधाला कबो,
कहियो जिनगी के धनवाँ ओरइबे करी !
केतनो उमड़त लहरिया के लहरा रही,
केतनो घूंघट के अँखिया पर पहरा रही,
जहिया अंजन नजरिया पर जाके रुकी,
कवनो साजन ई परदा उठइबे करी !

(नवचा-नेह से)

***

मुक्तक

पढ़ि-लिखि के गँवार हो गइल,
माई-बाप बूझल जे होशियार हो गइल,
कबो-कबो कुपातर जनमि जालें,
दिया बराइल तबो अन्हार हो गइल।

बाड़े ना त खेल के करत बा,
मूड़ी कटौवल के करत बा, मेल के करत बा,
हम रउवा त भरम में, धर्म गवाँवत बानी जा,
लाखों-करोडों देखा के, अकेले में करत बा।

आपन माटी-आपन थाती

कनखी

मति मार कनखी, कटार नीयर लागे,
दूधारी नैना, तलवार नीयर लागे,
राइफल के नाल नीयर, कोर लागे भउवाँ,
शहर में बा शोर, बाता-बाती होले गउवाँ,
रातो-दिन जिनगी उधार नीयर लागे !! 1 !!
गगन बा धुँआइल, धरती फेरतीया माला,
तनि एक देखे खातिर, लोगवा बिलाला,
चारा ना बेचारा बा, लाचार नीयर लागे !! 2 !!
ताल में किलोल करे, दू-दू गो मछरिया,
पुतरी कबूतरी अथाह बा लहरिया,
फूल नीयर लागे, कबो खार नीयर लागे !! 3 !!
छाँह ना भेंटाला, चिरई उड़ेले अकाशे,
भूखिया सतावे आशा मूवेले पियासे,
अंजन रचावे दिलदार नीयर लागे !! 4 !!

(मनसायन से)

रतिया

कइसे के कटेले रतिया, जानत बाड़ सगरी बतिया,
से आवे नाहीं नींदिया, सेजरिया हमार !!
धीर ना धरेला मनवाँ, ऊक बीक करे तनवाँ,
से गते-गते घटेले, उमिरिया हमार !!
काटत बाड़ ओइजा चानी, एइजा हम तरासल बानीं,
से रउवे बिना रोवेले नजरिया हमार !!
लोगवा भइल बा पागल, नेतिया-धरमवाँ भागल,
से अंजन बिना तरसेले, पुतरिया हमार !!

अंग-अंग में

अंग-अंग में रंग लगाके, उतरेली किरिनियाँ,
गते हो गते ना,
चूमे धरती के चरनियाँ !
घुँघरू बजावे सरसो, नाँचेला फगुनवाँ,
तीसी रचि मीसी दाँते, करेली सगुनवाँ,
चना-मटर-रहरी के झुमका, झमकेला सिवनियाँ,
रसे हो रसे ना !! चूमे0 !!
तोरी-बरजोरी लोटे नेहिया लगावे,
गोहुवाँ के गहुआ, पवनवाँ धरावे,
किसिम-किसिम के पहिर चुनरिया, चमकेली जवनियाँ,
कले हो, कले ना !! चूमे0 !!
टोवेला फजीरे पवन, सगरो गतरिया,
मन सनकाह तोपे आँखि के पुतरिया,
धरती के सुख-दुख, पूछेला भोरे असमनियाँ,
भले हो, भले ना !! चूमे0 !!
अँगना में अँगना सम्हारे केहू पावे,
कवनो मन बढ़ू, बहरा फगुवा सुनावे,
नयन-नयन अंजन से रचिके, थिरके जिन्दगनियाँ,
गवें हो, गवें ना !! चूमे0 !!

(सन्तोश से)

मुक्तक

हमरा जुरते का बा जे खिआई,
अपनहूँ जीं, रउवो के जीआई,
बाप दादा तरकुलवो नइखें लगवलें,
जे अपनहूँ पीं, रउवो के पिआई।

आपन माटी-आपन थाती

बदरा

का कहीं सचहूँ, परान बाड़ बदरा,
जान बाड़ बदरा, पहचान बाड़ बदरा !
अबहीं ले चँवरा में चान ना फुलाइल,
चुनरी-सुनहरी-सरेह ना रँगाइल,
कजरी कियरिया के शान बाड़ बदरा !! 1 !!
तहरे पीरीति लागी, पपनी उदसली,
तहरे सनेह खातिर नेहिया पियसली,
आ जइब अमरित वरदान बाड़ बदरा !! 2 !!
अबही ले धरती ना पलना झुलवली,
धनवाँ-सुगनवाँ ना गोद में खेलवली,
चउमासा काट मेहमान बाड़ बदरा !! 3 !!
चहब त भरि जाई, कोठिला बखारी,
साँझि गाई लोरी, भोरे चमकी अटारी,
अँखियन में अंजन, निशान बाड़ बदरा !! 4 !!

(मनसायन से)

मुक्तक

रातिं भरि बरिसल बा, अबही घेरले बा,
साल भरि का बाद, नजर फेरले बा,
ताकत-ताकत आँखि पथरा गइल,
पहिले मुनले रहे, अब गुँड़ेरले बा।

आपन माटी आपन थाती

नोंच लीं, खसोटि लीं,
काटि लीं, बकोटि लीं,
तीत लागे त, उगिलि दीं,
मीठ लागे त, घोंटि लीं।

का पता

का पता जाई कहाँ ले, आदमी अनजान में,
जबकि अन्तर हो रहल, इन्सान से इन्सान में !
पाप के पहिया चलत बा, पुण्य भी बदनाम बा,
साँच दिल से प्रेम अब, नइखे कहीं भगवान में !
हटते जाई हर कड़ी, मतलब बड़ा बलवान बा,
झूठ के चलती रही, खतरा रही ईमान में !
देखि ल पीछे पलटिके, सामने इतिहास बा,
साँच पर खतरा रहलबा, रोज हिन्दुस्तान में !
हे चराचर, हे विधायक, साँस-संसद के प्रभो,
का करी अंजन उदासी, आँख का वीरान में !!

(अँजुरी से)

ग़ज़ल

सनकी मन, तन के तन खा गइल,
खा गइल जेतना धन आ गइल !

एक छन, एक दिन, साल पर साल के,
भेद पावल ना केहू ए बैताल के,
खा गइल सगरो धरती गगन खा गइल !! 1 !!

बाटे बहुरूपिया, नाटकी-चाटकी,
नाँव से सन्त मन से ई बा पातकी,
सगरो सईतल सहेजल, जतन पा गइल !! 2 !!

कुछु बिटोरत में जोरत में, दिन कटि गइल,
कुछुए दिन के ए जिनगी के दिन घटि गइल,
रचि के अंजन नयन के नयन खा गइल !! 3 !!

कजरी

रूनझुन बाजेला रे पायलिया, राधा बावरि नाँचेना,
रिमझिम-रिमझिम बदरा बरसे,
कुंजन सरसे, मधुवन सरसे,
मोरवा नाँचे ना !!
बैरिन बाजेले रे बाँसुरिया, राधा बावरि नाँचे ना,
डोले पल-पल छाँह कदम के,
माँथे पर चन्दा घन चमके,
सावन नाँचे ना !!
सरसे मोहन मंत्र हृदय में, राधा बावरि नाँचे ना,
मन के मीत बने बनवारी,
तन के भेंट रखें गिरधारी,
मनवाँ नाँचे ना !!
अंजन नयन-नयन रचि ताके,
तनवाँ-मनवाँ नाँचे ना !!

(अंजन के लोकप्रिय गीत से)

कजरी

कइसे झूला झुलबू सावन में गुजरिया,
कजरिया कइसे गइबू गोरिया !!
बड़की बारी सजी कटाइल, लागल ना अमराई,
बिरवा नाया रोपाइल नइखे, बॉचल उहो कटाई,
कौआ काँव-काँव ना कोइलि ना फुलवरिया !! कजरिया0 !!
एक पेड़ जे कबो लगावे, ले परलोक बनाई,
बाग बगइचा रोपि के बाबा, चारूफल पा जाई,
केहू का सूझत नइखे, पुरूखा के डगरिया !! कजरिया0 !!
केतनो सावन अमृत बरिसी, मेघ मल्हार सुनाई,
बिना बाग के झूला कइसे, डाढ़ी कवन बन्हाई,
कइसे मस्ती आई बगिया बिन गतरिया !! कजरिया0 !!
धरती खाली बाग लगाव, फल से झोरी भरि ल,
साले साल उगा के साली, चारू ओरी भरि ल,
अंजन रचबू कइसे नैना का कगरिया !! कजरिया0 !!

(पनाका से)

बरिसि गइले

बरिसि गइले बदरा, मोरी अँगनइया !
नीमियाँ की पुलुई से जुगनू सवाचे,
चुपे-चुपे पीरितम के पाती के बाँचे,
पनकि गइले असरा, मोरे अँगनइया !! 1 !!
गुड़ुही में सिकुरल बा नेहिया के पानी,
लिखि-लिखि के सँइतेला जुग के कहानी,
सरसि गइले बदरा, मोरे अँगनइया !! 2 !!
रतिया अन्हरिया के करिया पुतरिया,
तोपि गइल गाँव-नगर, घर बन डगरिया,
पसरि गइले अँचरा, मोरे अँगनइया !! 3 !!
सालेला साले से मनके सुगनवाँ,
छनही में बहरा त छन में अँगनवा,
तरसि गइले कजरा, मोरे अँगनइया !! 4 !!

(पनका से)

लहरे पुरूवइया

गमकेला अँगना दुआर हो, लहरे पुरूवइया,
कावेरी गंगा-जमुनवाँ के पानी !
बीचे में घरवा-दुआर हो, लहरे पुरूवइया,
चम्पा-चमेली, जूही-अलबेली !
बेला-कमल, हर सिंगार हो, लहरे पुरूवइया,
अमवाँ, महुइया, निबुइया के बगिया !
केला, नारंगी, अनार हो, लहरे पुरूवइया,
फूले कमल, मद मातल कुमुदिनी !
भँवरा करे गुलजार हो, लहरे पुरूवइया,
नागराज उत्तर से मल्हार गावें !
सागर बजावे सितार हो, लहरे पुरूवइया !!

भोजपुरी गज़ल

धीरे से भुनभुना के केहू, मन भोरा गइल बा,
पल भर पलक उठल कि, सब धन छोरा गइल बा,
अपना नीयर बुझाइल,
सपना जे सुगबुगाइल,
निबही कि नाहीं निबहीं, नाता जोरा गइल बा !!
चिरई नीयर जे चुलबुल,
बतिया गइल जे बुलबुल,
अचके में तपन तन के, सगरो ओरा गइल बा !!
तकले से ताल लहरल,
पुरइन के पान पसरल,
लागे कि समुन्दर में मिसिरी घोरा गइल बा !!
आव सरकि के नियरा,
जगमग बना द जियरा,
अंजन रचा के केहू, सपना चोरा गइल बा !!

मुक्तक

आपने कहि कहि के रेति दीहनी,
ठीक से पढ़नीं ना, समेटि दीहनीं,
केतना नाया-नोंचर चादर रहे,
धोववनी ना, ओहींगा चपेति दीहनी।

नीछि-नीछि के बिटोरि लीं,
बीनि-बीनि के सहोरि लीं,
बहती गंगा में सभे नहाला,
रउवो हाथ-गोड़ बोरि लीं।

किरिनि के पथार

पसरेला किरिनि के पथार, हमरे घर आँगन,
हो जाला जबहीं भिनुसार, हमरे घर आँगन!
खनकेला अँगना के कँगना के जोतिया,
चमकेला दुअरा पर मनवाँ के मोतिया,
चहकेला सपना सुकुमार, हमरे घर आँगन!
कले-कले कनखी, कटारी हो जाले,
नींदिया का पलना में, बिंदिया जुबाले,
पाकल मन बाँटे दुलार, हमरे घर आँगन!
धरती के अँचरा, अकशवा के चादर,
ममता के मधुरे सनेहिया के बादर,
बाँटेला अमरित के धार, हमरे घर आँगन!
सोने के दिनवा बा, चानी के रतिया,
अनथाह घर-घर में पनके पीरितिया,
अंजन रचावे दिलदार, हमरे घर आँगन!

(आपन बोली, आपन गीत से)

मुक्तक

जब रहहीं के नइखे त, अगोरि के का होई,
जब छोराइये जाय के बा, त अगोरि के का होई,
गंगा के दर्शन होखहीं के नइखे,
त कर्म नाशा में गोड़ बोरि के का होई।

***

आपन माटी-आपन थाती

अनेरे अझुराइल बाड़े मिली ना,
ऊहो बजर बेहाया ह एको इंच हिली ना,
इनका पर भूत बा,उनका पर जिन्न बा,
जवन ध लिहले बा,ढिली ना।

***

बटोही भैया

सुनब बटोही भइया, परत बानी तहरी पइयाँ,
घसिया उठा द सिरवा मोर हो,
पियासल बटिया जोहेला बछरूआ !!
सँझिया भइल बा गोरी, दूर बा डगरिया,
पहिला पहरवा में, रतिया अन्हरिया,
सिर पर गठरिया बाटे, पाँतर डगरिया बाटे,
तनिको उठत नइखे, गोड़ हो,
गुजरिया-हमरा नाहीं बा समइया !!
सखिया सहेली सब, सुनली ना बतिया,
घसिया में-लेई गइली, बाबू के जजतिया,
बोझवा भइल बा भारी, आगे बा भुतहिया बारी,
साँझे से रहेले, जहाँ चोर हो,
बटोही-बटिया जोहेला बछरूआ !!
खँचिया उठावे आइबि, तनिको जो गोरी,
होई बदनामी, लोग कही बरजोरी,
सोचि के विचारि लीह, आगहूँ निहारि लीह,
चढ़ल उमिरि बाटे तोर हो,
गुजरिया हमरा नाहीं बा समइया !!
एने जो बँचाइबि, ओने सासु गरियइहें,
आवते बलमुआ से लहरा लगइहें,
केहू ना सफाई सुनी, रूई जस बात तुनी,
जियरा कचोटे बड़ा मोर हो बटोही !!

(पनका से)

मुक्तक

हमरा हरे लायक रहित तहरि लीती,
कुछु रो लीती,कुछ कहँरि लीती,
राउर लोर जवन ओस लेखाँ फुलाइल बा,
घाम लेखाँ,बेपूछले चरि लीतीं ।

☆☆☆

गँवार

बीतल जाला कइसे, सोचे ना गँवार रे,
बान्हि ल गठरिया राही, लागल बा बजार रे !!
जेइसन गाहक ओइसन माल, लादे बेवपरिया,
ट्रक, टाली, ठेला, पैदल चलेले डगरिया,
केहू कीने नगदी, केहू का चलेला उधार रे !!
कीनते-बेसाहत उमिरि कइसे दो ओराइल,
थाती जे दियाइल रहे, बीचे में छोराइल,
जाए बेरिया कइसे जइब, नँगटे उघार हो !!
काहे के बिटोरल, काहें भरेल तिजोरी,
जानत रहल पाप हवे, चोरी-सीना जोरी,
कइल नाहीं करे बेरिया, तनिको विचार हो !!
हियरा में दियना, जराव हरि नाम के,
मति बिसराव कबो, नाम प्रभुनाम के,
अंजन रचाव, भक्ति-भाव के सिंगार रे !!

(मनसायन से)

मुक्तक

केकरा से कहल जा, सबे के सब चोर बा,
केहू तनि साँवर बा, केहू तनि गोर बा,
जवना खातिर भेजल गइल, भइल ना,
ऊपर से शरीफ बा, भीतर सें हरामखोर बा।

❊ ❊ ❊

आपन माटी-आपन थाती

तूँ मीठ हउव कि तीत हउव,
हारि हउव कि जीता हउव,
हमरा ऐसे कवनो मतलब नइखे,
एतने जानत बानी, हमार होत हउव।

❊ ❊ ❊

काटे परेला

जेइसन बोवल जाला, जग में ओइसन काटे परेला,
जिनगी जेतना दिन बा, सुख-दुख जग के बाँटे परेला !!
नीमन बोइबि, नीमन पाइबि, बाउर बोइबि बाउर,
रउआ ना होखबि केहू के, ना केहू होई राउर,
जेतने लागी तम्बू डेरा,
चमकी जेतने रैन बसेरा,
एगो हवा उठी जब, पाया सब उपाटे परेला !!
पुन्नि-पाप दुनूँ संग भइया, दिन आवेला जाला,
एगो चमके देवता अइसन, एगो ढ़ेर बसाला,
गठरी बान्हत में दिन बीतल,
ना केहू हारल, ना केहू जीतल,
जेतना खाई खोनल जाए, बेरिया पाटे परेला !!
धरती चुप बा, सागर चुप बा, चुप बा पर्वत राजा,
तूँ चलि जइब, सब चलि जाई, झूठे बाजल बाजा,
आव अउरी नियरा आव,
साथी हाथ में हाथ मिलाव,
चोरवा भीतरे डेरा दीहले बा, तनि डाँटे परेला !!
डाड़-मेड़ के नक्शा, आ खतियान दखल-बेदखली,
दुनिया छोड़ी, घर से बेघर लाज ई धरती रख ली,
इनिके आँचर के मति बाँटी,
इनिके हाथ गोड़ मति काँटी,
अंजन नेह नयन का कगरी, तनिका साटे परेला !!

(मनसायन से)

मुक्तक

आपन माटी-आपन थाती

ए बाबू बूड़ि के मति पीय, अटकिजाई,
सभे तहरे बा, तबो खटकि जाई,
सरपावटे बा तले दउरि ल,
बाद में चललो ना जाई, जब लटकि जाई।

❄ ❄ ❄

भूल-चूक

भूल चूक देहिया से केतने भइल बा,
तोहार मरजी, जिनगी नाहक गइल बा !!
अँखिया के पुतरी कबुतरी नँचावे,
दुनियाँ बेचारी हरमुनियाँ बजावे,
नान्हें से गठरी पर गठरी धइलबा !! 1 !!
देखते में लागे कि जोन्ही फुलाइल,
खिरकी का कोने चनरमा लुकाइल,
ना जाने टोना ई केकर कइल बा !! 2 !!
जोहते में जिनगी भरि जियरा जरवनी,
मनवाँ के हरहा से पनका चरवनी,
हारि-पाछि तहरे पर मनवाँ गइल बा !! 3 !!
एक हक छन कलपे, जस दिनवाँ गनाई,
अंजन रचइतीं, तनि करितीं भलाई,
टक-टक निहारे मन सनकी भइल बा !!

(मनसायन से)

श्याम-बदरा

बरिसे पर अइल तनि मनगर बुझइल,
कि श्याम बदरा, ढ़ेर दिन पर दयइल !!
टीपि-टीपि बूनिया के मारे ल रोड़ी,
तहके निहारति बा बरधन के जोड़ी,
जियरा अघाइल बा, तूहूँ अघइल !! कि० !!
ठहर तनि बिहने ले जइह तिजहरिया,
धनि-धनि मनावति बा धान के कियरिया,
दोसरा से सँपरी का तूँ जवन कइल !! कि० !!
तहरे पर पपनी के पनकी पीरितिया,
तहरे पर पुतरी में उतरी सुरतिया,
अंजन रचवल तूँ बड़ भल कइल !! कि० !!
पनियाइल मनवाँ पनकि गइल माँटी,
हरियाइल हियरा के कश्मीरी घाटी,
कवने कसुरवा निठुर बनि गइल !! कि० !!

(मनसायन से)

पूर्वी

काहे लागी बोले पपिहा, साँझि के पहरवा राम,
उतरेला कले-कले अँगना अन्हरवा राम !!
एक त चूवेले बूनियाँ बेधेले गतरिया,
दोसरे चूवेले चूपे आँखि के पुतरिया,
तीसरे में घेरि अइले, दुअरा बदरवा राम !! 1 !!
झिंगुरा के झन-झन अगिया लगावे,
चमके बिजुरिया सुधि के सपना जगावे,
अहरा जगावे, पुरूवइया के लहरवा राम !! 2 !!
याद परे रहि-रहि बैरिन शहनइया,
अइले सजनवाँ जहिया हमरी अँगनइया,
डोलिया उठ्वले जहिया पागल कँहरवा राम !! 3 !!
मति बोलू पपिहारे दियना जराईले,
अँखियन में कले-कले अंजन रचाइले,
सूति जइबे पापी पी के आजूए जहरवा राम !! 4 !!

(अंजुरी से)

मुक्तक

पीयले बा, बउराइल बा,
काका का भरोसे अझुराइल बा,
एकरा से अझुरा के का पइब,
एकर पीठि कई बेरि दगाइल बा।

हेकर मुँह ना हवे, ईनार हवे,
बवले रहेला, दँत चियार हवे,
सपना के दिल्ली, बनावे ला,
बुरिबकई के कुतुबमीनार बा।

बकुला

बकुला काहे नाहीं माने ला, तोहार मनवाँ,
थकले बड़े-बड़े वीरो लोग के सरदार मनवाँ !!
खइल सिधरी-डेढुला ढेर, बुझल नाहीं देर सबेर,
सगरो जाड़-घाम सहि गइल, ठन्डा जल में खाड़ा भइल,
बिचिलल कहियो ना धेयनवाँ, जइसे तप में लागल मनवाँ,
कइले केतने ताल तलइया के उजार मनवाँ !! 1 !!
केतना साफ डरेस बनवल, सगरो मछरिन के भरमवल,
धइल हंस जाति के बाना, कमवाँ कइल तूँ मनमाना,
अइसन टोह लगवल भारी, गइली सगरो मछरी हारी,
काहे तेजल असली घरवा-दुआर मनवाँ !! 2 !!
जेतने चमकेल सधुआइन, ओतने मँहकेल बिसाइन,
खाली रूप बँचाई केतना, पानी भेद छिपाई केतना,
पीय डूबि-डूबि के पानी, कहियो बनि जइब कहानी,
जहिया चेल्हवा झलकी चोंचे में तोहार मनवाँ !! 3 !!
जवने गाछी पर तूँ गइल, सगरो डाढ़ि-पाति खा गइल,
अइसन चाल-ढाल अपनवल, सगरो चिरइन के भगवल,
अइसन बाटे तोहार पउरा, बइठत-बइठत लागे खउरा,
जइसे कमल फूल पर गिरे, बरफ के धार मनवाँ !! 4 !!
धीरे-धीरे डेग बढ़वल, सबके मनवाँ के भोरवल,
एक दिन केंकरा धरिहें चोंच, लीहें पाँखि-आँखि सब नोंच,
होई चिरूआ भरिजब पनियाँ, तहरो पूजि जिन्दगनियाँ,
तहियो तहरे के देई अइसन धिरिकार मनवाँ !! 5 !!
तहके दीहल जे शरनियाँ, दीहल ओकरे के हरनियाँ,
सगरो नेकी तूँ पी गइल, पी के अइसन पागल भइल,
गड़हा-गुड़ुही ले ना छोड़ल, अइसन पाप से नाता जोरल,
एक दिन उधियइब जब, झोंका दी बेयार मनवाँ !! 6 !!

(सँझवत से)

डोल

डोल छलकेला, कुइयाँ में डोल-डोल,
मन में हिलोर छलके !!
टिकुली का झिलमिल में चन्दा बिलइले,
कजरा के कोर, काम देखि के लजइले,
कोर लेला, करेजवा के छोर-छोर,
नयना मरोर छलके !!
पवठाँ पर पइयाँ के पायल पोल्हावे,
रूनुक-झुनुक बाजि-बाजि जियरा जुड़ावे,
हँसे चुनरी के पाढ़ झँक झोर-झोर,
अँगुरिन के पोर छलके !!
कँगना कलइया में कले-कले डोले,
अँखियन के गरदा कनखिए से धोले,
कँगन झलकेला बँहियन में गोर-गोर,
सगरी अँजोर छलके !!
अँगुरिन में डोल-डोल, डोल जब छलके,
पवनी में चढ़ती जवानी छवि झलके,
करे केकर नजरिया ना मोल-जोल,
अंजन चितचोर छलके !!

(सँझवत से)

मुक्तक

हई अइसन दउरत बा कि रेल हो गइल बा,
दिल्ली कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास मेल हो गइल बा,
पढ़े में एतना तेज निकलल कि,
तनी सा कड़ाई भइला पर फेल हो गइल बा।

⌘ ⌘ ⌘

पाती

पतई पर पाती लिखि-लिखि के, पेठवे धरती कनियाँ,
भेजइह बदरा, हमके मोती अइसन बुनियाँ !!
चढ़ते कुआर घाम झुमका गढ़इहें,
कातिकी अँजोरिया के चुनरी रंगइहे,
अगहन में गहना झमका के काटबि अगहनियाँ !! पेठइह0 !!
पूस माँगी घूस, एगो मोटकी रज़ाई,
माघे परी पाला, जब जिनगी जुआई,
फागुन रंग उड़ाई, हँसि-हँसि केलि रचाई दुनियाँ !! पेठइह0 !!
चइती पवनवाँ में सिहरी बदनवाँ,
मधु बइसखवा मे तरसी अँगनवाँ,
जेठवा की तलफत भुभुरी में छिटकी चुनचुनियाँ !! पेठइह0 !!
चढ़ते अषढ़वा में पालकी सजइह,
मधुरे सवनवाँ में गवना करइह,
भादो भदवारी अँकवारी, भरिह जिन्दगनियाँ !! पेठइह0 !!

(नवचा-नेह से)

मुक्तक

एतना बढ़िया साटल रहल ह, ओकाचि दीहल,
कोरे रहल ह टूका-टूका खाँचि दीहल,
हमार पढ़ाई-लिखाई त जेहे-सेहे बा,
तूँ कड़ाई से जाँचि दीहल।

❖ ❖ ❖

चलते रह, बइठि के का पइब,
अबर दूबर के बाँहि अइठि के का पइब,
बजार के पसारा ढ़ेर दूर ले बा,
तूँ झूठ-मूठ के पइठि के का पइब।

❖ ❖ ❖

भोर

भोर भइले, धाई पुरूब दीहले बा किरिनियाँ,
सुनरी सोनहुली के उतरे चरनियाँ !!
ओस में नहाइल, मोती चमके अँचरिया,
पाला लागे सिहरे सगरो जग के गतरिया !!
हौले-हौले छूवे पुरूवा प्यार से बदनियाँ !! भोर0 !!
लोगवा पियासल पानी-पानी बिन बुझाला,
जेतना चाहीं ओतने-ओतने जिनगी फिनाला !!
टाका-सेर मे उड़ते जाला साँझि के दोकनियाँ !! भोर0 !!
धावा-धाई लागल, बाटे पेट के फिकिरिया,
जान मारे पेट पापी, बढ़े ना उमिरिया !!
अंजन रचावे, बिहसे आँखि के पुतरिया !! भोर0 !!

मुक्तक

रोज-रोज लउकत बा, बिला जाता,
केहू ना केहू दरकच्चि देता, छिला जाता,
केतना खून, केतना घुटन, केतना आहि,
देखते-देखत करेजा हिला जाता।

रउआ धनि बानी, भेटा गइनी,
खोजते रहनी हँ, रउआ आ गइनी,
का कहीं, बुझाते नइखे जे का कहीं,
अनमोल दर्शन-धन पा गइनी।

मने नइखे करत जे हटल जा,
अँजुरी का हाथ नीयर कटल जा,
अब राउरे फैसला, फैसला,
जेकवनी जा, सटल जा, हटल जा।

नवका-साल

नवको के परनाम कहीले, आई रउआ आई,
बीति गइल से गइल पुरनका, नवका गले लगाई !
धरती के आँचर मे देखीं खून ढ़ेर बा लागल,
नइखे चीन्हत मन के मनई, लोग सजी बा पागल,
रस्ता से जे भटकल बाटे, कसि के हाँक लगाई !! 1 !!
नवका बा चटकार सलोना, हिक भरि धाई पाई,
पकले पर रस अमृत होला, ढ़ेला मति चलवाई,
सब केहू राउर भाई ह, बढ़ि के हाथ मिलाई !! 2 !!
सबके हक बा फरे-फुले के, अपना के तनि रोकीं,
सोना अइसन काया बाटे, आगी में मति झोंकीं,
बाँटि दी आपन खलिहा होके, भरमीं अलख जगाई !! 3 !!
हिन्दु-मुस्लिम एके घर के जनम-करम के लेखा,
एके माई-बाप मनु आदम का खींचल रेखा,
रावल पिंडी होली खेली, दिल्ली ईद मनाई !! 4 !!
चीन्ही अपने में बइठल बा, परम् पिता के छौना,
कहीं मदारी छिपि के खेले, हाथे हाथ खिलौना,
आँखि घुमाई, ओठ हिलाई, अंजन नेह रचाई !! 5 !!

मुक्तक

देबे के होला, त छप्पर फारि देले,
छछात लछिमी जी के उतारि देले,
ना लिखाइल होई त, टकटोरते रहि जाइबि,
आन्हर नइखन निहारि के देलें।

देखतो बानी त चिन्हात नइखे,
उहे हवे, अब बुझात नइखें,
का हो गइल बा आदमी का,
भुलाइयो के गलती पर पछतात नइखे।

चलते-चलते

चलते में दिन बीति गइल बा, साँझि सिरहाने आई गइल,
गठरी बान्ह देर कर मति, थाती सजी ओराइ गइल !!
मेला-ठेला, हाट के खेला,
सबके सब जा रहल अकेला,
कब से जाने ए धरती पर,
माया के ई खेल चलेला,
सभे बूझि के बइठल बाटे, सबके अकिलि हेराइ गइल !! 1 !!
देहिए माँटी, देहिए सोना,
तन्तर-मन्तर जादू टोना,
भरम भूत धइले बा जग के,
परल हहर हो कोना-कोना,
जे-जे लूटल, धइल कमाइल, जाते-जाते बसाइ गइल !! 2 !!
अब ना धाइबि,ढेर धववनी,
करनी के भरनी हम पवनी,
उजरत में देरी ना लागल,
जब-जब मन के मड़ई छवनी,
ना जाने के ढरल छोहाइल, घर में दिया बराइ गइल !! 3 !!
डूबत बानीं, पार लगा द,
तहरे बानीं, प्यार जगा द,
तूँ ही एगो साँच संघतिया,
अमृत के रसधार मँगा द,
अंजन अँखिया के अनुरागी, तहरे कृपा रचाइ गइल !! 4 !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

हाँव-हाँव कइलेबा, कबो काटि दी,
बनलो बात के उलाटि दी,
बँचि के रहिह, ए बनवारी,
आजु सटले बा, बिहने छाँटि दी।

सोना

सोना मँगनी बिकाइल बजरिया में,
लाज लागल ना तनिको नजरिया में !!
छीना-झपटी में बचपन जवानी गइल,
मोल करते में सगरो निशानी गइल,
माल असली छिनाइल डगरिया में !! 1 !!
केतनो रंग में रंगाइल, चिन्हाइल इहाँ,
जब कसौटी पर कसि के कसाइल इहाँ,
साफ दागी बुझाइल अँजुरिया में !! 2 !!
आजु बिहने में जिनगी ओराते गइल,
हो गइल जब चदरिया डगर में मइल,
चुपके चोरवा समाइल गतरिया में !! 3 !!
माँझी मिलि जाई सोझे दुआरे चल,
जेतना बाँचल बा लेके किनारे चल,
कबले अंजन रचइब पुतरिया में !! 4 !!

मुक्तक

जहिया आपने जिनगी भार हो जाई,
तहिया चीन्हले आदमी अन चिन्हार हो जाई,
समय परला पर के केकर होला,
अँजोर अछइत अन्हार हो जाई।

हमरा जाहिल जिनगी के जिया के का पइब,
भूखि मरि गइल बा, खिया के का पइब,
अँखिया त तहरा प्रेम में अइसहीं पागल बा,
ऊपर से नीमन बाउर पिया के का पइबा।

गीत

लड़खड़ा जाईले, हड़बड़ा जाईले,
जब बुझा जाला जादो नजर के परल !
केहू एने गिरल, केहू ओने गिरल !!
सगरो झगरा लड़ाई के जरि इहे बा,
सगरो तूफान-आन्ही लहरि इहे बा,
बान्हि ले ले ना, छोड़े बँवरि इहे बा,
बाटे जिनगी जवानी, उमिरि इहे बा,
हम सँपा जाई ले, हम गमा जाईले,
बाप रे बाप दिनही मे डाका परल !! केहू0 !!
राजा-परजा के जादो धरेला कबो,
वीर पर जाके सोझे परेला कबो,
जोगी सन्यासी तपसी के भरमावेला,
बिना आगी के अपने जरेला कबो,
जे-जे ताकल कबो, जे-जे झाँकल कबो,
ओकरे जिनगी में काँटा पर काँटा परल !! केहू0 !!
आँखि बाटे त संसार झँकबे करी,
आँखि बाटे त दिलदार तकबे करी,
आँखि बाटे त सगरो नियामत भरल,
आँखि बिछुड़ी त जियरा डहकबे करी,
शोर बाटे मचल जबसे अंजन रचल,
मोती अनमोल दू-दू नयन के जड़ल !! केहू0 !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

ई आदमी ना हवे, दोख हवे,
कले-कले सोखी, स्याही सोख हवे,
गदहा का माथँ पर, मउर बन्हाइल बा,
ना त साँच मानी, बन महोख हवें।

बिजुरी

बिजुरी में तड़प केतना बाटे, बेइमान बदरिया का जानी,
मनवाँ के कसक मनवे समझी, अनजान नजरिया का जानी,

बेचे वाला, बेसहे वाला,
कुछु भाव-अभाव समझि ले ले,
गठरी-गठरी के मोल अलग, सुनसान बजरिया का जानी !!

दर्पन वैरागी ना बदले,
कुछु रूप सिंगार बदलि जाला,
कवने विधि उतरल रूप रतन नादान उमिरिया का जानी !!

जब भोर किरन उपहार भरे,
धरती के अँगना बिहसेला,
सँझियो के होला मोल बहुत, जजमान अन्हरिया का जानी !!

जब जोर जवानी के आवे,
अँखियन में अंजन रचि जाला,
कब पाँव पिराइल राही के पाखान डगरिया का जानी !!

(अंजन के लोकप्रिय गीत से)

मुक्तक

जवन लउकि के ना, मिलेला तीत हो जाला,
जवना से करेजा पिघलि जाला, गीत हो जाला,
जेकरा से गनि-गनि के मानल जाला,
ऊहे आपन हीत हो जाला।

जे नियर रहेला, उ दूर हो जाला,
माँथे पर फूल पैर तरके धूर हो जाला,
जीये के-के ना चाहे ला दुनिया में,
बाकी केहू-केहू मरहूँ खातिर, मजबूर हो जाला।

बइठल-बइठल

बइठल-बइठल तहरे खातिर, केतने जनम गँवा दीहनी हम,
बाँस के कोपड अइसन मन के, कोइनि नीयर नवा दीहनी हम !!
उमिरि गइल, झुकि गइल कमरिया,
नयन नीर से भरल गगरिया,
चानी अइसन चमकत जिनगी,
जरते-जरते होखे करिया,
असरा के अनमोल जजतिया, पकले बिना दवा दीहनी हम !!
उड़ि-उड़ि भागे केतने संगवा,
मनके रंगले केतने रंगवा,
ना जनले हई चढ़ल उमिरिया,
ढ़ली ढ़ील होई सब अँगवा,
तहरे खातिर ए निर्मोही, गोरा बदन झँवा दीहनीं हम !!
मन हमार पुरइन के फूलवा,
रहल लगवले जल में झुलवा,
तूँ अइसन पाला परल जे,
दीहनी सगरो जिनगी भुलवा,
तहरी आँखि चिरइया पाछे, मन मिसिकार धवा दीहनीं हम !!
सब कुछु तजि के तहके पवनीं,
तहरे गीत जनम भरि गँवनी,
तहरे खातिर घास-पात के,
छोटहन एक मड़इया छवनी,
आगि लगवल जब तूँ अपने हाथे, खूब हवा दीहनीं हम !!

मुक्तक

जवन मिलबे ना करे, ऊ लउकले से का,
कवनो रोबे-दाब ना होखे, त फउकला से का,
डाढ़ि-पात सगरो फरले, फुलाइले होखे,
आ भेटइबे ना करे, त छउकला से का।

जरूर भइल होई

अँखियन के कोर भरल बाटे, कुछु बात जरूर भइल होई,
अँखियन के सपना के कँगना, अचके में दूर भइल होई,
कुछु सनकाहिनि जस झाँकेले, जिनगी के जरत झरोखा से,
अपने-अपने, अपने बनि के, केहू भागल होई धोखा से !
आइल होई अन्हरी रतिया, बहुते मजबूर भइल होई !! 1 !!
फागुन के रंग भरल चुनरी, हरियर सावन का अँचरा में,
लिखले होई अँखिया केतने सुख गीत सजा के कजरा में,
बतिया छतिया के झँकझोरे, अनजाने कसूर भइल होई !! 2 !!
मधुमास मधुर सौगात भरल, ले के आइल होई कहियो,
बगियन के फुनुगी खुशी-खुशी जब मोजराइल होई कहियो,
चढ़ि तीर कमान किरिनियन के बहुते मगरूर भइल होई !! 3 !!
कवनो सुख ना ठहरे जग में, दुःख साथ निभावे जिनगी के,
आँसू जनमे के साथी ह, मुस्कान जरावे जिनगी के,
अंजन जब बहुत उदासल बा, सपना कुछु चूर भइल होई !! 4 !!

(अंजन के लोकप्रिय गीत से)

मुक्तक

जजाति लागल बा निराश ना होखे के
उमेदि होखे त उदास न होखे के
बेआरि त नीमन बाउर बहवे करी
घबड़ा के बदहवास ना होखे के

❀ ❀ ❀

घेरले रहलसि बदरिया भइल घामना
काम एतना सतवलसि मिलल राम ना
उपरा भीजत बा भीतरा जरत जिन्दगी
कामना आइल मनकी एको कामना

❀ ❀ ❀

आपन माटी-आपन थाती

चन्दा-मामा

(30 जून, 1962 को आकाशवाणी, पटना से प्रसारित प्रथम भोजपुरी रचना)

चन्दा मामा आवेले, रतिया सजावेले,
धरती का आरी-आरी, फूलवा बिछावेले !!
चाहें मरघट चाहें होई पनघटवा,
सबही पर चाँदनी के उठेला घुँघटवा,
नदी के किनरिया बान्हि के पगरिया,
ठुमकि-ठुमकि चन्दा रहिया बतावेले !!
तलवा तलइया बीचे डुबकी लगावे,
झिलमिल पनियाँ में नइया चलावे,
तानि के चदरिया, देखि के बदरिया,
झाँकि-झाँकि कनखी से मटकी चलावेले !!
चढ़ते कुआर जब चमके गगनवाँ,
झलमल करे लागे घरवा अँगनवा,
खेत खरिहनियाँ, राति के जवनियाँ,
धरती सुहागिनी के, ओढ़नी ओढ़ावेले !!
मदमाता रसवा से चढ़ते फगुनवाँ,
उठे अमरइया से, मीठे-मीठे तनवाँ,
लहरे बेयरिया, गमके कियरिया,
गते-गते पलको में, नीदिया बोलावेले !!
डूबि-डूबि बदरा में, खोजे जब मोती,
चवरा मे जाइ के, पसारे आपन धोती
मूँने ना पुतरिया, लमहर डगरिया,
डुगुरि-डुगुरि चन्दा जिनगी बितावेले !!

(कजरौटा से)

बचा ले भइया

(अक्टूबर 62 में चीनी आक्रमण के बाद श्री संतराज सिंह के नायकत्व में बार-बार आकाशवाणी, पटना से प्रसारित)

गौतम ज्ञानी के नगरिया, बँचा ले भइया !!
आजु खून से रंगा रहल बा, भारत माँ के चादर,
उमड़-घुमड़ के गरज रहल बा स्वार्थवाद के बादर,
उमड़ल ज्ञान के गगरिया, बँचा ले भइया !!
जुग-जुग से बा सत्य-अहिंसा, जेकर आपन नारा,
ओकरे आँगन में बाजतबा भेरि अउर नगारा,
राणा-शिवा के पगरिया, बँचा ले भइया !!
घर के भीतर सोना-चानी, सिसक-सिसक के रोवे,
सीमा-सीता घुटुकि-घुटुकि के, साँझि सबेरे रोवे,
बाबा शंकर के डगरिया, बँचा ले भइया !!
कपिल वस्तु के आँगन डहके, भरि नयना में पानी,
नील गगन में चाँद बुद्ध के, आइल कहत कहानी,
भारत माता के अँचरिया, बँचा ले भइया !!
सोना अइसन रूप, जवानी चानी अइसन पा के,
इज्जत रखिह देश-धर्म के, शास्त्र-शस्त्र अपना के,
अपनी इज्जत के गठरिया, बँचा ले भइया !!

(कजरौटा से)

***

मुक्तक

चाहें ठण्डा होई, चाहें गरम होई,
चाहें काड़ा होई, चाहें नरम होई,
दोसरा का ऐसे मतलब कवन,
जे छूई, ऊ बेभरम होई ॥

रूप

रूप राजा ह, देहि के जवानी में,
उमिरि ढरते, मसान बनि जाला,
सोझ आँखिन से, तनिको ना डर बा,
तिरिछा होते, कमान बनि जाला।
सुख मे मनवाँ, महल सत महला,
दु:ख मे इहे, बथान बनि जाला,
जबे गदराला होला नेवानी,
पाकि जाला पुरान बनि जाला।

***

भूखि ह मीठ, छूटे ना जूठन,
बेजरूरत जियान बनि जाला,
सोना बरिसेला हँसला से हरदम,
कबो हँसले तूफान बनि जाला।

***

रउआ ताकबि त, के ना मरि जाई,
बाटे जादू शरीर, उखरि जाई,
अबही खोली मति जूड़ा, रहे दीं,
ना त नागिन के नाँव बिसरि जाई।
बिना काजर के काटे करेजा,
रचबि काजर त गाँव जरि जाई,
पाँव धीरे से राखीं उठाई,
ना त बगिया के फूल बिखरि जाई।
तनिका घुँघटा उठा के देखीं,
मिले चन्दा जमीन उतरि जाई,
बिना बाते के लोग बाटे पागल,
बात कइनीं जवार हहरि जाई।

(ओहार से)

***

मैना

ए मैना तूँ असरा छोड़, तोता अब ना अइहें,
चिन्ता के अगिनी तहरा के, लेसि-लेसि खा जइहें !
काहें आँखि लड़वलू, कइलू फुदुकि-फुदिकि के खेला,
पतइन का कोरा में सटिके ढ़ेर लगवलू मेला,
ना जनलू जब पतझर आई, पात-पात झर जइहें !
ढ़ेर बहाना कइलू जग से, कनखी से बतियवलू,
देश-काल-मौसम सगरी के ठुकरवलू, लतियवलू,
पछतइला में का बाटे, के बीतल दिन लवटइहें !
फगुनी हवा, चइत के पुरूवा, बरखा झरल फकारी,
जाड़े का साथे-साथे, रस लूटलू पाँखि पसारी,
भरल उमिरिया के सब साथी, ढ़लती के अपनइहें !
पिंजरा के जिनगी के बूझल, के ममता दरसावल,
बोली मीठ काल बनिगइली, के ना हाथ बढ़ावल,
कवने बाग गइल तोर सुगना, अब के खबर जनइहें !
आपन जिनगी अपने काट, ना दोसर दुख बाँटी,
ई दुनिया ह सुख के साथी, दुख में देहिया माँटी,
सुख में जे-जे चहकल साथे, असमय देखि, परइहें !
लागल पलभर पलक सुगनवा, अचके में आ गइले,
अइसन उमगल प्रान साथ में, दूनूँ के उड़ि गइले,
जुड़ल नयन तब प्रान जुड़ाइल, अंजन नयन जुड़इहें !!

मुक्तक

आदमी के देखि के, आदमी जर रहल बा,
आजु आदमिए से आदमी, डर रहल बा,
ना जाने काहें ई, बुझात नइखे,
जे आदमी का साथ, आदमी कर रहल बा।

आपन माटी आपन थाती

बीते ना

बीते ना बितवलो से रतिया, बलमु अइसन दीहल विपतिया,
दीहल विपतिया हमके, दीहल शसतिया !
खोलि के केंवाड़ी, आधा झाँकेले जवनियाँ,
पनिया के पाती पड़े पगली पपनियाँ,
रोजो-रोजो सइँतेले सुरतिया !! बलमु0 !!
दुअरा बुझाला काटे धावेले अन्हरिया,
काटि-काटि मरहम, चढ़ावेले अँजोरिया,
बारि के बराले दिया-बतिया !! बलमु0 !!
सपना में आके पिया, काहें भरमावेल,
बइठि के सेजरिया, काहें अँखिया चोरावेल,
कहियो जुड़ाले नाहीं छतिया !! बलमु0 !!
तहरी नजरिया के चाहेले नजरिया,
तहरी उमिरिया के चाहेले उमिरिया,
अंजन बिना अँखिया सवतिया !! बलमु0 !!

(नावचा-नेह से)

* * *

मुक्तक

सनेहिया साँच होई त, रउआ अइबे करबि,
हमार पूछबि आपन बतइबे करबि,
केहू कतहीं रहो, केहू कतहीं रहो,
भेंट भइला पर अँखिया मिलइबे करबि,

* * *

मुँह मति फेरीं, हमरो के ताके दीं,
दाम अनमोल बा, हमरो के डाँके दीं,
अयजू बा, गदेल बा, जुबाइल नइखे,
अगुताई मति, रसे-रसे जुबाए दीं, पाके दीं।

* * *

रूकि जा

(मेहमान से रूकने के लिए विनम्र आग्रह)

रूकि जा, रूकि जा, छन भरि रूकि जा, चलि जइह परदेशी,
चलिजइब त तहरे बतिया, खोरि-खोरि के लेसी !!
चला-चली के मेला लागल, जे आइल से जाई,
जीमन बाउर अपने मन के सउदा इहाँ किनाई,
घर में रहि के हो गइनी हम, अपने आप विदेशी !! रूकिजा० !!
का जाने केकरा से कहिया, मिलन कहाँ पर होई,
का जाने मुस्काई अँखिया, का जाने कब रोई,
घुटुके लागी प्राण कण्ठ में, चिन्ता जाल गरेसी !! रूकिजा० !!
माँगत में कुछु शर्म बुझाता, बे मँगले दुख दूना,
चलि जाइबि ई सोचि-सोचि के, मनवाँ सूना-सूना,
कभी साथ छोड़े ना चाहे सोच इहे बा बेसी !! रूकिजा० !!
का करब अनमोल नयनवाँ, मोल सभे ना जाने,
अंजन खातिर पलक-ठाँव द, जबले अँखिया माने,
चिथरा-चिथरा किस्मत बाटे, तूँ ही बताव के सी ? !! रूकिजा० !!

(सँझवत से)

◎◎◎

मुक्तक

मन करेला, रोज निहारत रहीं,
राउर फोटो, आँखि में उतारत रहीं,
रउवा हर-सिंगार लेखाँ, गहदल रहीं,
हम भिखार लेखाँ, बहारत रहीं।

◎◎◎

जब अउसत बा, त पानी होई,
देहि कसमसात बा, जवानी होई,
बिछिली हवे, अँगुरी गड़ा के चल,
हड़बडइला से ढ़ेर, परेशानी होई।

गज़ल (भोजपुरी)

का कहीं का सुनी, बात केतना गुनी,
देखि लीले घरी भर, अघाईले हम !
जबले बाटे नज़र, होई बहुते असर,
नेह राउर ह कि, गुनगुनाईले हम !
जे बा दीहले सुघर, एगो माँटी के तन,
जोरि दीहले बा दुनिया के सगरो रतन,
सगरो तहरे ह धन, तूँ ही करब जतन,
सोचि के नेह तहसे, लगाईले हम !! 1 !!
जेतना बाटे लिखाईल करम में, मिली,
कुछु धरम में मिली, कुछु शरम में मिली,
गीत कवनो तरे, नाँव रउरे धरे,
एही असरा में, अच्छरि मिलाईलें हम !! 2 !!
साँच दिल से मिले जे, उहे मीत ह,
साथ मनका चले जे, उहे गीत ह,
बाटे राउर नयन, दू गो अनमोल धन,
ई त अंजन ह राउर, रचाईलें हम !! 3 !!

◎◎◎

मुक्तक

तूँ अइबे ना करब, त हम आ के का करबि,
तूँ मन से सुनबे ना करब, त हम सुना के का करबि,
आदिमी होके जब पहाड़ लेखा पथरा जइब,
त हम हवा लेखा, देहि सटा के का करबि।

◎◎◎

ना पीयला में बा, ना खइला में बा,
ना अइला में बा, ना गइला में बा,
खाए पीए के त, ढ़ेर लोग जानेला,
असली मजा देखि के, अघइला में बा।

धनी धीरज धर

आइल पियवा के बहरा से तार, धनी-धीरज धर,
चिठिया में भेजनीं, जे असों के पानी,
ले भागल तूरि फारि सगरो पलानी,
तले धमकि आइल दुअरा पर जाड़ !! धनी0 !!
सूखि गइल भदई, त दहल अगहनी,
बैरन चिठिया में, दुख सब कहनीं,
बाटे सबके गतरिया उधार !! धनी0 !!
गोतिया-पड़ोसिया, सभे बा झलकावत,
कजरा से नयना, पलक मलकावत,
फाटे देखि के, करेजवा हमार !! धनी0 !!
तनिको नजरिया में, होई जो पानी,
आवे में करिह मत, तूँ आनाकानी,
गइनी गोटे-मोटे लिखि-लिखि के हार !! धनी0 !!

बदरवा

ई बदरवा असमानी, झूमि गइल !
धरती-रानी चढ़ल जवानी, ताल तलइया छलकल,
झींगुर झनके, मेहरा ठनके, राति अन्हरिया फलकल,
खेत-खेत के अँगनइया, जजतिया सोना-चानी !! झूमि0 !!
धानी चुनरी उमगल पगरी, खेत प्रीति के पाती,
मकई मडुआ धान जिन्दगी, हवा प्रान जल थाती,
दुख दरियाव समइया नइया आशा जिनगानी !! झूमि0 !!
गाछ-पात नयना के पुतरी, मोती बूँद बदरिया,
चन्दा-सूरज दीप गगन के, बारह मास डगरिया,
सावन-भादो झूला चढ़िके, नाचे बदरी रानी !! झूमि0 !!
ओरी से लटकल बा झालर, टपकत नेह पलानी,
पुरूवइया में सिहर रहल बा, चढ़ल उमिरि के पानी,
पनघट-पनघट गागर छलके, छलके जिनगानी !! झूमि0 !!

जिनगी

हिम्मत मन में, बल बाँहिन में, यारी रहे जवानी से,
मर्द उहे ह जे लड़ि जाला, आन्ही से आ पानी से,
सागर में तूफान उठेला, झँझा भरल बयार चले,
उड़े पाल हैया रे हैया, माँझी के पतवार चले,
गरजे बादर, चमके बिजुरी, आसमान फाटे लागे,
उठे ज्वार, करिया नागिनि जस, फन काढ़े काटे लागे,
हैया! हैया!! तूँ ही खेवइया, अरजी औढ़रदानी से !! मर्द० !!
जेकरे बल से जिनगी जीये, उहे सहारा उठि जाला,
जउने घाटे खड़ा मुसाफिर, उहे किनारा लुटि जाला,
जेकरे संग में जनम-मरन के, कसम लोग हरदम खाला,
धीरज धर बढ़ साहस से, रखवइया ऊपर वाला,
सीप नयन में मोती उपजे, गुजरल मधुर कहानी से !! मर्द० !!
जिनगी ह संग्राम, हवे वरदान, हवे अन्जान सफर,
शोक दर्द ह, खेल तमाशा, करतब हई जादूगर,
ई रहस्य ह, मधुर गीत ह, मौका ह कठिनाई के,
प्यार कर जिनगी से भइया, व्यर्थ गवाँ के पाई के,
मुश्किल का दंगल में जितब, हिम्मत का आसानी से !! मर्द० !!
मर्दे पर कि वर्धे पर, संकट के बादर बरिसेला,
अग्नि परीक्षा में धर्मी के छाती ज्यादे हर्षेला,
आफति ह पतझार उठलबा, फागुन के ह दूत पवन,
समझीं की आ रहल बहुत, जल्दी-जल्दी सुख के सावन,
अँकवारी में भरि-भरि चूमबि, सुख-सपना आसानी से !! मर्द० !!
आँखि हवे सनकाहिनि, एकरा के कतहीं मति जाए दीं,
जाई त अझुरा जाई, ना मानी, मति बउराए दीं,
के अंजन जिनगी भरि राखी, रही सिंगार जवानी भर,
उमर ढ़ले पर हँसी जमाना, क्षेपक बीच कहानी पर,
ले ल दिल उपहार प्यार के, अपने अमर निशानी से !! मर्द० !!

जइब

कान्हें चढ़ि के दुनियाँ देखल, कान्हें चढ़ि के जइब,
का गुमान करे ल, सिरवा धुनिके पछतइब !
जे-जे नीमन लागल, कइल, जहाँ बुझाइल गइल,
जीभि बेचारी जे-जे चहलसि, ओकरे कहना कइल,
का लेके तूँ अइल जग में, का लेके तूँ जइब !! का गुमान0 !!
जेकरा चलते अइसन भइल, कहियो जो भुलवइब,
ओकर खइब करनी पर, अपने पीछे पछतइब,
सोना अइसन काया आपन, माँटी इहाँ मिलइब !! का गुमान0 !!
केतने दिन देखत में बीतल, केतना दिन बा बाकी,
बतिया भइल, जुवाइल एक दिन तनिके दिन में पाकी,
आन्ही आई, पानी आई, अचके में झरि जइब !! का गुमान0 !!
तूँ ना छोड़ब, तबो छोड़ि देई तनवाँ वयरागी,
जेतने पानी ढरब ओतने लहकी मन के आगी,
अँखिया जाई, अंजन जाई, केतनो लोरि बहइब !! का गुमान0 !!

मुक्तक

माल चोख होई त, भार होखबे करी,
बिक्री बढ़ी त, उधार होखबे करी,
ई मछरी के बाजार हवे ए बाबा,
रोहानी ना चढ़े दी, तकरार होखबे करी।

आन्ही-तूफान उठल बा, गमा के देख,
फल मिलबे करी, कमा के देख,
मन का आगि में देहि के मति झोंक,
धीरज के फल मीठ होला, अजमा के देख।

मुक्तक

1

ई आदमी ना हवे, दोख हवे,
कले-कले सोखी, स्याही सोख हवे,
गदहा का माँथ पर, मउर बन्हाइल बा,
ना त साँच मानी, बन महोख हवे।

2

हाँव-हाँव कइले बा, कबो काटि दी,
बनलो बात के उलाटि दी,
बँचि के रहिह, ए बनवारी,
आंजु सटले बा, बिहने छाँटि दी।

3

चलते रह, बइठि के का पइब,
अबर दूबर के बाँहि अइठि के का पइब,
बजार के पसारा ढ़ेर दूर ले बा,
तूँ झूठ-मूठ के पइठि के का पइब।

4

एतना बढ़िया साटल रहल ह, ओकाचि दीहल,
कोरे रहल ह, दुका-दुका खाँचि दीहल,
हमार पढ़ाई-लिखाई त जेहे-सेहे बा,
तूँ कड़ाई से जाँचि दीहल।

5

हई अइसन दउरत बा, कि रेल हो गइल बा,
दिल्ली कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास मेल हो गइल बा,
पढ़े मे एतना तेज निकलल कि,
कि तनिको कड़ाई भइला पर फेल हो गइल बा।

6

हेकर मुँह ना हवे, ईनार हवे,
बवले रहेला, दँत-चियार हवे,
सपना के दिल्ली, बनावे ला,
बुरिबकई के कुतुबमीनार हवे।

मुक्तक

7

हमरा हरे लायक रहित त हरि लीतीं,
कुछु रो लीतीं, कुछ कँहरि लीती,
राउर लोर जवन ओस लेखाँ फुलाइल बा,
घाम लेखाँ, बेपूछले चरि लीतीं।

8

आदिमी होके इ का करत बाड़,
का छोड़त बाड़, का धरत बाड़,
केहू बिटोरि के, ले नइखे गइल,
तूँ झूठे के रातो-दिन मरत बाड़।

9

केकरा से कहल जा, सबके सब चोर बा,
केहू तनि साँवर बा, केहू तनि गोर बा,
जवना खातिर भेजल गइल, भइल ना,
ऊपर से शरीफ बा, भीतर से हरामखोर बा।

10

तूँ मीठ हउव कि तीत हउव,
हारि हउव कि जीता हउव,
हमरा ऐसे कवनो मतलब नइखे,
एतने जानत बानी, हमार होत हउव।

11

ए बाबू बूड़ि के मति पीय, अटकिजाई,
सभे तहरे बा, तबो खटकि जाई,
सरपावटे बा तले, दउरि ल,
बाद में चललो ना जाई, जब लटकि जाई।

12

पीयले बा, बउराइल बा,
काका का भरोसे अझुराइल बा,
एकरा से अझुरा के का पइब,
एकर पीठि कई बेरि दगाइल बा।

मुक्तक

13

जब रहहीं के नइखे त, बिटोरि के का होई,
जब छोराइए जाय के बा, त अगोरि के का होई,
गंगा के दर्शन होखहीं के नइखे,
त कर्मनाशा में गोड़ बोरि के का होई।

14

अनेरे अँझुराइल बाड़े, मिली ना,
ऊहो बजर बेहाया ह, एको इंच हिली ना,
इनका पर भूत बा, उनका पर जिन्न बा,
जवन ध लिहले बा, ढिली ना।

15

आपने कहि-कहि के रेति दीहनीं,
ठीक से पढनीं ना, समेटि दीहनीं,
केतना नाया-नोचर चादर रहे,
धोववनी ना, ओहींगा चपेति दीहनीं।

16

नीछि-नीछि के बिटोरि लीं,
बीनि-बीनि के सहोरि लीं,
बहती गंगा में सभे नहाता,
रउवो हाथ-गोड़ बोरि लीं।

17

नोंचि लीं, खसोटि लीं,
काटि लीं, बकोटि लीं,
तीत लागे त, उगिलि दीं,
मीठ लागे त, घोंटि लीं।

18

हमरा जुरते का बा, जे खियाई,
अपनहूँ जीं, रउवो के जिआई,
बाप-दादा तरकुलो नइखें लगवले,
जे अपनहूँ पीं, रउवो के पियाई।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
आपन माटी आपन थाती

मुक्तक

19

बाड़े ना त खेल के करत बा,
मूँड़ी-कटौवल के करत बा, मेल के करत बा,
हम रउवा त भरम में, धरम गँवावत बानी जा,
लाखों-करोड़ों देखा के, अकेले के करत बा।

20

गुमान मति कर, ओरा जाला,
बुताइलो आगि, खोरा जाला,
पइसा केकरा आमिख हवे,
साधुओं-सन्त भोरा जाला।

21

विश्वास बा, जे आ जइब,
उजरल मन के मड़ई, छ्वा जइब,
लोग त बाउरे-बाउर सुनावत बा,
तूँ कुछु नीमने सुना जइब।

22

भाई जी, अब केहू का केहू पर विश्वास नइखे,
केहू के भरोसा नइखे, केहू के आस नइखे,
ना लोग, ना रास्ता, ना बस्ती, ना गाँव,
केहू से केहू का बतिआवे के सँवास नइखे।

23

मछरी का बाज़ार में, दही ना बिकाई,
चोरन के गाँव, डाकून के चौराह, के जाई,
हमरा घर में ताड़ी के ठिलिया बा,
खोजबि त तुलसीदल ना भेंटाई।

24

पढ़ि-लिखि के गँवार हो गइल,
माई-बाप बूझल जे, होशियार हो गइल,
कबो-कबो कुपातर जनमि जाले,
दिया बराइल तबो, अन्हार हो गइल।

आपन माटी आपन भाषा

मुक्तक

25

आँखि खुलबे ना कइल, अबेर हो गइल,
गठरी बान्हते-बान्हते ढेर हो गइल,
लोग कहेला जे, बुझनिहार हवे,
हमरा बुझाता जे, अनेर हो गइल।

26

सब राउरे हवे, हमार का बा,
इ रूप का बा सिंगार का बा,
रउए समय पर ना ताकबि,
त ई बाजार का बा, संसार का बा,

27

ताकत रही, बिसराई मति,
खलिहा बानी, टकराई मति,
राउरे आँखि, राउरे अंजन,
रचवले बानी त, मेटाई मति।

28

टाही लगवले रहीं, टीपि बइठवले रहीं,
चारू ओरी डोरी, लगवले रहीं,
कबो ना कबो त, चू के गिरबे करी,
अगतही से मुँह बवले रहीं।

29

जइसे मन करे ले चलीं, चले के बा,
समय का समुन्दर में, हले के बा,
एक से सइले, केहू-केहू गनेला,
बीचे में लटकि के, हाथ मलेके बा।

आपन माटी-आपन थाती

30

बोल-बतिया के काटि ल,
भूजा-धूरा मिला के बाँटिल,
तूँ हूँ राजा, ऊहो राजा,
करेजा में करेजा, साटि ल।

मुक्तक

31

हँसलके काल हो गइल,
केतना-केतना बवाल हो गइल,
आँखि पर आँखि चढ़ि गइल,
कवनो पीयर हो गइल, कवनो लाल हो गइल।

32

ना हम बानीं, ना हमार बा,
जे कुछु बा, सब तोहार बा,
कवनो गीत होखे, ताल होखे, लय होखे,
सबके साथे तहरे सितार बा।

33

सालो भरि लटकले रहेला, दउर मति,
लोग लहास बुतावत बा, खउर मति,
गाँठि पर गाँठि, गुरही-गनात ढ़ेर बाटे,
ऊपर से चिकना-चिकना के, चउर मति।

34

जले लउकत बा, बिटोर लीं,
दोसरा के कमाइल ह, छोरी लीं,
लोग डूबि-डूबि के, पीयत बा,
रउओ हाथ-गोड़ जोरि लीं।

35

ध लीहले बा, अब जाई ना,
ले बीती सकुचाई ना,
बजर बेहाल ई मन बाटे,
साफ डूबल बाटे, उतराई ना।

36

जबन चाहल गइल, तवन भइल ना,
जवन टीसि समाइलि, गइल ना,
केतना जतन से पोसाइल रहे,
उड़ि गइल, केहू धइल ना।

मुक्तक

37

राउर नेह-छोह भुलाई ना,
प्रेम के दीया कबो बुताई ना,
लोग के रीन दिया जाई,
राउर रीन कबो दियाई ना।

38

बड़े भागि से रउआ के पवले बानीं,
ढ़ेर दिन से रउए पर आँखि अड़वले बानीं,
राउर दर्शन भइल, सब कुछ मिलि गइल,
सभे इहे कहत बा, हम पवले बानीं।

39

आँखि ना रही त, सिंगार का होई,
दिया ना जरी त, दुआर का होई,
कीने-बेंचे खातिर, बाजार लागल बा,
पाकिट खाली रही त, बाजार का होई।

40

मन करेला रोजो, निहारत रहीं,
राउर फोटो आँखि में, उतारत रहीं,
रउआ हर-सिंगार लेखाँ, गहदल रहीं,
हम भिखार लेखाँ बहारत रहीं।

41

ना पइँचा बा, ना उधार बा,
नाता निबाहे खातिर, व्यवहार बा,
दोसर केहू बूझे, चाहे ना बूझे,
हमरा त खाली, तहरे से प्यार बा।

42

भरोसा बाटे, तूँ भुलइब ना,
हमके छोड़ि के कहीं, जइब ना,
लोग खा के, भुला जाला,
तूँ भुलाइयो के, खइब ना।

मुक्तक

43

मिलते नइखे त, सधुआइल बाड़े,
खाली भरमावे खातिर, रंगाइल बाड़े,
चीन्हे वाला चीन्हते बाटे कि,
ऊहे हउवनि, भेस बदलि के आइल बाड़ें।

44

रास्ता का जानत बा कि, साधू हवे कि चोर हवे,
आन्हर का देखी कि सोनहुली साँझि, सुहावन भोर हवे,
अंजन रचवले पर लोग चीन्हेला कि,
आँखि ना हवे, कटारी के कोर हवे।

45

हमरा उमेदि बा जे, हमके भुलइब ना,
हमके छोड़ि के, कहीं जइब ना,
रूप आ रतन तहरा, ढ़ेर-ढ़ेर मिली,
हमरा मन लेखाँ साँच मन, कहीं पइब ना।

46

जब अँखिया से अँखिया, लड़े लागी,
देख निहार का करेजा में, गड़े लागी,
सँजोग से आँखि में आँखि, गड़ि गइल,
ऊपर से ढ़ेर-ढ़ेर मूड़ी पर, पड़े लागी।

47

बचपन भूमिका हवे, बुढ़ापा अध्याय ह,
बचपन बछरू हवे, बुढ़ापा गाय ह,
एगो चहकत-फुदुकत में, बीति जाला,
एगो दर्द हवे, टीस हवे, हाय ह।

48

सपनवाँ अँखियन के कीनी लीह,
दरदिया जिनगी के छीनि लीह,
जब आँसू के मोती छिटाए लागे,
त हाथ बढ़ा-बढ़ा के बीनि लीह।

मुक्तक

49

जेकरी अँखियन में प्यार हो जाला,
ओकर जिनगी, उधार हो जाला,
अजब बा रीति, एह दुनिया के,
जवना के तोपे चाहेला, उघार हो जाला।

50

आपन हीत-मीत सभे जानेला,
आपन मीठ-तीत, सभे जानेला,
जब जिनगी दाव पर, चढ़ि जाले,
त आपन हारि-जीत सभे जाने ला।

51

जहिया आपने जिनगी, भार हो जाई,
तहिया चीन्हलो आदमी, अनचिन्हार हो जाई,
समय परला पर, के केकर होला,
अँजोर अछइत, अन्हार हो जाई।

52

हमरा जाहिल जिनगी के, जिया के का पइब,
भूखि मरि गइल बा, खिया के का पइब,
अँखिया त तहरा प्रेम में, अइसहीं पागल बा,
ऊपर से नीमन बाउर, पिया के का पइबा।

53

जवन लउकि के ना मिलेला, तीत हो जाला,
जवना से करेजा पिघलि जाला, गीत हो जाला,
जेकरा से गनि-गनि के, मानल जाला,
उहे आपन हीत हो जाला।

54

जे नियर रहेला, उ दूर हो जाला,
माँथे पर फूल, पैर तरके धूर हो जाला,
जीये के, के ना चाहे ला दुनियाँ में,
बाकी केहू-केहू मरहूँ खातिर, मजबूर हो जाला।

मुक्तक

55

जवन मिलबे ना करे, ऊ लउकले से का,
कवनो रोबे-दाब ना होखे, त फउकला से का,
डाढ़ि-पात सगरो फरले, फुलाइले होखे,
आ भेंटइबे ना करे, त छउकला से का।

56

जजाति लागल बा, निराश ना होखे के,
उमेदि होखे त, उदास न होखे के,
बेआरि त नीमन, बाउर बहवे करी,
घबड़ा के बदहवास, ना होखे के।

57

घेरले रहलसि बदरिया, भइल घामना,
काम एतना सतवलसि, मिलल राम ना,
ऊपरा भींजत बा, भीतरा जरत जिन्दगी,
कामना आइल, मनकी एको कामना।

58

आदमी के देखि के आदमी, जर रहल बा,
आजु आदमिए से आदमी, डर रहल बा
ना जाने काहें ई, बुझात नइखे,
जे आदमी का साथ, आदमी कर रहल बा।

59

मुँह मति फेरीं, हमरो के ताके दीं,
दाम अनमोल बा, हमरो के डाँके दीं,
अयजू बा, गदेल बा, जुबाइल नइखे,
अगुताई मति रसे-रसे जुबाए दीं, पाके दीं।

60

सनेहिया, साँच होई त रउआ, अइबे करबि,
हमार पूछबि, आपन बतइबे करबि,
केहू कतहीं रहो, केहूँ कतहीं रहो,
भेंट भइला पर, अँखिया मिलइबे करबि।

मुक्तक

(61)

कीने के बाटे त, नीमन बाउर बीनिलीं,
कुछु ठोकि-ठेंठा के, नीमन बाउर कीनिलीं,
उचिलायक होखे त, उचिला के फेंकि दीं,
नात सूप उठा के, रसे-रसे पछीनिलीं।

(62)

ताकत रह, आँखि गड़वले रह,
बिचिलेना पावे, ठीक से अड़वले रह,
कहीं ना कहीं त, गहुआ धरबे करी,
अंगुरी से अंगुरी लड़वले रह।

(63)

जाते बानी त, विलमि के सुनलें जाई,
नीमन लागे त, कुछु चुनले जाई,
बात के बखारि जवन, खोलाइल रहल ह,
अपने हाथे मुनले जाई।

(64)

जे सहि जाला, ऊ रहि जाला,
जे हड़बड़ा जाला, ऊ ढहि जाला,
जे अगुता के उमेदि ना छोड़ेला,
ओकरा कबो ना कबो, लहि जाला।

(65)

ओकरे से कहीं जे, बूझत होखे,
ओकरे से बताईं, जेकरा सूझत होखे,
ओकरे के ललकारल, शोभा देला,
जे अपने आन पर, जूझत होखे।।

आपन माटी-आपन थाती

(66)

रउआ बनल रहीं, राउर नाँव बनल रहो,
रउआ साथे-साथे, राउर गाँव बनल रहो,
जिनगी जहाँ ले जा, रउआ चमकत रहीं,
राउर रास्ता बनल रहो, राउर पाँव बनल रहो।

मुक्तक

(67)

हमहूँ चुपाइल बानी, तुहूँ चुपाइल रह,
मँहकत रह, गुलाब नीयर फुलाइल रह,
हम छाँह लेखाँ तहके घेरले रहीं,
हम घमात रही, तूँ जुड़ाइल रह।

(68)

जेके साधू बूझल गइल, चोर हो गइल,
जेके पूजल गइल, हरामखोर हो गइल,
बाप रे बाप, लोग केने से केने बदलि गइल,
जवना के नाँव ना लेवे के, शोर हो गइल।

(69)

हमरा अन्हार मन के, तूँ लूक हउव,
हमरा पनझर के, हरियर कूक हउव,
हई मंगर-बुध-बियफे के साथ कवन,
तूँ भिनुसारे के शूक हउव।

(70)

जब बोलवले बाड़, त बोले के परी,
कले-कले प्रेम के पाती, खोले के परी,
हम प्रीति के पँखा, डोलावत रहबि,
तहरो रसे-रसे साथे-साथ, डोले के परी।

(71)

परदा में रहो, चाहें उघार रहो,
चाहें नगदी रहो, चाहें उधार रहो,
बाकी जवन जोराइल बा, टूटो मति,
पतई-पतई से पेड़ का, प्यार रहो।

(72)

जे दर्द बढ़ा देला, ऊ हीत ना हवे,
जे साथ छोड़ि देला, ऊ मीत ना हवे,
जवन आँखि का सामने रूप ना खड़ा क दे,
साँच मानीं, ऊ गीत ना हवे।

मुक्तक

(73)

हवा के झोंक पर, पतइया डोलबे करी,
जब लहर उठी त, नइया डोलबे करी,
माई के करेजा, पूत खातिर मोम हवे,
जब बछरूआ बोली त, गइया डोलबे करी।

(74)

रतिया देखत-देखत, भिनुसार आगइल,
जाए खातिर डोलिया, कँहार आ गइल,
बिरहिन अन्हरिया के माँगि, भरल जोन्ही से,
ललकी ओहरिया, दुआर आ गइल।

(75)

मन धोवात रही त, काई ना मिली,
एगो समय आई जे, बाप ना रही, माई ना रही,
तनी-मनी खातिर, बिगाड़ ना करेके,
सब कुछ मिली, सहोदर भाई ना मिली।

(76)

तूरि के का पइब, जुवाइल नइखे,
तहरे तरे, सभे खखाइल नइखे,
का ताकत बाड़, सीजन में सभे लादेला,
पेरा जइब, अबहीं पूर्जी आइल नइखे।

(77)

नेहिया के लोर, लोर ना कहाला,
नयनवाँ के चोर, चोर ना कहाला,
जेकरी अँखिया के नींदिया हराम हो जाले,
ओकरी रतिया के भोर, भोर ना कहाला।

(78)

चाहत बानीं कि, हमार बनि जइत,
हम बहँगी बनि जइतीं, तूँ कँहार बनि जइत,
ढोवते-ढोवते जिनगी कटि जाइत,
हम अंजने रहितीं, तूँ सिंगार बनि जइत।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

79

झूठ-झूठ हवे, साँच-साँच हवे,
एगो धूँआ हवे, एगो आँच हवे,
जवन अपने से डगरि आवे, पाकल ह,
जवना के तूरे के परे, ऊ काँच हवे।

80

जवन धूरा हमरा माँथ पर बा, तहरा पाँव के ह,
जवन माला हम जपत बानी, तहरा नाँव के ह,
जेतना लोग के विलमा के, हालि पूछनीं,
साँचे मान सभ केहू, तहरा गाँव के ह।

81

तूँ चलि जइब, त हम जीयबि कइसे,
फाटल करेजा के, चीर सीयबि कइसे,
केतना बढ़िया, गुन के गगरी बुझात बाड़,
ढ़रबे ना करब, त पीयबि कइसे।

82

भिनुसारे के सपना के, बात सोचत-सोचते,
जे अब साँच होई, साँझ हो गइल,
एने राति के कोख, फुला गइल,
ओने किरिन के कोख, बाँझ हो गइल।

83

जवन बीति गइल, ऊ आई कहाँ,
जवन झरि गइल, फुलाई कहाँ,
जे गड़हे-गुड़ही में देहि पोंछि लीहल,
ऊ गंगा में जाके, नहाई कहाँ।

84

ना चानी चाहीं, ना सोना चाहीं,
ना जादो चाहीं, ना टोना चाहीं,
खाली नेह-छोह, बनवले राखीं,
रउआ नजर के, एगो कोना चाहीं।

मुक्तक

85

किसान का जजाति से प्रेम होला,
चोर का राति से प्रेम होला,
जीये खातिर अपना घरे सभे खाला,
असली खइनहार का, बरात से प्रेम होला।

86

ठाँव गुने काजर, ठाँव गुने करिखा,
दोष ना गाल के बा, ना आँखि के,
अयगुन त कइलसि ऊ हाथ,
जवन एनेके ओने, एप्वाइन्टमेंट क दीहलसि।

87

सबेरे के बादर, लमहर सुतवइया के चादर,
केहू कले-कले खींचि के हटावे,
डरे ना बोले, ईशारा से जगावे,
तब लाल-लाल, आँखि कइले ताके,
बिगड़ि के झाँके, विहान हो गइल।

88

अन्हार का पथार पर, भकजोन्ही के गुरिया,
कवनो बुरिबक का तरे, ई के बा छितरवले,
आकाश का तम्बू में, अन्हार के परदा,
अबहीं बइठल ना महफिल, तले के बा लगवले,
जब सभे सोंसियाता, केहू जागिके ओंघाता,
तब बहुमत में अल्पमत के शासन ई के बा चलवले,
अन्हरिया का ताल में, विचार के मछरी खातिर,
ई लालटेन के बंशी, के बा लगवले।

89

जोश का रही, जब होश नइखे,
देह कवन ह जवना में, अफसोस नइखे,
आरे जिनगी त ओइसन पलंग बा,
जवना पर पलंग पोश नइखे।

मुक्तक

(90)

एगो समय रहे, जे सटे ना दीहल,
एगो समय बा जे, हटे नइखे देत,
बाहरे मालिक तोहार नेह – छोह,
कहियो काटि दीहल, अब कटे नइखे देत।

(91)

जिनगी ले ल, जवानी ले ल,
एगो बैनामा होला, एगो जबानी ले ल,
अँखिया जब उदास होखे लागे,
त अंजन के एगो, निशानी ले ल।

(92)

कश्मीर हमार, घाटी हमार ह,
पूजा-नमाज़, रीति-रिवाज़, परि पाटी हमार ह,
केहू हुँड़ार लेखा, लार मति टपकाओ,
पहाड़ी हमार ह, माँटी हमार ह।

(93)

हिन्दू हमार ह, मुसलमान हमार ह,
सिक्ख, ईसाई, बौद्ध-जैन के ज्ञान हमार ह,
मन के भरम, हटा दीहल जा,
हिन्दुस्तान हमार, पाकिस्तान हमार ह।

(94)

नक्शा खतियान बना के, काटी मति,
ढ़ेर हाथ साफ कइनी, अब बाँटि मति,
आगि लागेले त, दूनूँ घर जरेला,
ढ़ेर-ढ़ेर तोपाइल बा, उपाटी मति।

(95)

केतनो किचकिचा के धरबि, छटकि जाई,
खूब गहकल बा, तबो खटकि जाई,
पीय-पीय डूबि-डूबि के पीयत रह,
एगो समय आई जे, अँटकि जाई।

मुक्तक

96

चकोह में फँसा के, ताक तो नइख,
साफ मुड़िया गइल बाड़, झाँकतो नइख,
लोग खातिर पोथा पर, पोथा लिखा जाता,
हमार छोटी चुकी चिटकुना के टाँकतो नइख।

97

हमरा सुखले-साखल बा, तहरा चोखा बा,
हम साफ-दाफ बानी, तहरा धोखा बा,
उड़ा ल, उड़ा ल, तहरा हाथ में कबूतर बाटे,
हमरो गाँवे एगो महोखा बा।

98

आजादी पुन्निके पौधा हवे, पाले के परी,
एकरा ऊपर के कँजास टारे के परी,
ई खूने से सिंचाइल बा, इ याद रहे,
जरूरत पड़ी त, खूने डाले के परी।

99

दोसरा के नीमन देखि के, हहरे के ना,
केहू के हरियर देखि के, चरे के ना,
जजाति के काम हवे, आगे-पीछे,
केहूके लागल देखि के, जरे के ना।

100

कुत्ता के कौरा दे दीं, बहकाई मति,
लोग पर ललकारि के, सहकाई मति,
आजु साधू बाबा के कटलसि त,
बिहने रउओ पर झपटी, अगुताई मति।

101

काजर के मोल, चमकवला में बा,
गहना के मोल, झमकवला में बा,
लूटे वाला के कमी नइखे,
आदमी के मोल लूटवला में बा।

मुक्तक

102

राति अन्हारे में बीतेले, आ दिन घाम में,
जेतना दरद होला उपाटि के,
सहेजि के, करेजा में साटि के,
दिया के टेम पर सेंकि-सेंकि,
अन्हार कचोटेला, ओठ काटि के,
का जाने के, के, सूति जाला बेसोचले आराम में,
जब अन्हार हो जाला,
त केहू अनगिनत बिया बो जाला,
बिना जोत-पात के ई पैरा,
ऐहीसे फजीरे दुका हो जाला,
केहूना सोचेला का भइल, लागि जाता काम में,
सबके धीरे-धीरे कटत जाता,
कहीं से हटल बा, कहीं सटत जाता,
लोग कहत बा, चमकत बा,
हमरा बुझाता, जे लहत जाता,
विकात त सबके बा, फरक परत बा दाम में।

103

ओछन के साथ,
अपने गरदन पर छूरी मारत,
आपन हाथ।

104

काजर के मोल, चमकवला में बा,
गहना के मोल, झमकवला में बा,
लूटे वाला के कमी नइखे,
आदमी के मोल लुटवला में बा।

105

ना पीयला में बा, ना खइला में बा,
ना अइला में बा, ना गइला में बा,
खाए-पीए के त ढ़ेर लोग जानेला,
असली मजा देखि के अधइला में बा।

मुक्तक

(106)

खूँथ

बसन्त के बतास से, हुलास नइखे,
बरखा के पानी से, विकास नइखे,
बेकारे अब धरती आकाश बाटे,
केहू से बतियावे के सँवास नइखे,
झाँगी झरि गइल, टाँगी के धार पर,
डाढ़िपात गिरि गइल, अपने दुआर पर,
अब नइखे छाँह, कहीं अपनो के,
जवना के पसरले, जवार पर,
दू जाना कालि्ह जुतिया गइलें,
चारि जाना परसो लतिया गइल,
एके कोड़ि के उखारल जाई,
तीन जाना चउथा रोज बतिया गइलें,
ना घाम से जरे के बा, ना ओस से फुलाए के,
ना केहू से हँसी मजाक, ना कबो गुलबुलाए के,
कबो-कबो सियार-सूअर दरकच्चि देलें,
कबो-कबो बकरी के चरवाह खुरकच्चि देलें,
ना जीयला के लोभ बा, ना मुअला के डर बा,
ना पुलुई, ना डाढ़ि-पात, खाली एगो जर बा,
ना आन्हीं में लचे केबा, ना हवा में डोले के,
ना केहू से लस्सी-धग्गी, ना चाव बा बोलेके,
ए खूँथ के अब केहू का काटी,
जब डाढ़ि-पात हइए नइखे त,
केहू उखारिए के का बाँटी ?

मुक्तक

(107)

आँखि

पपनी में ताकत बा, प्रान के पपीहा करी,
अइसन बरौनी त मन के बउराइ दी,
भौंह लागे राकेट के नोकदार तोप हवे,
तनिको उतान होई, मन के उड़ाइ दी।
गोल-गोल बम नाँचे पानी के हिलोर बीच,
अपने त डूबि, ई जग के डुबाई दी,
पुतरी रे पुतरी जब, उतरी करेज बीच,
जिनगी के मरघट के, लकड़ी बनाई दी।
केहू का तकला से, जिनगी सँवरि जात,
केहू के ताकल, लगाइ देला फाँसी,
केहू ना ताके त, समझी अनर्थ भइल,
केहू जो ताके त, जिनगी भरि गाँसी।
ताकल गुनाह ना ह, बाकी जो तकले से,
लहरत बगइचा में आवे उदासी,
मति ताकी, मति झाँकी, माँकी मति गाँव-गाँव,
अँखिए में नरक कुण्ड, अँखिए में काशी।

(108)

तूँ

हम अन्हरिया का उदास आँचर में,
सपना के जोन्ही बिटोरत रहिगइनीं,
आ, तूँ, भिनुसारे का शीतल जाँघ पर,
ललियाइल आसमान के ओहार तानत रहल,
जबकि हमरा दुख के बात जानत रहल, देखिल-
भादो के पानी नीयर जवानी, कुँवार कुवार का घर से,
कले-कले सरकि गइल-
जवन उमंग के बछरू कूदि-फानि के,
आँखि का खरिहान में खेलत रहे,
खाली तहरा, कू बोलला से हरकि गइल,
अब त पपनियों पर विश्वास नइखे,
जवन सगुन, नीयर फरकि गइल,
मन के महल के ईटा-ईटा खरकि गइल, तूँ चुपे रहि गइल,
ना जाने का-का दो कान में कहि गइल।

मुक्तक

(109)

चरबे करी

केहू हँकनिहार नइखे,
केहू बन्हनिहार नइखे, त चरबे करी,
भुखाइल बा मानी ना, पेट भरबे करी !
तहरा दुखात होखे त हाँकिद,
थाना पुलिस में सनहा टाँकिद,
बे सील मोहर के बा खढ़िया जा,
ऊहो अरियाइल बा तूँ हूँ अरिया जा,
ऊ जरल बा, दोसरो के उजरबे करी !! चरबे करी !!
लफे के जानेला, लाचार बा मानी ना,
केकर केइसन जजाति ह, पहिचानी ना,
परिका के सहका दीहनीं, त चरे दीं,
बहकवले बानी त, खखाइल बा भरे दीं,
रउआ सइहारत रहीं, ऊ संहरबे करी !! चरबे करी !!
दागि के छोड़ले बानी त, जाई कहाँ,
राउर उनुके पाही चीन्ही त, खाई कहाँ,
छोटका चिल्लाता, बड़का पछताता,
अँखि देखारे हँकड़ि-हँकड़ि के खाता,
पुलुई चरते बा, जरि सोरि उखरबे करी !! चरबे करी !!
बेहाया रोपि के छाया खोजबि त, ना मिली,
चीखि लीहले बा जोंकि हवे, ना ढिली,
खाए दीं बरसात आई, पनकि जाई,
बीच में रोकबि त, खइले बा, सनकि जाई,
बाबू साहब के पाड़ा हवे, चोकरबे करी !! चरबे करी !!

मुक्तक

110

लक्ष्मी जी

लक्ष्मी जी उल्लू पर बइठल, उल्लू बइठल डार पर,
बाह रे दुनिया, बाह रे धरती, का बा लिखल लिलार पर !
हे लक्ष्मी जी! एको दिन हमरों पर तनी दयइतीं,
दू नम्बर के गेट खोलिके हमरा दुअरा अइतीं,
लूट, खून, अपहरण, कहीं ठीका-ठनका बतलइती,
भागि खोलि दीतीं, तनि हमरो, हम नेता हो जइतीं,
राइफलधारी पहरा दीतें, हमरो दीन-दुआर पर !! 1 !!
कवनीगा आईले रउआ, कवनीगा चलि जाई,
आन्हर भेंभर का गर में, जाके माला पहिराई,
जेतना मइल मलेच्छ बुझाला, ओकर भरीं अटारी,
सरस्वती के बेटा कुल्हुरे, रोग शोक बेमारी,
राउर किरिपा जाहिल पावे, ढ़ारीं सुधा गँवार पर !! 2 !!
चोर-उच्चका, डाकू- ठग का, पाछे-पाछे धाई,
साँच हृदय वाला के, अलगे से ठेंगा देखलाई,
रउए बल पर महामूर्ख के, जय-जय बोले दुनियाँ,
रउए बल पर शोहरत होखे, सरसे स्वर हरमुनियाँ,
राउर महिमा बड़हन बाटे, लुच्चन का दरबार पर !! 3 !!
जिनगी भरि लिखते रहि गइनी, ना रउआ जब अइनीं,
साचे नेह निभावत जिनगी, जरते रहल झुरइनी,
ढ़ेर लउकनी ना अंजन पर, अँखिया कबो छोहाइल,
राउर रस्ता देखत-देखते, अँखिया बा पथराइल,
हमरो घर में दियरी बारीं, अंकुश लगे अन्हार पर !! 4 !!

मुक्तक

111

चमचा

एने चमचा ओने चमचा, बीचे में बइठल थाली,
चमचा का पहरा में सूते, जागे मति चमचा वाली !
चमचे का चलते दानी, हरिश्चन्द करे मरघट पहरा,
चमचे का चलते इन्नर, भगवान कबो भइलें बहरा,
चमचे का चलते रामोजी, बनके राह पकड़ि लिहले,
चमचे का चलते महाभारत, देश-विदेश जकड़ि लिहले,
चमचे का चलते लाखों के, जान गइल खाली-खाली !!
चमचा ना होखे त थाली, एने ओने ना होइहें,
चमचा ना चाहे त प्याली, ओठें पर जाके रोइहें,
चमचा ना होखे त कोठी, भूखे-प्यासे मरि जइहें,
चमचा ना होखे त कीचन, साँझे कबो उखरि जइहें,
चमचा ना होखे त लाजे, ना अइहें लक्ष्मी-काली !!
चमचे का चलते सिंहासन, एने से ओने होला,
चमचे का चलते शबनम, भी हो जाला कहियो शोला,
चमचे का चलते साँचे पर, झूठ करेला असवारी,
चमचे का चलते हलुकाला, तनिके में आसन भारी,
चमचे का चलते बउराले, दुनियाँ इ जनमत वाली !!
चमचे का चलते गोबर जी, गणपति बनि पूजल जाले,
चमचे का चलते हरियर सब, साग-पात भूजल जाले,
चमचे का चलते थाली का, घी के दर्शन हो जाला,
चमचे का चलते नोकर-चाकर, चमचा के धो जाला,
चमचे का चलते भाई-भाई का, ना पटरी खाली !!
चमचे का चलते मुँहे में, आवेला रस के प्याली,
चमचे का चलते जीभों का ठेके, अँगूरी डाली,
चमचे बाहर, चमचे भीतर, चमचे आगि लगावेलें,
नीमन के बाउर, बाउर के नीमन, इहे बतावेलें,
चमचा के दादा बेलचा के, करतब ह पूरा जाली !!
चमचा ना बदलेले, थाली, प्याली जाली अदल-बदल,
चमचा होले पार फँसेली, थाली-प्याली जब दल-दल,
चमचा चमके चम-चम, थाली-प्याली में करिखा लागे,
चमचा पीछे शोर मचावे, चमचा धावेले आगे,
चमचे का चलते अंजन पर, घिरे घटा काली-काली !!

मुक्तक

(112)

टोना

इनिका जोग लागेला, उनुका टोना लागेला,
इनिका चानी लागेला, उनुका सोना लागेला,
ई टेढ़ होके जाले, ऊ उतान होके जालें,
ई पट होके जालें, ऊ चितान होके जालें,
जब दुनूँ जाना ढहरी पर कोहनालें,
त इनिका पत्तल लागेला, उनुका खरदोना लागेला !!
ई टिपोल करेलें, ऊ टिटिम्मा करेलें,
आँतर पारि के पारा-पारी सनिम्मा करेलें,
इनका नखरा लागेला, उनुका चोना लागेला !!
ई चुपे-चुपे खालें, ऊ बोलि के खालें,
ई पहिरि के खालें, ऊ खोलि के खालें,
इनिका चटकार लागेला, उनुका अलोना लागेला,
ई लीपि के मूतेलें, उ छिपि के मूतेलें,
बाकी दुनूँ जाना रोज-रोज टीपि के मूतेलें,
इनिका फरदाँव लागेला, उनुका कोना लागेला !!
इनिका पेट में गूर्ही बा, उनका पेट में गतानि बा,
इनिका घोठ बा, उनुका बथानि बा,
इनिका में सीड़ि लागेला, उनुका में नोना लागेला !!

आपन माटी-आपन थाती

मुक्तक

(113)

हमहीं चोर बानीं

हमहीं चोर बानीं, आदमी का रूप में आदमखोर बानीं,
बहुरूपिया मन, कबो साधू, कबो फकीर,
कबो नेता-अभिनेता, कबो छोंछर गंभीर बनि जाला,
रोब-रूआब, मान-गुमान, हवा-पानी,
कबो कंजूस के बाप, कबो महादानी बनि जाला !
नकली-जाली-सनद ओढ़ि के,
आँखि में धूरा झोंके में विभोर बानीं !! हमहीं0 !!
मन्दिर में भगवान के खा गइनी,
मस्जिद में खुदा के लुकवा गइनीं,
बाँटि-बाँटि के आदमी का, औलाद के चबा गइनीं,
ऊपर से पुरइन के फूल नियर कोमल,
भीतर से कठोर बानी !! हमहीं0 !!
अन्हार में खूँखार भेड़िया-शेर हो गइनीं,
अँजोर में खूनी-कतली, शमशेर हो गइनी,
कहीं बकरी, भेड़, खरगोश, कुकुर, बिलार,
कउवा, गिद्ध, तीतर-बटेर हो गइनी,
ऊपर से परम् पवित्र सज्जन,
भीतर से पतित घोर बानीं !! हमही0 !!
थाना-पुलिस-प्रशासन दउरत रही, धराइबि ना,
सामने ही रहबि, साथ छोड़ि के जाइबि ना,
धोवे वाला के धो देबि, धोवाइबि ना,
केतनो बसात रहबि, घिनाइबि ना,
रउआ मन करे अंजन रचाई,
हम चित चोर बानी !! हमहीं0 !!

मुक्तक

(114)

रउआ चरत बानीं

ठीक बा चरीं, आरी चरीं, डँड़ारी चरीं,
बाकी बीच में के पूआड़ी मति चरीं !
भिनुसारे के ओस चाटि के, होश मति गँवाई,
गदबेरि के सँझवत लोकि के, रोस मति चढ़ाई,
एने-ओने जवन झूठ के, बिया बोवत बानीं,
बरछी हला-हला के, टोवत बानीं,
चरते बानीं त बारी चरीं, फुलवारी चरीं,
बाकी जोगिनि नावापार का लाथे कुआड़ी मति चरीं !
हुनुका के बात के बरफी खिया के, हिनिके पाकिट काटत बानीं,
सगरो पाइप घोंटि के, देखावे खातिर साकिट काटत बानीं,
रूखानी से रसे-रसे, पनच छोड़ावत बानीं,
अलोते-अलोते बँसुला से, सिल्ली बकोटत बानीं,
त आरी चरीं, कुल्हाड़ी चरीं,
बाकि जंगला बनावे के, लाथे केंवाड़ी मति चरीं !
ई कवन चरल ह जे, एगो सूता खींचे में पाढ़ि चरि गइनीं,
सूखा चरत-चरत समुन्दर के, बाढ़ि चरि गइनीं,
चरतो बानीं, आ मूँड़ियो झाँटतानीं,
बिकोटि-बिकोटि के पट्टी साटत बानीं,
ठीक बा, किनारी चरीं, साड़ी चरीं,
बाकी अगाड़ी चरीं के, पिछाड़ी मति चरीं !
चरत-चरत ठूँठ क दिहनीं, राउर पेट ना भरल,
ए लोग के गठरी-मोटरी, कटि गईल, राउर पेट ना भरल,
ललकी किरिन, अगिया बैताल, घाम के तनि सोचीं,
दमरी खाइए गइनीं, अब चमड़ी मति नोंची,
पनके दीं, पुलुई मति भाँगि, नारी चरीं, खाड़ी चरीं,
बाकी दुआरी पर के, कियारी मति चरीं !!

मुक्तक

115

ककोचा

रउरे ककोचा से उबरी कि नाहीं,
इनहूँ का चाहीं, कुछु उनहूँ का चाहीं !
चटनी चटाईले, एने आ ओने,
बइठि के गपोचिले, डेहरी का कोने,
टुकुर-टुकुर ताकेलें, राउर घर भरन,
दे देईं उनहूँ के, तनिकी एक शरन,
आन्हा थोपी उनुके खियाइले रउआ,
देके बताशा मनाइले रउआ,
इनहीं के माथे पर राउर बा पाही !! इनहूँ का० !!
कहियाले इनिके, अन्हरचटका खेलाइबि,
बाते से पोटि-पोटि, कबले पोल्हाइबि,
इनिहूँ के धरती ह, थोरो-थोर बाँटीं,
जेतना ले आँटि सके, ओतना ले आँटि,
मेहनत से झहरेला, जेतने पसीना,
धरती पर चमकेला, ओतने नगीना,
इनिका कें टूकियो ना, उनुका के गाहि !! इनहूँ का० !!
सब केहू राउर ह, करीं तनि सेवा,
इनिहूँ के ठेके दीं, ढ़ेर चभनीं मेवा,
एजी, रउआ चमचम पर, पॉलिश दिया ता,
होत नइखे मेहनत, तबो मालिश लिया ता,
जीये खातिर अपने, जियावल जाता इनिके,
नशा खातिर अपने, पियावल जाता इनिके,
चाभि लेंई-चाभि लेंई, हवे पनसाहि !! इनहूँ का० !!
ढ़ेर खइनीं दम धरीं, अब सुसुताईं,
ओढ़ना का नीचे-नीचे, मति गुबुलाईं,
अब नाहीं छलकी हई, साँझे मधुशाला,
ऊँच-नीच एक भइल, टूटि गइल ताला,
पनके दीं पुलुइ ह, कोंढ़ी बा लागल,
सगरो बियाधिन के ढ़ोंढ़ी बा दागल,
फरे-फुलाये दीं, होखीं मत लाही !! इनहूँ का० !!

मुक्तक

116

काकी

आवे द पहिली ए काकी !
पहिली का पहिले मति टोकबि,
रस्ता में मति कहीं घघोटबि,
आजु-काल्हि में अइबे करी,
राउर देन दियइबे करी,
समय बनवले बाटे राउर, सबसे पहिले देइबि राउर,
ना त सूदि दिने-दिन पाकी !! आवे द0 !!
भगत जी धावत बानीं, ठकुर जी घुरियावत बानीं,
टोकत बाड़े मँहगू काका, खोजत बाड़े नाका-नाका,
गोनसारी में साहु खोबसेलें, लोहसाई में रूप हबसेलें,
कह हमहूँ भूजा फाँकी !! आवे द0 !!
चीलर, बीलर, टीमल भेली, फेंकू, खेदू, गरमू तेली,
चिखरी, झगरू, भवन-भिखारी, बुधई मँगरू सरल सोमारी,
लूटत, बीतन सुकई, पतरू, पूछन रहले परसों सँवरू,
दे द जल्दी का हम टाँकी !! आवे द0 !!
बाकी से संसार चलेला, बाकी से व्यवहार चलेला,
बाकी से बेवपार चलेला, बाकी बारम्बार चलेला,
कुछु बाकी ए पार चलेला, कुछु बाकी ओ पार चलेला,
रउओ आवत होई बाकी !! आवे द0 !!
मति गभुआई, मति खिसियाई, सोझे मन से घरे जाई,
झइहाईले तब कुछु दीले, डेढ़ अउर सवाई ली ले,
पसंगा झारीं, डड़ी मारीं, आँखि देखा के पस्सर काढ़ीं,
भेली के काटींले चाकि !! आवे द0 !!
जेठका परसों से खिसियाता, मझिला काल्हे से रिरियाता,
सझिला साँझे से घिघियाता, बझिला भोरे से रिसियाता,
पछिला कहिये से टिटियाता, नन्हका अपने से चिंचियाता,
उर्दी सबका चाहीं खाकी !! आवे द0 !!
जेठको अब फरमवले बाड़ी, मझिलो गाल फुलवले बाड़ी,
सझिलो चुप्पी सधले बाड़ी, छोटको कुप्पी नधले बाड़ी,
केकर साध पुराई कहिया, निकलत बा आँखि से महिया,
नन्हको माँगे हार बुलाकी !! आवे द0 !!

मुक्तक

(117)

केंकरा के भाव

कमरू-मँगरू हटिया चलले, बन्हले सिर पर पगरा पगरी,

मँगरू – "केंकरा कइसे केंकरा कइसे, कइसे किलो कइसे नमरी"
सोचले दमरी लउकत नइखे, मछरा मछरी कवनो कगरी,
कवनो कगरी चिकड़ा-उकड़ा बन्हले-टँगले नइखे बकरी,
दमरी – " पाँच के किलो बिकाई इहो, कुछु कम में भाव चली नमरी"
मँगरू – " बाप रे बाप अनाप-सनाप, ए भाव बिकी केकरा-केकरी,
तब मास आकाश के माँथ छुइ, मछरी पर फूलि चली सँसरी,
सपना गइल, बउरा गइल, जे भाव बे भाव कह दमरी ?
दमरी – " हमहीं सनकल हमहीं सनकल, हम नाहीं करी झगरा-झगरी,
बिल घोंपत-घोंपत हाथ कटे, भिनुसार चलि चवरा-चवरी,
बहरा कठुआई कबो झूलसीं, घर में खिसियाइल कहे मेहरी,
हइ माँथ पे लादि के लेइत जा, जनमवल जे बुतरा-बुतरी,
अब तूँही कह मँगनी देइ दीं, भीख माँगे चलि गँवई-नगरी"
मँगरू – " मँगनी मति द मति हिंगु हग, जाइज कहिके तउल सगरी,
तउल-तउल हइल हउल, झार झूर डगरा-डगरी,
जोरिह चेतिह रूपये किलो, गनिहे पाछे गठरा गठरी"
दमरी – मँगनी चोंगनी घलुआ एतनें परमान हवे पसरा पसरी,
हबका हबकी घपसा घपसी, बेइमान धरे अँजुरा अँजुरी,
एतना कहते खिंसियाइ सभे, कइले अपने उखरा उखरी,
अँगुरी धइले गठरी छिनले, अँझुरा गइले मँगरू दमरी,
दमरी खिसियाई के उठि परे, छिनले सगरो गठरा गठरी,
तरजूइ गइल कतहीं छितरा, कतहूँ ढिमलाइ गइल नमरी,
मँगरू – " दमरी अधिका दमरी अधिका, नमरी कम बा रखले दमरी"
दमरी – " हमहीं अधिका हमहीं अधिका, हमहीं ठननीं झगरा झगरी,
कवने ससुरा कहि दी कम बा, हई किलो बराबर बा नमरी,
चूतिया खँचड़ा अपने सब बा, बन्हले सतरह गन्डा गठरी,
तबले ठग रा अइले कहले काहें होता रगरा रगरी,
सब छोरि बिटोरि चले केंकरा, गठरी बन्हले ठगरा सगरी,
तनि बाबू सूनि तनि बाबू सूनि, करि पाछि चले डगरा डगरी,
हइ देखी से सूखि गइल अजुए, करिआइ गइल गतरा गतरी,
डटले ठगरा भगबे ठगडा, चलु दाम मिली दुअरा दुअरी,
हई धान ले सोझे घरे चलि जो, खोजति होई लड़िका मेहरि"

मुक्तक

118

किनार ना मिली

धार से डेरइब त किनार ना मिली, दिल्ली दूर बा कुतुबमिनार ना मिली,
फेंटा बान्हि के धोती खुँटियाल, पाएँट के बोटाम सरियाल,
जिनगी एगो लड़ाई हवे, लड़ब कि नाहीं फरियाल,
जले दउरि के छउकि के ठ्वरि ना छुवब, तले मनफेराँव फल गोनार ना मिली,
ट्रेन छूटे के डर होई त कइसहूँ टिकिस कटावे के परी,
पँवड़े के चाव होई त धार में हाथ गोड़ चलावे के परी,
झरझरात झरना से मँहटिया जइब, त कोन्हियवाँ बरतर के इनार ना मिली,
झँखुली के ओट में लुकोतार, त हरसिंगार के छाँह का पइब,
तेज घाम सहाते नइखे त, अजोरिया के बाँह का पइब,
भोथरे गँड़ासी से रेतत बाड़ त, सनाक दे उतारे वाली कटार ना मिली,
डाह के कराह में धिकाव मति, कनखी से कलंगी चिहुँटि ल,
भरउवत के मोटर छिंटाइल बा, बिटोरि के लाटा नियर कूटि ल,
बइरि के बिया गुबुलावत बाड, त सेव ना मिली, अनार ना मिली,
बकेना के दूध खातिर, बँसवारी में केना के बोझा मति काट,
खइनिहार हउव त आम के अँठिली, पँडि जी का सोझा मति चाट,
गुलदाउदी, अमलतासे से धिनइब, त लहलहात कचनार ना मिली,
ओंघात बाड़ त सनाक दे, जम्हाई लेके पलक के पल्ला ओंठगा द,
बीच-बीच में ताकि के अइक मति, सपना के साधि जगा द,
सीजर, कैप्सटन, पनामा, नम्बर टेन से काम चलाव,
लेबुल पढ़ब त चारमिनार ना मिली,
खूँटी में सीसी टाँगि के, बोतल के भूइयाँ मति डगराव,
मसूरी बराबर फुँसरी निकोटि के भगन्दर मति बनाव,
अंजन रचाके तकबे ना करब त खुशी के हिलोर प्रेम के पवनार ना मिली।

"अंजन" साहित्य के प्रकाशन

1. कजरौटा (भोजपुरी काव्य)
2. फुहार (भोजपुरी काव्य)
3. ओहार (हिन्दी-भोजपुरी)
4. सँझवत (भोजपुरी)
5. पनका (भोजपुरी)
6. कनखी (भोजपुरी व्यंग)
7. सनेश (भोजपुरी)
8. नवचा-नेह (भोजपुरी)
9. अँजुरी (भोजपुरी)
10. अंजन के लोकप्रिय गीत
11. अनमोल मिलन (भोजपुरी खण्ड-काव्य)
12. आपन बोली आपन गीत
13. गुच्छे अंगूर के (हिन्दी)
14. मनसायन (भोजपुरी)
15. अंजन के लोकप्रिय गीत एवं मुक्तक (पोटली)

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
आपन माटी-आपन थाती

अंजन साहित्य प्रकाशन